CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल परिशीलन

भाग - 2

डॉ. पूर्णमासी राय

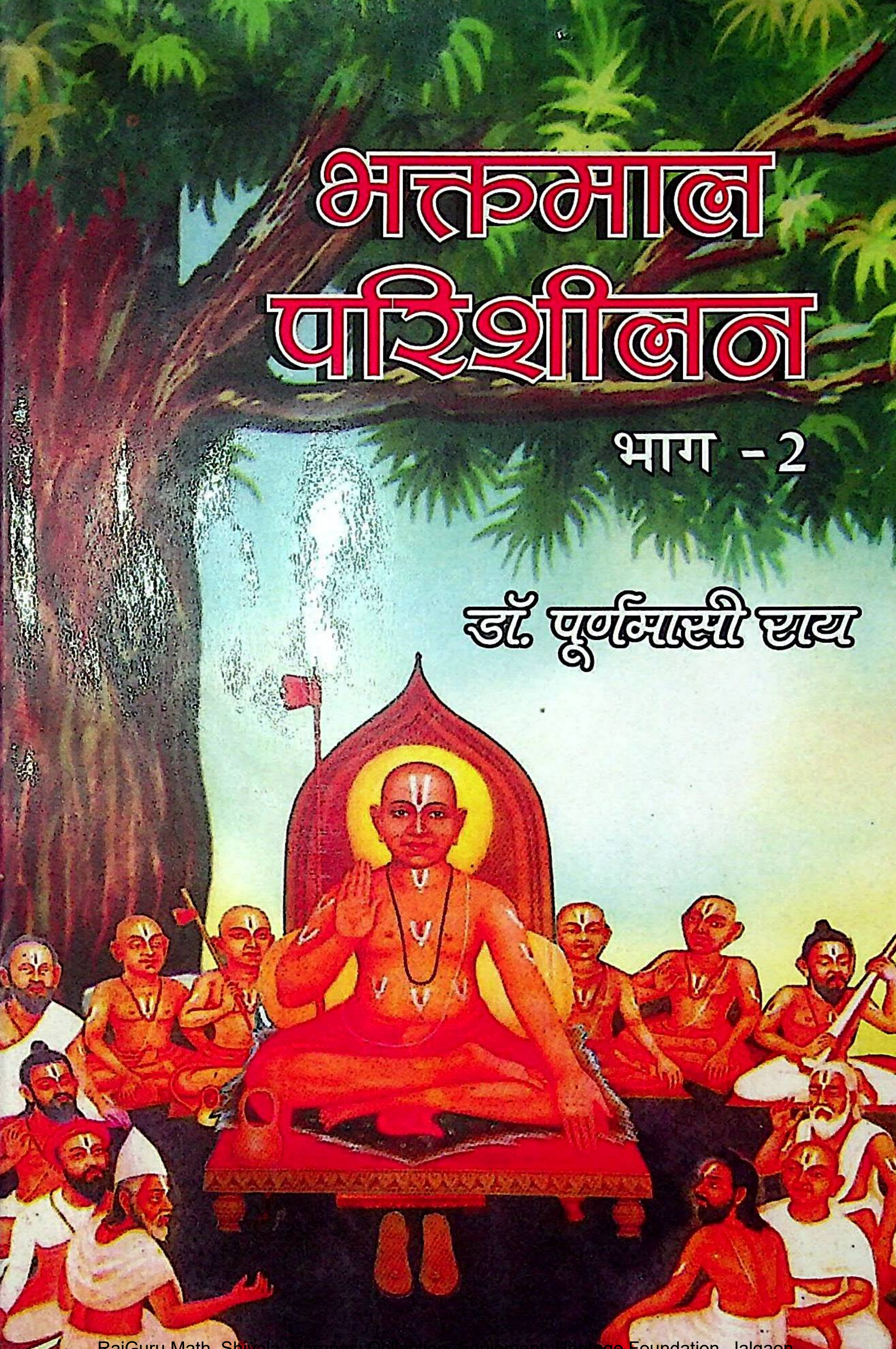

RajGuru Math, Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रन्थ के सन्दर्भ में

नाभादास कृत 'भक्तमाल' विद्वानों की दृष्टि में हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम आलोचना ग्रंथ है। यह अपने पीछे एक लम्बी पंरपरा बनाने वाला ग्रन्थ है। जिस तरह कालिदास के मेधदूतम् के आदर्श पर 'हंसदूत', पवनदूत शीर्षकधारी अनेक दूत काव्य रचे गए, उसी प्रकार इस 'भक्तमाल' की परंपरा में करीब दो सौ ग्रन्थों की रचना की जा चुकी है। इस ग्रन्थ के आदर्श पर 'हंसदूत', 'पवनदूत' शीर्षकधारी अनेक दूत काव्य रचे गए, उसी प्रकार इस 'भक्तमाल' की परंपरा में करीब दो सौ ग्रन्थों की रचना की जा चुकी है। इस ग्रन्थ के आदर्श पर बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं में भी भक्तमाल की रचना की जा चुकी है। इस ग्रन्थ का इतना बड़ा आदर हुआ कि महाराष्ट्री, बांग्ला आदि देशी भाषाओं के अतिरिक्त इसका अनुवाद संस्कृत में भी हो गया, टीकाओं का तो कहना ही क्या? कई एक टीकाएँ बन गईं।"

ISBN - 978-93-81539-73-6
9 7 8 9 3 8 1 5 3 9 7 3 6
ISBN - 978-93-81539-73-6

मूल्य : 850.00 रुपये (2 भाग)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9·3 V2

समीक्षार्थ

(प्रियवर डॉ० प्रो० कुमार रवीन्द्र (जी)

को सस्नेह—

पृथ्वीराज राय

21.12.2013

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल परिशीलन

(भाग 2)

लेखक

डॉ० पूर्णमासी राय,

पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष तथा कला संकायाध्यक्ष

हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय

बोधगया (बिहार)

सहयोगी लेखक

डॉ० विद्याशंकर राय (वाराणसी)

डॉ० रामराज राय (नयी दिल्ली)

डॉ० बालकृष्ण राय (नयी दिल्ली)

परामर्श दाता

डॉ० देवदत्त राय,

यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

डॉ० हरेन्द्र कुमार राय,

प्रधानाचार्य, सनातन धर्म इन्टर कॉलेज, वाराणसी

डॉ० राधेश्याम राय,

प्रधानाचार्य, मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर

श्री धर्मनाथ राय,

वाराणसी

डॉ० रामप्रताप राय, प्रधानाचार्य

हरिद्वार राय इन्टर कॉलेज, कमालपुर

एवं समस्त परिवार

2013

मनीष प्रकाशन

प्लाट नं0-26, रोहित नगर कालोनी,

बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक :

मनीष प्रकाशन

प्लाट नं0-26, रोहित नगर कालोनी,
बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682
E-mail : *kalaprakashanvns@yahoo.in*
manish.prakashan@yahoo.com

© लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2013
ISBN : 978-93-81539-73-6
मूल्य : 850.00/- रुपये (दो भागों में)

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :

कला कम्प्यूटर मीडिया

बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,
बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682

मुद्रक :

महावीर प्रेस

भेलूपुर, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

जगद्गुरु

रामानंदाचार्य स्वामी

श्री रामनरेशाचार्य जी

श्रीमठ, पंचगंगा घाट, वाराणसी

को

जिनकी प्रेरणा और अनुष्ठानों से

भक्तमाल में प्रवेश हुआ

श्री अनन्त चतुर्दशी **–डॉ० पूर्णमासी राय**

संवत् २०७० **१८.०९.२०१३**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूल के आधार ग्रन्थ

हस्तलिखित प्रतियाँ

भक्तमाल–'क' प्रति - संवत् 1885
मन्नूलाल पुस्तकालय, गया
(ख) प्रति-मन्नूलाल पुस्तकलाय, गया।
(संप्रति मगध विश्वविद्यालय
बोधगया के पुस्तकालय में) लेखन काल अज्ञात

मुद्रित ग्रन्थ

1. श्री भक्तमाल-भक्ति सुधा स्वाद
सं. श्री सीतारामशरण भगवान् प्रसाद 'रूपकला'
तेजबहादुर प्रेस, लखनऊ
सन् 1962 ई.
2. श्री भक्तमाल- सं. - श्री जानकी दास वैष्णव,
ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स,
कचौड़ी गली, वाराणसी-
सन् 1965 ई.
3. भक्तमाल - पाठानुशीलन एवं विवेचन–
डॉ. नरेन्द्र झा
अनुपभ प्रकाशन= पटना- 6
प्रथम संस्करण - 1978
4. भक्तमाल अङ्क वर्ष 87, जनवरी सन् 2013-
कल्याण, गीता प्रेस, गोरखपुर

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्म निवेदन

यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि हिन्दी की रामभक्ति शाखा के प्रधान कवि और 'भक्तमाल' की अभिनव परंपरा के प्रवर्तक नाभादासजी को पाश्चात्य विद्वानों (गार्सा द तासी), जार्ज ग्रियर्सन और श्री विल्सन आदि ने जिस रूप में सराहा और हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहासकारों में शिवसिंह सरोज, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ० विजयेन्द्र स्नातक ने इन्हें 'साहित्य और कला साधना पद्धति को गम्भीर रूप से प्रभावित करने वाला माना' उतना इनके भक्तमाल का सामान्य पाठकों और रसिकों के अध्ययन योग्य संस्करण प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया गया। भक्तों में रूपकला का संस्करण प्रकाशित है और इधर पाठानुशीलन की पद्धति से जो सामग्री आयी, वह उच्च स्तरीय विद्वानों तक पहुँच पायी।

'भक्तमाल' से सम्बद्ध सारी सामग्री को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड में मूल 'भक्तमाल और शब्दार्थ-टिप्पणी के साथ उसके संबद्ध विविध प्रश्नों के समाधान का प्रयास किया गया है। यह स्पष्ट किया गया है कि भक्तमाल के अध्ययन से ही निर्गुण और सगुण भक्त कवियों की रसात्मकता राजे-महाराजों की आस्तिकता, भक्त नारियों के सर्वस्व समर्पण की अद्‌भुत कथाएँ और आचायों की ऐकान्तिक साधना स्पष्ट हो सकती है।

भक्तमाल परिशीलन के द्वितीय खण्ड में भाव सौन्दर्य के अन्तर्गत भक्तों की भाव साधना (शान्त भावादि) और विभिन्न संप्रदायों के भक्त कवियों की आराध्य पद्धति का निरूपण है। संस्कृत के कवि एवं आचार्यों की जीवन-पद्धति के नूतन स्वरूप का स्पष्टीकरण है। काव्यकला की दृष्टि से भाषा-सौन्दर्य, अलंकार विधान, छंद-प्रयोग आदि का दिग्दर्शन प्रमाणपुरस्वर कराया गया है। उपसंहार के अन्तर्गत स्म्पूर्ण अध्ययन का निष्कर्ष दिया गया है।

"भक्तमाल एक प्रकार से हिन्दी का सर्वप्रथम आलोचना ग्रंथ है। विद्वानों की दृष्टि में यह प्राचीन समीक्षा ग्रन्थ है। साथ ही यह अपने पीछे एक लम्बी परंपरा बनाने वाला ग्रन्थ है। जिस तरह कालिदास के मेघदूतम् के आदर्श पर 'हंसदूत' पवनदूत शीर्षक धारी अनेक दूत काव्य रचे गए, उसी प्रकार इस भक्तमाल की परंपरा में करीब दो सो ग्रन्थों की रचना की जा चुकी है। इस ग्रन्थ के आदर्श पर बांग्ला, मराठी आदि भारतीय भाषाओं में भी भक्तमाल की रचना की चुकी है। इस ग्रन्थ का इतना बड़ा आदर हुआ कि महाराष्ट्री, बांग्ला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि देशी भाषाओं के अतिरिक्त इसका अनुवाद संस्कृत में भो हो गया, टीकाओं का तो कहना ही क्या? कई एक टीकाएँ बन गईं।''

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन के लिए भक्तमाल प्रामाणिक ग्रन्थ है। खासकर वैष्णव साहित्य की महत्वपूर्ण सामग्री इसी ग्रन्थ में उपलब्ध है। वैष्णव आन्दोलन के अध्ययन के लिए यह पुस्तक बड़ी सहायक है। रामानन्दीय भक्त सम्प्रदाय का प्रामाणिक इतिहास यह ग्रन्थ उपस्थित करता है। नाभाजी रामानन्द की शिष्य परंपरा में थे, इस कारण इन्होंने तथा उनके सम्प्रदाय की उत्पत्ति अथवा विकास के संबंध में जो सूचनाएँ दी हैं, वे बहुधा प्रामाणिक है।

भक्तमाल ने धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन में विद्वानों की बड़ी सहायता की है। प्रारंभ में हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थ लिखे गए, उनमें सामग्री संकलन के लिए भक्तमाल से बड़ी सहायता ली गयी है। श्री विल्सन साहब ने स्पष्ट स्वीकार किया है ''लोक श्रुतियों, इतिहास ग्रन्थों आदि सूचना के इन स्रोतों के अतिरिक्त मुझे एक बड़ी लोकप्रिय एवं प्रचलित पुस्तक का हमेशा सहारा लेना पड़ा जिसमें वैष्णव पंथ के सभी महत्त्वपूर्ण भक्तों का चमत्कारपूर्ण इतिहास है। पुस्तक का शीर्षक है 'भक्तमाल'।।''

'भक्तमाल' विषयक सभी सामग्री का संचयन और लेखन मगध विश्वविद्यालय, बोधगया में (1962-1969) के बीच आचार्य द्वय पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और डॉ० कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह के निर्देशन में हुआ। आप विद्वानों की प्रेरणा से ही मैंने मन्नूलाल पुस्तकालय, गया में बैठकर 'भक्तमाल' के दो हस्तलेखों की प्रतिलिपियाँ तैयार कीं। आप लोगों की इच्छा थी कि 'भक्तमाल' को स्नातकोत्तर वर्गों के पाठयक्रम में रखा जाय। पर उस समय यह कार्य पूरा न हो सका। भक्त आचार्यद्वय के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

काशी में विगत बारह वर्षों से पंच गंगा स्थित श्रीमठ और कबीरचौरा स्थित श्री विहारम् में आचार्य रामानन्द और उनके अनुयायियों की ज़यान्तियों और अनुष्ठानों में सम्मिलित होने का सुअवसर मिला। वहाँ परम श्रद्धेय जगद्‌गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के उच्चस्तरीय प्रवचनों से प्रभूत सामग्री मिली। आचार्य जी के आशीर्वचनों से समलंकृत यह कृति उन्हीं को समर्पित है।

यहाँ के विविध अनुष्ठानों और गोष्ठियों में डॉ० वंशीधर त्रिपाठी, डॉ० भानु शंकर मेहता, आचार्य प्रभुनाथ चतुर्वेदी, डॉ० शितिकंठ मिश्र, डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ० अशोक कुमार सिंह, पं० धर्मशील चतुर्वेदी, डॉ० उदय प्रताप सिंह, श्री नरेन्द्रनाथ मिश्र प्रभृति विद्वानों के विचारों से प्रेरणा मिली। आप लोगों के प्रति प्रणति निवेदित करता हूँ।

इस ग्रन्थ की प्राचीन सामग्री एकत्र करने में पं० उदयशंकर दूबे ने आदि से अंत तक सहायता की। इनमें भक्तमाल की प्राचीन तीन टीकाएँ द्रष्टव्य है। अतः दूबे जी के स्वस्थ दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कला संकाय के अधिष्ठाता डॉ0 महेन्द्रनाथ राय, सनातन धर्म इन्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ0 हरेन्द्र कुमार राय एवं डॉ0 स्कन्ध जी पाठक ने प्रकाशन की व्यवस्था की, एतदर्थ मैं इनके दीर्घायुष्य की सात्विक कामना करता हूँ। कला प्रकाशन के ख्यातिलब्ध प्रकाशक डॉ0 प्रेमशंकर द्विवेदी और उनके आत्मज डॉ0 मनीष कुमार द्विवेदी ने इसकी प्रकाशन-व्यवस्था की, अतः इनकी दिनानुदिन श्रीवृद्धि होती रहे, प्रभु से यही प्रार्थना है।

"इस कार्य में मुझसे जो भूलें हुई हैं, उनके सुधार की, जो त्रुटियाँ रह गयीं हैं, उनकी पूर्ति की, जो अपराध बन पड़े हैं उनकी क्षमा की पूरी आशा करके ही मैं अपने श्रम से कुछ संतोष लाभ कर सकता हूँ।"

स्वाध्याय सदन, एन 1/66, ए.एफ.पी. —पूर्णमासी राय
सामने घाट, लंका, वाराणसी-5
दिनांक- 16-09-2013

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपक्रम

भक्तमाल का मंगलाचरण

भक्त, भक्ति भगबंत गुरु, चतुर नाम बपु एक ।
इनके पद बंदन किये, नाशै बिघ्न अनेक ॥1॥

"भगवद्भक्त, भगवद् भक्ति, भगवान् और गुरु इनके नाम ही मात्र चार हैं, वास्तविक स्वरूप एक ही है, इसमें भेद कुछ भी नहीं। इनके पद की वन्दना करने से अनेक विघ्नें का नाश हो जाता है।

यह नाभादास कृत 'भक्तमाल' का मंगलाचरण है। प्रश्न है, यह मंगलाचरण क्या है, इसका स्वरूप क्या है। किसी ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए और उसे मंगलकारी बनाने के लिए ग्रंथारंभ में मंगलाचरण करते हैं "समाप्तिकामों मङ्गलमाचरेत्' पातञ्जल महाभाष्य में बतलाया गया है कि जिन शास्त्रों के आदि, मध्य और अन्त में मंगलाचरण किया जाता है, वे सुप्रसिद्ध होते हैं अर्थात् निर्विघ्न समाप्त भी होते हैं तथा उनके अध्ययन करने वाले आयुष्मान्, वीर एवं मंगल-कल्याण से मंडित भी होते है।[१]

मंगलाचरण के वस्तुनिर्देशात्मक, नमस्कारात्मक और आशीर्वादात्मक तीन भेद माने गए हैं। नाभादास जी ने 'भक्तमाल' में चार दोहों में जो मंगलाचरण किया है, वह वस्तुनिर्देशात्मक और नमस्कारात्मक दोनो है। संस्कृत के ग्रन्थों में प्रायः अनुष्टुप् छंद में मंगलाचरण किया गया है। नाभादास जी ने उसी से मिलते-जुलते दोहे में अपने ग्रन्थ का मंगला चरण किया है।

मंगलाचरण में प्रायः गणेश और सरस्वती की बन्दना की जाती है। नाभादस जी ने उस परंपरा को छोड़कर भक्त, भक्ति, भगवान् और गुरु की वन्दना की है और चारों को एक ही माना है। यह उनकी भक्ति विषयक अनन्यता का सूचक है।

विचारणीय यह है कि भक्त, भक्ति, भगवंत और गुरु चारों एक कैसे हैं ? क्या यह कथन-अर्थवादात्मक है या वास्तविक ? क्या नाभादास जी ने इस तत्त्व का साक्षात्कार कर और चारों की अभेदकता की वास्तविक अनुभूति कर यह उद्‌गार व्यक्त किया है?

भक्त किसे कहते हैं ?

जिसकी निष्ठा भगवान्, गुरु और भगवद्भक्तों में होती है। इन तीनों के प्रति जिसका निष्कपट वर्ताव हो, जो अपनी निष्ठा की टेक में अचल एवं दृढ़ रहे। प्रियादास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी के अनुसार 'भक्तिभाव जन की संज्ञा भक्त हैं। भक्ति क्या है? ईश्वर में परमानुराग भक्ति है–

'सा परानुरक्तिरीश्वरे' जिस अनूप संपत्ति के भाजन को भक्त कहते हैं, उस अविरल एवं अमल-पवित्र सर्वोत्तम फलों के रस को भक्ति कहते हैं भगवन्त क्या है? भगवान ऐश्वर्य का निखिलानन्द सन्दोह ही नहीं है, वह भक्तवत्सलता के कारण प्रेम मूर्ति भी है। भक्तों की कातर पुकार पर दौड़कर सहायता करने वाला प्रेममय प्रभु'रसो वैसः' है।

गुरु कौन है? जिसके उपदेश से सच्चिदानन्द घन विग्रह प्रभु के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाता है, वह गुरु है। हृदय के अन्धकार को दूर करने वाला गुरु है–

उधरहिं विमल विलोचन ही के।
मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥
सूझहि राम चरित मनि मानिक।
गुपुत प्रकट जहँ जो जेहि खानिक ॥

इस प्रकार प्रीति जिसको होती है, वह भक्त

प्रीति का नाम ही भक्ति है।
प्रीति जिसके प्रति होती है, वह है भगवन्त।
प्रीति जिसके द्वारा होती है, वह है गुरु ॥

नाभादास कृत भक्तमाल के भाष्यकार रूपकाल जी ने एक उदाहरण से इसे स्पष्ट किया है–

किसी को अपनी आँखें दर्पण में देखनी है, उस समय कर्त्ता अथवा देखने वाली आँखें हैं। देखना आँखों की ही क्रिया है।

जिसको (कर्म) आँखे देखती हैं, वह भी अपनी आँखें ही हैं एवं जो आप के देखने के कारण स्वरूप हैं, नाम जिनसे आप देखते हैं, वे भी आँखें ही हैं और फिर दर्पण बना भी है केवल आँखों ही के लिये, अर्थात् कर्ता, कर्म, करण सम्प्रदान ये सब कारक आँखें ही हैं। ये सब एक ही तत्त्व हैं। उनमें भेद वा भिन्नता कहाँ है? ऐसे ही भक्त, भक्ति, भगवन्त गुरु ये चारों अभेद हैं।

भगवान् की ही विचित्रता है। चारो नामों से भगवत् ही बन्दनीय है, वह ही एक नामी है।

चारों की एकता का तात्पर्य यह है कि श्री भगवत् ही जीवों के कल्याण के निमित्त अपनी कृपा से चार हुए हैं क्योंकि भक्तों के अन्तर्यामी तथा उत्प्रेरक आप ही हैं, उपाय रूपा भक्ति भी आप की साक्षात् कृपाशक्ति है।

हितोपदेशक इष्टमन्त्र गर्भित श्री गुरु तो भगवद्रूप प्रसिद्ध ही हैं। इस प्रकार से तत्त्वतः चारों एक हैं । भक्तमल-पृ. 39-40।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल का पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध

भक्तमाल को रूपकला जी ने पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भागों में बाँटा है। पूर्वार्द्ध में सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापर युग के भक्तों की कथा है। प्रियदास ने इस पर जो टीका लिखी, उसका भी अपना सौन्दर्य है। प्रारंभ में 8 कवित्तों इन्होंने पूरे भक्तमाल का रहस्य उद्घाटित कर दिया है। महाप्रभु कृष्ण चैतन्य के चरणों का ध्यान करते समय उन्हें नाभाजू ने भक्तमाल पर टीका लिखने की आज्ञा दी। इस पर इन्होंने टीका लिखी-टीका भी पद्य में–इसका भी अपना सौन्दर्य–(1) सुख देने वाली, पुनरुक्ति दोष से रहित, यथार्थ और मधुर वर्णोवाली, रसपेशल और अलंकारादि से युक्त और आनन्दवर्धक। काव्य में ये गुण होने चाहिए।

प्रियादास ने भक्ति के स्वरूप का सांगरूपक अलंकार के माध्यम से निर्देश किया है भक्ति एक महारानी है, उसका शृंगार इस प्रकार हो–भक्ति के मूल तत्त्व हैं–श्रद्धा, कथाश्रवण, निरमिमानता, मनन, दया, नम्रता, प्रण, (दृढ़ता), हरिनाम जप, साधुसेवा, मानस ध्यान, और सत्संगति ।

भक्ति के पाँचों रस-शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य और शृंगार का निरूपण की टीका में दिखाया गया है–(छंद 4) ये पाँचों रस ही फूल हैं, भक्ति की महारानी के लिए भक्तमाल में 'वर्णित हैं।

भक्तिरूपी तरुवर की रक्षा के लिए भक्त का हृदय थाला है विचारतत्व् बाड़ा है, सत्संग जल है। इससे निर्मित भक्ति तरु सुहृढ़ होता है। छंद/6) ।

प्रियादास ने भक्तमाल के वैशिष्ट्य को इस प्रकार व्यक्त किया है कि बड़े भक्त हों, अहोरात्र भगवद्गुणगान भी करें, हृदय सद्गुणों से पूर्ण हो। भगवान् के ध्यान में निष्ठा हो, ज्ञानी हों हरिऔर हरिभक्तों का सम्मान भी करते हो, भक्ति के वाह्य विधान में प्रवीण हो, पर भक्ति की आराधना कठिन है; भक्ति की विलक्षण सूक्ष्मगति समझ में नहीं आती, भक्तमाल के अध्ययन से भक्तिमहारानी की आराधना और प्राप्ति संभव है–

शोभित तिलकभाल, माल उर राजै,
ऐसे बिना भक्तमाल भक्तिरूप-अति दूर है। छंद 8

भक्तमाल में भक्तों के चरित्र में जो त्याग, साधुसेवा, और पराकोटिकी निरभिमानता है, वह भक्तगाल में वर्णित चरित्रों के वर्णन में मिलेगी, इसलिए भक्तमाल के अध्ययन की आवश्यकता है।

प्रियादास ने भक्ति की परिभाषा भी इस प्रकार दी है, भक्त वह है, जिसकी निष्ठा हरि गुरु और हरिदास (भागवत) में हो और अपनी निष्ठा में दृष्टता हो, निरंतर अश्रुपात हो और भक्त के सामने भगवान अपनी भगवत्ता भूल जाये, (गीध, शबरी और पाण्डवों के सामने) श्रीकृष्णदास पयोहारी इसके सच्चे उदाहरण हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रियादास ने छंद 10, 11,12, 13 में नाभादास का जीवन-वृत्त दिया है। अग्रदासजी ने नारायण नाम देकर इनको राममंत्र दिया और भक्तमाल लिखने की आज्ञा दी।

भक्तमाल में 24 अवतारों (भागवत 1/3) के वाद रामचन्द्र जी के चरणचिह्न (22), द्वादश! महाभक्त (ब्रह्म, नारद सनकादि) नारायण के 16 पार्षद, हरिवल्लभ (22) अम्बरीष (12छंद) सुदामा चन्द्रहास (16 छंद) द्रौपदी मोरध्वज (88-92) ।

निमि और नौ योगेश्वर छंद 12) नवधाभक्ति (छंद 14) प्रसादभक्त (छंद) चतुर्भुज का ध्यान करने वाले (29 भक्त) 18 महापुराण (मुख्यतः भागवत) स्मृतियों (छंद 18) रामसचिव (8) रामसहचरवर्ग (18) नव नन्द)छंद 21) गोपालवृन्द (छंद 22) ब्रजचन्द्र के 16 सखा, सप्त द्वीप के भक्त (छंद 24), जम्बूद्वीप के भक्त (छंद 26) श्वेतद्वीप के भक्त (छंद 26) और अष्टकुलनाग।

प्रियादास ने इनमें अम्बरीष की कथा 12 छंदों में और चन्द्र हास (छंद 58-68) 11 छंदों में की है। भक्तमाल का उत्तरार्द्ध अति विस्तृत है। इसमें चारो वैष्णव संप्रदाय के आचार्यों, उनके शिष्यों, अनुयायियों की विस्तृत व्याख्या है । श्रीसम्पदाय (रामानन्द स्वामी और उके 12 शिष्यों का प्रथम उल्लेख है, विस्तृत चर्चा बाद में की गयी है। अनन्तानन्द श्री कृष्णदास पयहारी (छंद 38) इनके 24 (छंद 37) शिष्यों, कील्हदेव (छंद 44) स्वामी अग्रदेव (छंद 41) के वर्णन के बाद आद्य शंकराचार्य का वर्णन है। काल-गणना की दृष्टि से यह दोषपूर्ण है, पर आचार्य निष्ठा यहाँ प्रधान है।

भक्तमाल में मूल 199 तक सहस्त्राधिक भक्तों की कथा है। इस वर्णन की विशेषता यह है कि कुछ छंद ऐसे हैं जिनमें एक भक्त की यश गाथा है, कुछ में भक्त समूह का नामोल्लेख भर है! शेष 15 छन्द ऐसे हैं, जिनमें भक्तमाल का महत्त्व, माहात्म्य, विनय और अनुक्रमणिका है। छंद 200 और 201ऐसे छंद है जिनमें अगर (अग्र स्वामी) की छाप है, इन्हीं को लेकर भक्तमाल के रचयिता को लेकर विद्वानों में विवाद उठ खड़ा हुआ। रूपकला जी की टिप्पणी भी ध्यान देने योग्य है-

"बोध होता है कि श्री अग्रदास जी के इन छप्पयों को श्री नाभा स्वामी ने परम उत्तम, मंगलप्रद जान कर यहाँ स्थान दिया है अथवा मंगल के लिये अपने ही इन छन्दों में श्री अग्रजी का छाप दे दिया है। इति शुभ (पृ. 924) जो भी हो, यह छंद भक्तमाल के मर्म का उद्घाटन करता है। हरि का सुयश सुनने में जैसे हरिदासों की प्रीति होती है, वैसे ही अपने दासों का सुयश (भक्तमाल) सुनने में हरि की भी प्रीति है भगवान् और भक्त का परस्पर प्रेम चारों युगों में निबह चुका है, जैसे भक्त लोग भगवान् की कीर्ति का गान करते हैं, वैसे ही भगवान् भी अपने भक्तों की कीर्ति गाते हैं। दासों के गुण वर्णन करने से तथा सुनने से सीतापाति नित्य ही बस होते हैं-इससे वर्णन करना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि सुजस प्रीति हरिदास कैं, त्यों भावै हरिदास जस ।
नेह, परस पर अघट निवहि चारों जुग आयो ।
अनुचर को उत्कर्ष स्याम अपनें मुख गायो ।।
ओतप्रोत अनुराग प्रीति सबही जग जानैं ।
पुर प्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जुबखानैं।।
अगर अनुग गुन बरन ते सीतापति नित होय बस ।
हरिसुजस प्रीति हरिदास कैं, त्यों भावै हरिदास जस ।।

भगतमाल 201

भक्तमाल के रचयिता ने अन्त में यह स्वीकार किया है कि 'भूलोक में जितने भगवद्भक्त हैं, सबकी यशोगाथा किससे संभव है, क्या समुद्र जल पीने की श्रद्धा किसी चिड़िया में हो तो क्या यह हो सकता है?

भक्त जिते भूलोक में, कथे कौन पै जायँ ।
समुँद पान श्रद्धा करै; कहँ चिरि पेट समायँ ।।

भक्तमाल 204

और भी

जौं हरि प्राप्ति की आस है, तो हरिजन-गुन गाय ।
नतरु सुकृत भुंजेबीज ज्यों जनम जनम पछिताय ।।

भक्तमाल 210

भक्तमाल के अंतिम छंद (दोहा) में नाभादास ने अपने गुरु अग्रस्वामी अगर का नाम लिथा और नाम नारायण दास दिया-

काहू के बल जोग, जय, कुल करनी की आस ।
भक्तनाममाला अगर उर बसो नारायणदास ।।

-भक्तमाल-दोहा 214

इससे दो बातें स्पष्ट होती है कि नाभादास का नाम नारायण दास था। इनके गुरु अग्रस्वामी थे। ध्रुवदास जी ने भी भक्त नाभावली में लिखा-

भक्त नराथन भक्त सब धरे हिए दृढ़ प्रीति ।
बरने आछी भाँति सा` जैसी जाकी रीति ।।

भक्तनामावली-दोहा 108

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भक्तमाल की विलक्षणता'

भक्ति की स्वरूप-मीमांसा के लिए कितने ग्रंथ लिखे गए, इसकी गणना करना असंभव है। 'नारद भक्तिसूत्र' और शांडित्यभक्ति जैसे सैद्धान्तिक ग्रन्थ और रामायण और भागवत जैसे व्यावहारिक ग्रन्थ इसके प्रमाण हैं। रूपगोस्वामी और जीवगोस्वामी ने हरि भक्ति रस मृतसिन्धु, उज्ज्वल नीलमणि और षट् संदर्भ जैसे मानक ग्रंथों से भक्तिरस की शास्त्रीय व्याख्या की। पर भक्तमाल की पद्धति दूसरी है, इसमें भक्तों के जीवन की विषम स्थितियों में उनकी दिनचर्या कैसें चलती रही, इसे दिखाया गया है। यहाँ भक्तमाल के (छंद 49-58) भक्त-चरित्रों की अलौकिक गाथा के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

1. दक्षिण देश के दास्यर सावेशी राजा कुलशेखर नें रामायण की सीताहरण की कथा सुनकर प्रेमावेश में खड्ग लेकर 'मारो मारो क्षुद्र रावण को कहते हुए घोड़े को सागर में डाल दिया। प्रेमगाहक प्रभु ने इन्हें लौटाया । (छंद 49)
2. पुरुषोत्तम पुरी के राजा ने दाहिने हाथ से प्रसाद की अवज्ञा जानकर उसको कटवा डाला । उसी कटे हुए हाथ से दौना 'उत्पन्न हुआ जिसकी सुगंध पुरुषोत्तम प्रभु को बहुत अच्छी लगती है।

दो कन्याओं ने सिलपिल्ले' सिलपिलपिल्ले' कहकर पुकारा, भगवान चले आए।

सन्तों की सेवा के लिए रानियों ने अपने-अपने पुत्रों को विष दे दिया । प्रभु ने उन पुत्रों को बचा लिया । (50) ।

भक्तमाल छंद-51

मामा-भानजे दो भक्त ऐसे हुए, जिन्होंने श्री रंगनाथ का मंदिर बनवाने के लिए जैन धर्मियों के शिष्य बनकर पारस द्रव्य से मंदिर बनवाए इसी प्रकार हंसभक्त और वैश्य भक्त की भक्ति निराली थी, हंसों को पकड़ने के लिए वधिकता का बाना धारण किया, सदाव्रती वैश्य भक्त की भक्ति निराली थी, हंसों को पकड़ने के लिए वधिक का बाना धारण किया।

सदाव्रती वैश्य भक्त ने अपनी कन्या का विवाह अपने पुत्र को मारने वाले के साथ कर दिया।

भक्तमाल छंद 52

चतुर्भुज भगवान चारों युगों में भक्तों की वाणी सच्ची करते आए हैं–(क) भुवनसिद्ध चौहान का खड्ग काष्ठ का ही था, भक्त के मुख से 'सार' (लोहा) निकलते ही उसे लोहे का बना दिया।

(ख) देवपण्डा के लिए भगवान चतुर्भुज ने अपने विग्रह में श्वेत केश धारण कर उनकी प्रतिज्ञा रखली ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) कामध्वज ने कहा 'मैं जिनका दास हूँ, वही मेरे शरीर का दाह करेगा । हनुमान ने काठ से इनका मृतक शरीर जलाया ।

(घ) राजा जयमल के लिए प्रभु स्वयं घोड़े पर चढ़कर दौड़े और लड़कर विजय प्राप्त की।

(ङ) ग्वालभक्त ने झूठ ही कह दिया कि मैंने भैंसें ब्राह्मणों को दी हैं, वह घृत सहित दे जावेगा। प्रभु ने चौगुनी भैंसें धर में पहुँचा दी।

(ग) भक्त श्रीधर ने कहा कि 'मेरे साथ रक्षक हैं उनकी रक्षा श्रीराम-लक्षण ने चारों भुजाओं में धनुष बाण लेकर की।

भक्तमाल छंद-53

भगवान् अपने भक्तों के साथ सर्वदा ऐसे फिरा करते है, जैसे बछड़े के साथ गाय।

(1) एक निष्किञ्जन नाम के साधु सेवा परायण भक्त के घर साधु लोग आए । स्वयं भगवान लक्ष्मी जी के साथ सरावगी साहूकार के रूप में आएँ और भक्त के हाथों अपने को लुटवा डाला ।

(2) श्याम प्रभु साक्षी देने के लिए स्वयं खुर्दहा ग्राम गए अपने पास बुलवाया नहीं।

(3) श्री रायरन छोर जीद्वारका से भक्त रामदास (डाकोर) के घर आए और पण्डों को हथियार के घाव को भक्त के शरीर में लगने नहीं दिया। बलिबन्धन प्रभु ने उस हथियार का घाव अपने ही अंग पर ले लिया।

भक्तनि सँग भगवान नित, ज्यो गऊ वच्छ गोहन फिरै ॥
निर्हिंकिंचिन इसदास तासु के हरिजन आये ।
विदित बटोही रूप भये हरि आपु लुटाये ॥
खाषि देने कौ स्याम खुरदहा प्रभुहि पधारे ।
रामदास के सदन राय रनछोर सिधारे ॥
आयुध-छत तन अनुग के बलिबंधन अपु बपु धरैं ।
भक्तनिसंग, भगवान नित, ज्यों गऊ बच्छ गोहन फिरैं ॥

–भक्तमल छंद-53

भक्तमाल छंद-54

श्रीमद्भागवत में ब्रह्मा जी के द्वारा बछड़ों को हर लेने की कथा (10/13) आई है। कलियुग में भी आश्चर्य जनक चरित्र हुए हैं।

1. जसू स्वामी के बैलवासी चुरा ले गए। प्रभु ने वैसे ही बैल स्वामी जी को दे दिये, जिससे वर्ष भर आपने खेत जुतवाए। चोरों ने उनके वैल लौटा दिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2. नामदेव की तरह नन्ददास जी ने मरी बछिया को जिला दिया।
3. अल्ह जी के लिए आँव के वृक्ष नीचे को झुक आए ।
4. वारमुखी का मुकुट धारण करने के लिए श्री रंगनाथ ने अपना सीस नबा दिया।

भक्तमाल-छंद 55

एक भक्त दम्पति के साथ ठग लग गए। निर्जन वन में पहुँचने पर ठगों ने पुरुष को मार डाला। भक्त स्त्री अनाथ हो गयी। रघुवीर ने उन दुष्टों को मार डाला ।

भक्तमाल छंद-56

एक भगवद् भक्त राजा जिसको ऊर्ध्वपुण्ड्र और तुलसी की कण्ठीमाला देखते थे उनको पूज्य समझते थे। एक बार कुछ भाँड साधु का वेश बनाकर राजा के यहाँ गए। राजा ने उनके चरण धोने का प्रयत्न किया। उनको देखकर भाटों में भी भक्ति उत्पन्न हो गयी।

भक्तमाल छंद 57

एक अन्तर्निष्ठ राजा परम भागवत था। वह अपनी भक्ति प्रगट नहीं होनें देता था। उसकी धर्मापत्नी भी उसकी भक्ति का अर्थ नहीं जानती थी।

अतएव वह उदास भी रहा करती थी। एक बार निद्रा में उसने भगवन्नाका उच्चारण किया। रानी इसे देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने बहुत सा धन न्यौछावर किया। राजा ने चिन्तित होकर कहा 'खेद की बात है कि आज मेरी अंतरंग भक्ति जाती रही।

भक्तमाल छंद-58

एक शिष्य की गुरु के वचन में अत्यन्त निष्टा थी एक दिन शिष्य किसी काम से बाहर गए। गुरु ने आज्ञा की 'अच्छा जाओ, जब तुम लौट कर आओगे, तब तुमसे एक बात कहूँगा। जब कार्य करके शिष्य आया, तो देखता क्या है कि आचार्य के मृतक शरीर को लोग लिये जा रहे हैं। शिष्य ने कहा कि 'महाराज जी ने मुझे कुछ कहने की प्रतिज्ञा की है, उनका वचन अन्यथा नहीं हो सकता। शब के साथ सबको घर फेर लाए।

शिष्य की ऐसी निष्ठा से गुरु भगवान् जाग उठे। प्रतीति-विश्वास इसी का नाम है।

भक्तमाल की एक विलक्षण पद्धति यह भी है कि एक भावपूर्ण कथन में कई भक्तों का निर्देश है–

1. भवप्रवाह निस्तार हित अवलंबन ये जन भए (18 भक्त)
2. करुणाछाया, भक्तिफल, ए कलियुग पादपरचे (19 भक्त)
3. पर अर्थ-परायन भक्त ये कामधेनु कलिजुग्ग के (18 भक्त)
4. अभिलाष अधिक पूरन करन, ये चिन्तामनि चतुरदास भक्त ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

5. भक्त पाल दिग्गज भगत, ए थानाइत सूरधीर-छंद 166 ।
6. बदरीनाथ, उडी से, द्वारिका सेवक सब हरिभजन पर–छंद-101 (14 म.)
7. हरि सुजस प्रचुरकर, जगत मैं ये कविजन अतिसय उदार छंद 102 ।
8. जे बसे वसत मथुरामंडल ते दयादृष्टि मोपर करौ छंद -103 21 भक्त ।
9. कलिजुग जुबती जन भक्त राज महिमा सब जानैं जगत छंद 21 भक्त छंद 104 (39 भक्त) ।
10. हरि के सम्मत जे भगत, ते दासनि के दास छंद 105 (22 भक्त)
11. श्रीमुख पूजा संत की-आपुन में अधिकी कहीं- छंद 106 9 भक्त ।
12. भक्तनि कौ आदर अधिक राजवंश में इनकियौ । छंद 117 (12 भक्त)
13. चरण शरण चारण भगत, हरिगायक एता हुआ ।। (छंद 138)
14. गुन गन विरुद गोपाल के एते जन भये भूरिदा । छंद 146 (22 भक्त)
15. निरवर्त भये संसारतें, ये मेरे जजमान सर्ब छंद 147 (23 भक्त)
16. माधुकरी माँगि सेषै भगत, तिन पर हौं बलिहार, कियौ ।।13 भक्त छंद 149।
17. दासनि के दासत्त कौं चौकस चौकी एक मड़ी ।। छंद 169
18. भगवंत रचे भारी भगत, भक्तनि के सन्मान को छंद 178 (8 भक्त)

भक्तमाल की परंपरा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तमाल की रचना का ऐतिहासिक महत्त्व है। सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी और साहित्योद्धारक श्री राधाकृष्णदास (1865 ई.-1957 ई.) ने ध्रुवदास कृत भक्तनामावली की भूमिका में लिखा है–

"भक्तमाल ने ऐतिहासिकों की कितनी सहायता की है, यह इतिहास रसिक सज्जनमात्र जानते हैं। इसग्रन्थ का इतना आदर हुआ कि महाराष्ट्री, बंगला आदि देश मात्राओं के अतिरिक्त इसका अनुवाद संस्कृत में भी हो गया और टीकाओं का तो कहना ही क्या है, कई एक टीकाएँ बन गईं।"[1] भक्तमाल की एक परंपरा सी बन गईं।

श्रीरूपकला जी ने स्वसंपादित भक्तमाल में निम्नलिखित टीकाओं का उल्लेख किया है–

संवत्

1769 1. भक्तिरस बोधिनी कवित्त टीका-प्रिया दास की

1800 2. भक्ति उरवशी (अनुवाद) लालचन्द्र दास

1800 3. म. म. टिप्पणी (श्रीकाशी) वृन्दावनवासी वैष्णवदास
1923 लखनऊ 1952 बम्बई से छपी है।

1898 4 फारसी मुंशी गुमानी लाल साहिब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

,,		5 गुरुमुखी भक्तमाल	कीर्तिसिंह जी
	1911	6 भक्ति प्रदीप (24 निष्ठा)	उर्दू तुलसी राम साहिब
7.	1958	भक्तकल्पद्रुम (24 निष्ठा)	प्रताप सिंह जी
8.	1921	राभर सिकायली	राजा रफ्फुराज सिंह जी
8	1925	रसिक भक्तमाल	श्री युगल प्रियाजी
10.	1930	भक्तमाल छप्पय	श्री हरिश्चन्द्रजी भारतेन्दु, प्रेमी
11.	1934	रमूजे मिहरो वफ़ा	श्री तपस्वी रामजी सीतारामीय
12.	1955	हरिभक्तिप्रकाशिका-	पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र जी
13.	1928	भक्तनामावली-ध्रुवदास	श्रीराधाकृष्णदास, श्री काशी नागरी प्रचारिणी सभा
14.	1958	भक्तनामावली	श्री राधाकृष्णदास, काशीमा ना. प्र.स.
15.	भक्तमालका	अंग्रेजी खर्रा-श्री भानुप्रताप तिवारी	
16.	1966	Gleanings-	Sir George Grierson, S.C S, I, E,M, M,O, R,A, & C.

इस सूची के देखने से पता चलता है कि इनमें से बहुत टीका ग्रन्थ नहीं, वरन् भक्तमाल की परंपरा में लिखे जाने वाले स्वतंत्र ग्रन्थ है। या अनुवाद ग्रंथ हैं। ग्रंथ सं. 13 और 14 एक ही पुस्तक है। इसका प्रकाशन ना. प्र सभा से हुआ है। रामरसिकावली रसिकभक्तमाल, भक्तनामावली भक्तमाल छप्पय या उत्तरार्द्ध भक्तमाल आदि भक्तमाल की परंपरा में लिखे जाने वाले स्वतंत्र ग्रंथ हैं। इसी प्रकार गुमानी लाल कृत फारसी अनुवाद, रमूजे मिहरे बफ़ा तथा भक्तमाल का अंग्रेजी खर्रा आदि अनुवाद ग्रंथ है, टीकाएँ नहीं।

भक्तमाल की परंपरा के ग्रंथ

भक्तमाल की परंपरा में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई इन्हें दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–

प्रकाशित भक्तमाल

(1) भक्त नामावली (ध्रुवदास)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी हित हरिवंश जी के शिष्य ध्रुवदास जी ने 114 छंद (दोहा) में 123 भक्तों के नाम एवं चरित्र का अत्यन्त संक्षेप में वर्णन किया है। इनमें गो हित हरिवंश, स्वामी, हरिदास गो. बिट्ठलनाथ, चैतन्य महाप्रभु, रूपगोस्वामी; श्रीमद्व्यासजी नागरीदास रविदास, मीराबाई, सूरदास, रैदास, रामानंद, नारायणदास (नाभा जी) और ध्रुवदास आदि 123 भक्तों का वर्णन है। इसमें एक ही दोहें में चार-चार छह-छह भक्तों का वर्णन कर दिया गया है–

गोविन्दस्वामी गंगअरु विष्णु विचित्र बनाइ ।
पिय प्यारी को जस कह्यो राग-रंग सो गाइ ।।

–छंद 35

(2) भक्तमाला अर्थात् रामरसिकावली (रघुराजसिंह) रीवाँ नरेश श्री रघुराज सिंह जी देव रचित रामरसिकावली 989 पृष्ठों में पूर्ण भक्तमाल है। इसकी रचना संवत् 1921 में हुई। इसमें दोहा और चौपाई में विभिन्न युगों के भक्तों का विस्तृत वर्णन किया गया है। करीब 300 भक्तों का परिचय इस ग्रंथ में है जो तथ्यात्मक कम चमत्कारी अधिक है। 'रीवाँ) नरेश ने अपनी टीका में किसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अलंबन नहीं किया है। इस कारण अनेक किम्बंदतियों, दन्तकथाओं एवं अन्धविश्वासों का इस ग्रन्थ में समावेश हो गया है।[1] इसका प्रकाशन चतुर्थ बार श्री बेंकटेश्वर प्रेस से सन् 1971 में हुआ था।

(3) रसिक प्रकाश भक्तमाल –अर्थात् नाभाजी के भक्तमाल के अतिरिक्त भक्तों का जीवन चरित्र ।

इस भक्तमाल के रचयिता महन्थ जीवाराम युगलप्रिया हैं। रसिक संप्रदाय में जीवाराम जी 'द्वितीय नाभा कहे जाते हैं और इस भक्तमाल को वही स्थान प्राप्त है जो रामानन्द संप्रदाय में नाभा जी कृत भक्तमाल को है।

यह पुस्तक प्रथम बार 1887 ई. में खड्ग विलास प्रेस, वाँकीपुर, पटना से प्रकाशित हुई, जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण थी, द्वितीय बार 1893 में । जीवारामजी के शिष्य श्री जानकी रसिक शरण जी ने रसिक प्रबोधिनी नामक टीका लिखी । इसमें नामा स्वामी जी का जीवन-चरित इस प्रकार है–

नाभा नाभी छवि सरसी सुचि भाव कंज हैं ।
प्रफुलित लखैं सुजान रसिक जन भ्रमर मंजु हैं ।।
भये विलक्षन रसिक संत सेवा के मुखिया ।
रसिक राग गुरु कृपा लली पद पेखे सुखिया ।।
रली अली नाभा अली अैसी नंहिं भइकोउ अलि ।।
अष्टकाल सेवा रची ग्रन्थ प्रेम पथ की गली ।।16।।

पृ. 67

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टीका में नाभास्वामी के अष्टव्याम और ध्यान मंजरी का भी उल्लेख है। डॉ. भगवती प्रसाद सिंह ने 'रामभक्ति में रसिक संप्रदाय' नामक शोधग्रंथ में इसको मूल आधार स्वीकार किया है।

(4) भक्तमाल हरिभक्ति प्रकाशिका-मुरादाबाद के निवासी प्रसिद्ध श्री ज्वालाप्रसाद मिश्र ने यह ग्रंथ लिखा। इसमें 207 भक्तों की कथा है। इस ग्रन्थ की रचना गद्य में हुई है। यह 765 पृष्ठों में पूर्ण संवत् 1981 (सन् 1924) में प्रकाशित हुआ । इस ग्रन्थ में विशेष रूप से स्वामी रामानन्द की कथा, बल्लभाचार्य की कथा, हितहरिवंश की कथा, नन्ददास की कथा, तुलसीदास की कथा, सूरदास की कथा, परमानन्ददास की कथा और रैदास की कथा वर्णित हुई है।

एक उदाहरण-

"नन्ददास जी चन्द्रहास के पुत्र ब्राह्मण वर्ण रामपुर के वासी, भगवान के भक्त और प्रेमी थे। भजन और स्मरण के सिवाय कुछ प्रयोजन उनको न था। उनके बनाये हुए ग्रन्थ बहुत हैं...उनकी कवितायें कवीश्वरों के यह वचन है कि 'और कवि गढ़िया, नन्ददास जड़िया' अर्थात् जड़ाऊ ऐसे मनोहर वृत्तान्त लिखे कि निश्चय करके भगवान के प्रेम से उनका मन उमड़ता है।" पृ. 223-224)

भक्तमाल (प्रताप सिंह)

प्रताप सिंह जी कृत भक्तमाल की रचना 26 शीर्षकों में हुई है। इनमें से प्रथम और अन्तिम परिच्छेदों में क्रमशः मंगलाचरण एवं भगवान् की महिमा तथा अन्य वृतान्त प्रयोजनीय वर्णित हुआ है और शेष 24 परिच्छेदों में 24 निष्ठाओं के अन्तगत 258 भक्तों का चरित्र वर्णित हुआ है। इसमें रामानन्द, हित हरिवंश, नन्ददास, तुलसी दास, सूरदास, रसखान, कबीर, ज्ञानदेव, पीपा, रैदास, मीराबाई, अग्रदास तथा चतुर्भुज दास आदि हैं।

इस ग्रंथ की रचना गद्य में हुई है उदाहरणार्थ "कबीर जी काशी में भगवत भक्त ऐसे हुए कि जिनकी भक्ति और प्रताप जगत् में विख्यात है जिन्होंने भगवद्भक्ति से अतिरिक्त कर्म को अधर्म जाना अर्थात् योग, दान और व्रत इत्यादि विना भगवत्भजन व भाव के वृथा समझा और निश्चय करके शास्त्रों का भी यह ही अभिप्राय व सिद्धान्त है कि और साधन शून्य के सदृश हैं और कृष्ण नाम अंक के सदृश है।

इस ग्रंथ के सम्पादक आगरा निवासी पं कालीचरण हैं। इसका प्रकाशन लखनऊ के प्रसिद्ध नवलकिशोर प्रेस से हुआ है। सन् 1922 में इसका दशम संस्करण प्रकाशित हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तरार्द्ध भक्तमाल-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

आधुनिक हिन्दी के निर्माता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने 'उत्तरार्ध भक्तमाल' नामक ग्रंथ लिखा। इसमें 210 छंदों में भक्तों का चरित्र वर्णित है।

इस ग्रंथ की रचना के उपक्रम में लिखा है– इसमें 210 छंदों में भक्तों का चरित्र वर्णित है।

"नाभा जी महाराज ने भक्तमाल रस जाल।
आलबाल हरिप्रेम की बिरची होइ दयाल ॥38॥
ता पाछे अबलौभए जे हरिपद रत संत।
तिनके जस बरनन सोइ हरि कहं अतिकंत ॥39॥
कबहुँ कबहुँ प्रसंरा बस फिर सों प्रेमी नाम।
ऐहै या नव ग्रन्थ मैं पूरब कथित ललाम ॥40॥
भक्तमाल जो ग्रन्थ है नाभा रचित विचित्र।
ताहि को एहि जानियो उत्तर भाग पवित्र ॥41॥
भक्तमाल उत्तर अरध या ही सों सुभ नाम।
गुँथी प्रेम की डोर मैं संत रतन अभिराम ॥42॥
नव माला हरिगल दई नाभा जी रचि जौन।
दुगुन आजु करि कृष्ण को पहिरावत हौं तौन ॥43॥

–भारतेन्दु समग्र-पृष्ठ 68

इस पंक्तियों में भारतेन्दु जी ने नाभादास जी के प्रति जो भावना व्यक्त की है, उससे भक्तमाल की विशिष्टता व्यक्त होती है। इसका प्रारंभ भी भक्तमाल की पद्धति पर है–

'राधावल्लभ बल्लभी बल्लभ बल्लभताइ।
चार नाम वपु एक पद वंदत सीस नवाइ' ॥1॥

उत्तरार्द्ध भक्तमाल से एक उदाहरण

श्री तुलसिदास परताप ते नीच-ऊँच सब हरि भजे।
नन्ददास अग्रज द्विज कुल मति गुन-गन मंडित।
कवि हरिजस गायक प्रेमी परमारथ पंडित।
रामायन रचि राम भक्ति जग थिर करि राखी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थोरे में बहु कह्यौ जगत सब याको साखी।'
जग-लीन दीनहु जा कृपा-बल न राम चरित्रानहिं तजे।
श्री तुलसिदास-पर ताप तें नीच-ऊँच सब हरि भजे॥

छंद-72

भारतेन्दु बाबू बल्लभ कुल के अनुयायी थे, इसलिए उत्तरार्द्ध भक्तमाल में 'चौरासी वैष्णवों का भी वर्णन विस्तार से आया है। भक्तमाल के टीकाकारों का भी इस प्रकार उल्लेख है–

"ये भक्तमाल रस-जाल के टीकाकार उदारमति।
कृष्णदास बंगाल कृष्ण पद-पदुम रत।
प्रियादास सुखदास प्रियाजुग चरन कुमुद नत।
ललितलाल जी दास एक औरहु कोउ लाला।
लाल गुमानी तुलसिराम पुनि अग्गरवाला।
परतापसिंह सिंधुआपती भूपति जेहि हरिचरनरति।
ये भक्तमाल रस-जाल के टीकाकार उदार मति॥

छंद 184।।

और तो और भारतेन्दु जी ने अपनी उदार दृष्टि का परिचय होते हुए उन मुसलमान और स्त्री भक्तों का भी इस उत्तरार्द्ध भक्तमाल में उल्लेख किया है–

इन मुसल मान हरिजनन पै कोटिन हिन्दुन बारियै।
अलीखात पटान सुता सह ब्रज रखवारे।
सेख नबीं रसखान मीर अहमद हरि प्यारे।
निरमलदास कबीर ताजखाँ बेगम बारी।
तानसेन, कृष्णदास बिजापुर नृपति-दुलारी।
मिरजादी बीबी रास्ती, पद-रज नित सिर धारिये।
इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दुन वारियै॥

–छंद-181

अन्त में इस उत्तरार्द्ध भक्तमाल की रचना-तिथि संबत 1933 का भी उल्लेख है। अपनी दीनता को व्यक्त कर, रचयिता ने रचना की पूर्णाहुति की है।

"हम तो श्री वल्लभसार कृपा इतना जानो।
सत्य एक नंदनंद हैं झूठो सब संसार॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनइस सै तैंतीस बर संवत् भादो मास।
पूनो सुभ ससि दिन कियो भक्त चरित्र प्रकास ॥

निष्कर्ष रूप से यह कहना समीचीन होगा कि नाभादास जो ने भक्तभाल की जो रचना की, आगे के रचनाकारों ने उसमें बहुत कुछ जोड़ा । भक्तमाल के माध्यम से समरसता और सामञ्जस्य की भावना का विकास हुआ ।

नव भक्तमाल (श्री राधा चरण गोस्वामी)

श्री राधाचरण गोस्वामी का जन्म 25 फरवरी, 1859 ई. वृन्दावन में गोस्वामी गल्लू जी उपनाम गुणमंजरी दास के घर में हुआ, इनके पितीजी स्वयं सुकवि थे। राधाचरण जो भारतेन्दु को साहित्य जगत में गुरु तुल्य मानते थे। राधाचरण जी उदार वैष्णव थे।

गोस्वामी जी ब्रजभाषा के दिगज पंडित, प्रेमी और सुकवि थे। आप का निधन 65 वर्ष की वय में पौष बदी 13, संवत् 1982 बि. को वृन्दावन में हुआ।

गोस्वामी जी ने लगभग तीन दर्जन गद्य-पद्य के ग्रन्थ लिखे जिनमें नाटक, कविता, उपन्यास आदि सभी हैं।[4] के ब्रजभाषा के परम प्रेमी थे। ब्रजभाषा के संबंध में ये लिखते हैं–

ब्रजभाषा भाषाललित कलित कृष्ण की केलि।
या ब्रज मण्डल में उठी, ताकी घर-घर बेलि ॥

इनके अनुसार ब्रजभाषा स्वर्गद्वार की सीढी है और है भी यही बात। ब्रजभाषा में जो भक्ति का साहित्य है, अन्यत्र कहा है। खड़ी बोली का युग तो ब्रजभाषा के प्रतिकूल ही है।

भक्तमाल की परंपरा में श्री राधा चरण गोस्वामी का 'नव भक्तमाल' इसलिए महत्त्व का है कि इन्होंने अपनी दृष्टि से रसखान, आनन्दघन, चाचा हित वृन्दावन दास, गुण मंजरी दास नारायण स्वामी, बिहारी और हरिश्चन्द्र पर छप्पय लिखे हैं।

यहाँ रसखान, गुणंजरी दास और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से संबद्ध छप्पय दिए जा रहे हैं।

रसखानि (ब्रजमाधुरी सार. पृ. 206)

दिल्ली नगर निवास, बादसा-बंस-बिभाकर।
चित्र देखि मन हरो, भरो पन-प्रेम-सुधाकर ॥
श्री गोवर्द्धन आय जबै दरसन नहिं पाये।
टेढ़े-मेढ़े वचन रचन निर्भय है गाये ॥
तब आप आय सभुनायकरि, सुश्रूषा महमान की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि कौन मिताई कहि सकै, श्रीनाथ-साथ रसखान की।

गुणमंजरी दास–(गो. राधाचरण के पिता)

जुगल-प्रेम सर्वस्व, भजन-भवन गत अहनिस।
ब्रज बासिन को करन सरन भक्तन को सब दिस ॥
राधारमन लड़ाय रहत ताही रँग राते।
श्री भागौत-सुरूप, इष्टग्रन्थन रस माते ॥
पद-रचना पावन किये, देस-देस भव गंजरी।
श्री गल्लूजी गुणमंजरीदास अपर गुण मंजरी ॥

–गो. राधारमण

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–

बनिक - बंस - अवतंस, धैर्य - धीरज-वपुधारी।
चौसठ-कला प्रवीन, प्रेममारग-प्रतिपारी ॥
विद्या-विनय-विशिष्ट, शिष्ट समुदाय सभा-जित।
कविता कल कमनीय-कृष्णलीला जग प्लावित ॥
कई लच्छ बानी, भगतमाल-उत्तरारध- करन।
आदि अंत सोभितभये, हरिश्चन्द्र प्रातः स्मरन् ॥

श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्रीभक्तमाल भास्कर

रचयिता–मणि पर्वत, श्री अयोध्या जी निवासी मानस तत्वान्वेषी पं रामकुमार दास जी रामायणी।

भक्तमाल (नाभादास) में कुछ ऐसी दिव्यता की अनुभूति व्यक्त हुई कि उसकी एक परंपरा आज तक चल रही है, उसकी गणना करना असंभव है। वर्तमान युग में भी अयोध्या के परम विरक्त एवं विद्वान संत पं. श्री रामकुमारदास जी रामायणी ने सन् 1975 में श्री भक्तमाल-भास्कर' नामकी कृति प्रस्तुत की। 304 छन्दों में प्रस्तुत यह ग्रन्थ आधुनिक युग के संतों, विद्वानों और समाज सेवियों का भव्य दर्पण है। कुछ उदाहरण–

भगवान की रामानन्दाचार्य जी

जब लहि यवन अनीति धरा व्याकुल भइ भारी।
अति कृपालु रघुनाथ तबहिं मुनि रूप सँवारी ॥
जैन बौद्ध मत नाशि याविनी अनंय विवासे।
भगवद्धर्म प्रचारि सु वैष्णव तत्त्व प्रकाशे ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिष्य द्वादशा दिव्य सम ज्ञान किरण जग तम हरे ।
रामानन्दाचार्य कर धर्मध्वजा जग फरहरे ।।[7]

छंद-8

भक्ति को विभिन्न संप्रदायों में भक्तमाल

भक्तमाल की परंपरा में हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में इतने अधिक ग्रन्थ लिखे गये हैं कि यह स्वयं में शोध का विषय है।[9]

भक्तमाल का ऐसा आकर्षण रहा कि भारत के विभिन्न पंथों और संप्रदायों में भक्तमाल लिखे गए। दादू पंथ के कवि राघव दास ने भक्तमाल की रचना की।[10] इसमें दादूपंथी संतों के अतिरिक्त रामानुज, विष्णुस्वामी, कबीर, नानक आदि अन्य मतावलम्बियों का भी विवरण दिया है। दादू पंथ के एक अन्य संत चारण 'भक्तमाल शीर्षक से भक्तों को गाथा लिखी है।

निरंजनी संप्रदाय के प्यारे रामनामक भक्त ने भक्तमाल की रचना की। 1883 में रामसनेही संप्रदाय के संत के रामदास ने 176 पद्यों में भक्तमाल रची है।

वल्लभ संप्रदाय के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने उत्तरार्द्ध भक्तमाल की रचना की। डॉ. अगरचन्द नाहटा ने गोकुल नाथ विरचित 'चौरासी' और दो सौ वावन वैष्णवन की वार्ता' को भी भक्तमाल की तरह का ही ग्रंथ माना है।

राधावल्लभ संप्रदाय में ध्रुवदास की भक्तनामावली के अप्रतिरिक्त भगवद्मुदित ने रसिक अनन्यमाल, उत्तम दास ने अनन्यमाल और रसिक परिचयी, चाचा हितवृन्दावनदास ने रसिक अनन्यपरिचावली और गोविन्द असिने रसिक अनन्यगाथा की रचना की।

चैतन्य संप्रदाय

श्रीराधा चरण गोस्वामी ने नवभक्तमाल की रचना की इसमें वैसे भक्तों को रखा गया है जो नामा जी के भक्तमाल में स्थान न पा सके। मध्यकालीन एवं आधुनिक कालीन कुल 109 भक्तों का संक्षिप्त विवरण छप्पय छंद में इस ग्रन्थ में दिया गया है।[12]

'रसिक भक्तमाल' चैतन्य संप्रदाय के श्री यूमुना बल्लभ गोस्वामी की रचना है। इसमें 108 भक्तों की गाथा है।

हरिदासी संप्रदाय

भगवत रसिक देव स्वामी ने भक्तनामावली 'लिखी' इनके शिष्य विहारी बल्लभ जी ने संवत् 1815 के आसपास श्री भगवदभक्त नामावली लिखी ।

इस विवरण से इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि नाभादस जी के भक्तमाल को इतनी लोकप्रियता मिली थी कि शताधिक ग्रंथ लिखे गए। संस्कृत, मराठी, बंगला, पंजाबी और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंग्रेजी में लिखे गये भक्तमाल की परंपरा बड़ी विशाल, बड़ी महान और बड़ी व्यापक है। इसी परंपरा में 'कल्याण' पत्रिका के 'संताक', संतवाणी अंक और योगांक आते हैं। कल्याण जनवरी 2013 का विशेषांक 'भक्तमाल अङ्क' भी इस परंपरा का महत्त्वपूर्ण अवदान है।

भक्तमाल की टीकाएँ

भक्तमाल की सबसे पहली एवं प्राचीन टीका प्रियादास जी की है। इनके कथनानुसार नाभाजी ने ही उन्हें टीका निर्माण करने की आज्ञा दी। यह टीका इन्होंने कवित्त छंद में की। अपनी टीका के संबंध में इन्होंने लिखा है कि मैंने ऐसी कविता लिखी है, जो सुख देने वाली है और अत्यन्त सुहावनी लगती है तथा आनुप्रासिक और आलंकारिक शोभापाकर आनन्द की झड़ी सी लगा देती है। यह टीका संवत् 1769 में पूरी हुई इन्होने टीका में अपने को कृष्ण चैतन्य संप्रदाय के मनोहर जी नामक सन्त का शिष्य बताया है। इन्होंने भक्तमाल की टीका में भक्तों की अलौकिक और चमत्कारी घटनाओं का ही उल्लेख किया है। फलस्वरूप इसमें ऐतिहासिक सामग्री का अभाव है। फिर भी प्रियादास जी टीका न होती तो कई छंदों के अर्थ स्पष्ट न होते । इन्होंने भक्तमाल के मूल पदों में आये कथा संकेतों को विस्तार से स्पष्ट कर अर्थ संबंधी दुर्बोधता को हटाने में सहायता की है। भक्तमाल के प्रथम टीकाकार प्रियादासजी ही थे।

(2) लालदासजी कृत टीका

इसका रचना काल अनूप संस्कृत लाइब्रेरी की सूची में सं. 1868 छपा है। राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान में इसकी तीन प्रतियाँ संवत् 1856, 1870 और संवत् 1893 की लिखी हुई वर्तमान हैं।

(3) इसी प्रकार बालक रामकृत टीका, बचनिका (राधा वल्लभ संप्रदाय) फारसी टीका (भक्तकाल) मन्नू लाल लाइब्रेरी गया) में है।

(4) हुलासदास कृत टीका–

हुलास दास नामक व्यक्ति ने नाभा जी कृत भक्तमाल और प्रियादास कृत रसबोधिनी टीका को उपटीका लिखी। इसकी एक प्रति हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग में सुरक्षित है।[14]

(5) सीताराम शरण रूपकला (1840-1932) कृत टीका

नाभादास जी कृत भक्तमाल का भक्तिसुधास्वाद' जिसके सहित (टीका) रूपकलाजी ने लिखी। इसका चौथी बार प्रकाशन सन् 1962 ई में हुआ। रूपकला जी 19वीं शती के विख्यात रसिक महात्मा थे। इनका जन्म छपरा जिले के मुबारकपुर में हुआ। इनके पिता श्री तपस्वी राम श्री संप्रदाय के रामानन्दीय भक्त थे। इन्होंने कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना नाभादासजी की भक्तमाल की टीका 'भक्तिसुधास्वादं' मानी जाती है। इसके महत्व का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि भारतीय भाषाओं के मर्मज्ञ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जार्ज ग्रियर्सन ने इसे अपना प्रधानसंदर्भ ग्रंथ कहा है। संदेहपूर्ण स्थलों पर उन्होंने इसी ग्रंथ का सहारा लिया है।[15]

भक्तमाल का रचयिता कौन ?

भक्तमाल का जो संस्करण अधिक प्रचलित है, वह रूपकलाजी द्वारा संपादित भक्तमाल (भक्तिसुधा स्वाद तिलक सहित) है जिसका चौथी बार प्रकाशन लखनऊ से सन् 1962 में हुआ। इसके कई छंद (4, 200, 201 ऐसे हैं जिनमें अग्रदेव का नाम आया है। इससे प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि भक्तमाल में कई लोगों की रचनाएँ हैं। प्राचीन वाङ्मय के पारदर्शी विद्वान डॉ. किशोरी लाल गुप्त ने भक्तमाल का संयुक्त कृतित्व' नामक शोध निबंध में यह लिखा 'भक्तमाल किसी एक व्यक्ति की कृति न होकर तीन व्यक्तियों की संयुक्त कृति है।'' 'सामान्यतया यह स्वीकार किया जाता है कि भक्तमाल नाभादास की रचना है और नाभादास और नारायण दास एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं पर भक्तमाल के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर कम से कम तीन व्यक्तियों की संयुक्त कृति है। ये तीन व्यक्ति हैं अग्रदास और उनके शिष्य नारायणदास तथा नाभादास ।''[16]

"मेरा ऐसा ख्याल है कि नारायणदास के भक्तमाल का परिवर्धन नाभादास ने किया और आज वह जिस रूप में उपलब्ध डै, वह रूप देने का श्रेय नाभादास को प्राप्त है। इसलिए लोग ग्रन्थ के मूल लेखक को भूल गए और संपादक और परिवर्द्धक को मूल लेखक समझने लगे। पर ग्रन्थ के अंतिम छंद में नारायण दास लगा हुआ उसे क्या करें ? इसे सुलझाने के लिए लोगों ने नारायणदास और नाभादास को एक ही व्यक्ति के दो नाम मान लिए। मेरा यह भी ख्याल है कि नाभादास ने मूल भक्तमाल का परिवर्धन दो प्रकार से किया, एक तो अपने गुरु अग्रदास की रचनाओं को मिलाकर, दूसरे कुछ नयी रचनाओं को जोड़कर।"

इस विवाद के मूल में भक्तमाल के कई छंदों में अग्रदास की छाप है। 'भक्त नाभावली के लेखक ध्रुवदास ने नाभादास का नाम न देकर नारायण दास दिया है। नाभादास जी का ही नाम नारायण दास था–

"भक्त नरायन भक्त सब धरे हिए दृढ़ प्रीति ।
बरने आछी भाँति सो जैसी जाकी रीति ।।"

–दोहा-108

इसलिए सिद्ध हुआ नाभादास ही भक्तमाल के रचयिता थे और उनका ही उपनाम नारायणदास था। भक्तमाल में एक भक्त गोबिन्ददास भक्तमाती है। इनका विवरण निम्नांकित छंद में है–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भक्त रत्नमाला सुघन गोबिंद कंठ विकास किया ॥'
रुचिर शीलधन नील लील रुचि, सुमति सरित पति ॥
विविध भक्त अनुरक्त व्यक्त बहुचरित चतुर अति ॥
लघु दीरघु सुर सुहृद बचन अविरुद्ध उचारन ।
विस्ववास विस्वास दास परिचय विस्तारन ॥
जानि जगत हित, सब गुननि सु-सम नारायणदास दिय ।
'भक्तरत्नमाला' सुधन गोविंद कंठ विकास किय ॥

–भक्तमाल-छंद 192

इन गोविंद दास को संपूर्ण संसारी जीवों का हित करने वाला और शुभ गुणों में अपने समान जानकर नारायणदास ने इन्हें भक्तमाल पढ़ा दिया था। यह उसका शुद्ध पाठ करते थे। इस छप्पय से स्पष्ट है कि मूल भक्तमाल के रचयिता नारायणदास थे और मूल ग्रंथ में यह छप्पय नहीं थां। इसे बाद में नाभादास ने जोड़ा। यदि यह छप्पय नारायण का ही होता तो उन्होंने यह लिखा होता कि मैंने गोविंददास को भक्तमाला पढ़ाया। वे यह कदापि न लिखते कि नारायणदास ने पढ़ाया। इस छप्पय पर रूपकला जी की टिप्पणी द्रष्टव्य है–

"निश्चय होता है कि यह छप्पय भक्तमाल पूर्ण हुए पीछे स्वयं श्री कृपालु नाभा स्वामी जी ही ने लिख दिया है। (छप्पय बड़े मनन कर रखने योग्य है)।"

"और नारायणदास ने दिया"

ऐसा परोक्ष (अन्य पुरुष) नाम लिखा, सो अपना नाम परोक्ष में ही लिखने की कवियों की रीति है।" भक्तमाल टीका-पृ. 910.

विद्वानों के अनुसार भक्तमाल की रचना गोसाईं बिट्ठलनाथ की मृत्यु (संवत् 1642) के पूर्व किसी समय हुई क्योंकि भक्तमाल में विट्ठलनाथ का स्मरण भूतकाल में और तुलसीदास का वर्तमान काल में हुआ है। भक्तमाल के टीकाकार रूपकला जी इसका रचनाकाल संवत् 1649 मानते हैं।

उपुर्यक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि नाभादास जी का यह भक्तमाल एक व्यक्ति की रचना न होकर कई व्यक्तियों की रचना है। इसकी लोकप्रियता इतनी थी कि इसमें कुछ और लोग जुटते गए। (देखिये भगवत मुदित कृत छप्पय 198) इसलिए डॉ. किशोरी लाल गुप्त ने जो भक्तमाल के संयुक्त कृतित्व का प्रश्न उठाया है, उसका समाधान अभी बाकी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. 'भक्तनामावली की भूमिका श्री राधाकृष्णदास।
2. भक्तिसुधास्नाद तिलक रूपकलाजी-पृ. 35।
3. रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव-पृ 25 डा. बदरी नाराचण श्रीवास्तव।
4. भारतेन्दु और उनके सहयोगी कवि-पृ. 418-419। डॉ. किशोरीलाल गुप्त।
5. नाभा जी कृतभक्तमाल-संपादक श्री जानकीदास श्री वैष्णव कृत के परिशिष्ट में।।
6. प्रयाग विश्वविद्यालय से डॉ. ललिता प्रसाद दूबे को 'हिन्दी भक्तिवर्ता साहित्य पर पी.एच.डी. सन् 62 में मिली।
7. राधोदास कृत भक्त-माल-सं. अगरचन्द नाहटा।
8. प्रकाशक ब्रजभूषण संत्रालय, मथुरा-संवत् 1943।
9. भक्तमाल : पाठानुशीलन एवं विवेचन - पृ. 106.
10. Sita Ram Saran Bhagwan Prasadis edition of Bhabhatamal- It is a most important and valuable work, I have been reading it.
The excellent work has been so far it goes my chief authority in doubliful. Points Dr. Grierson.
11. भक्तमाल का संयुक्त कृतित्व-डॉ. किशोरीलाल गुप्त नागरी प्रचारिणी पत्रिका-वर्ष 63, संवत् 2015 (सन् 1953) अंक 305।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषयसूची

समर्पण iii
मूल के आधार ग्रन्थ iv
आत्म निवेदन ... ... v-vii
उपक्रम ... ... viii-xxviii

समर्पण जगद् गुरु रामन्दाचार्य स्वामी श्री रामनरेशा चार्य जी, श्रीमठः पंचगंगाघाट, वाराणसी ।

उपक्रम-भक्तमाल-अनुशीलन की पूर्व पीठिका, 'भक्ति भक्त भगवंत गुरु चतुर नाम बपु' एक का मर्म-विभाजन-पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध-विलक्षणता, भक्त माल के प्रतिपाद्य के संकेत-परंपरा-परंपरा के ग्रन्थ-टीकाएँ-
भक्तमाल का रचयिता कौन ?

प्रथम अध्याय

भक्तमाल का भाव सौन्दर्य 33-102

■ मंगलाचरण-चौबीस अवतारों श्री बन्दना, भगवान् राम के चरण-चिह्नों की वन्दना, देवताओं की वन्दना, सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग के चरित्रों की वन्दना, राम के मंत्री, सखा, कृष्ण के सखाओं और गोपिकाओं की वन्दना-सप्तद्वीप के भक्तों की प्रशंसा-अष्टकुल नागों की वंदना-युगत्रय के भक्तों की संस्तुति ।

कलियुग के भक्त

■ चतुः संप्रदायाचार्य-रामानुज, विष्णुस्वामी, निम्बाकाचार्य मध्वाचार्य रामानुजपद्धति के आचार्य-रामनन्दाचार्य और उनके शिष्य । रामानुजाचार्य और उनका सिद्धांत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुगामी भक्त तत्त्वाजी और जीवाजी - श्री जगनाथ पारीष लक्ष्मण भट्ट जी। रामानुचार्य और रामनन्दाचार्य के सिद्धान्तों में पार्थक्य-आचार्य रामानन्द-व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, जीवन-वृत्त-काशीका श्रीमठ-साधना-केन्द्र । दार्शनिक सिद्धान्त-प्रपत्ति-विधि विधान-रामानन्द संप्रदाय की देन-अनंतानंदजी, पयहारी कृष्णदासजी-कीलहदेव जी-स्वामी अग्रदेव जी-'आद्य शंकराचार्य जी, नाभादास-जीवन-वृत्त एवं रचनाएँ ।

आचार्य रामानन्द के प्रमुख शिष्यों की भक्ति-साधना

1. रैदास जी–जन्म की कथा सन्त प्रेम-चित्तौड़ की रानीका शिष्य बनना-हिन्दी साहित्य के इतिहास में संत रविदास ।
2. कबीरदासजी जीवन के अलौकिक कृत्य-हिन्दी साहित्य और कबीर । कबीर की भक्ति साधना ।
3. पीपाजी-जीवन चर्या-अलौकिक कथाएँ-पीपा-परिचयी।
4. धनाजी : परमत्यागी भक्त
5. सेनजी - भगवान् का इनके लिए नाई बनना
6. सुखानन्द-संगीतज्ञ भक्त

7-8. सुरसुरानन्द और सुरसुरी जी

9. नरहरियानन्दजी गो. तुलसीदास के गुरु-गोस्वामी तुलसीदास जी

- भक्तमाल के सुभेरू प्रियादासजी ने 11 छंदों में अनेक घटनाओं का वर्णन किया–गो० जी के रामचरन रस मत्त की विस्तृत व्याख्या-जीवन वृत्त एवं रचनाएँ-प्रशस्ति परक एक दुर्लभ छंद ।
- मध्वाचार्य जी (द्वैतवाद) ब्रह्म संप्रदाय जीवन-वृत्त एवं दार्शनिक सिद्धान्त, श्री कमलाकर भट्ट (भागवत विशेषज्ञ) विष्णुस्वामी संप्रदाय-शिष्य परंपरा में बल्लभाचार्य जी-ज्ञानदेव-नामदेव और त्रिलोचन निम्बार्काचार्य (सनकादि संप्रदाय) जीवन वृत्त एवं रचनाएँ–भेदाभेद दार्शनिक सिद्धांत अनुगामी–श्रीभट्टजी-युगलशतक । हरिव्यास की महावाणी परशुराम देव जी-परशुराम सागर । वल्लभाचार्य जी एक उनके वंशजभक्त विट्ठलनाथ जी-इनके पुत्र-गिरिधरजी-श्री गोंसाईं गोकुलनाथ जी । बल्लभाचार्य जी के मतानुयायी भक्त कवि–कुंभनदास, सूरदास जी-कृष्णदास और परमानन्द दास जी, विट्ठनाथ जी के शिष्य-गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास। प्रेमनिधि जी। भक्तमाल और राधावल्लभ संप्रदाय-हित हरिवंश गुसाईं, व्यास जी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्भुजदास-नरवाहन- स्वामी हरिदास जी और उनके अनुयायी भक्त-स्वामी हरिदास जी और विट्ठल विपुलजी, चैतन्य संप्रदाय और उनके अनुयायी श्री चैतन्य महाप्रभु और उनके अनुयायियों द्वारा क्रान्तिकारी भक्ति आन्दोलन-नित्यानन्द और श्रीकृष्ण चैतन्य-श्री रूपगोस्वामी और श्री सनातन गोस्वामी-श्री जीव गोस्वामी-सूरदास मदनमोहन, गदाधर भट्टजी-प्रियादास-भगवन्तमुदित निष्कर्ष। (37-156)

द्वितीय अध्याय

भक्तमाल की अन्य विशिष्ट विभूतियाँ- **103-126**

(अ) संस्कृत के कवि एवं आचार्य-
जयदेव (1100 ई. श्रीधरस्वामी ( )
विल्वमंगल ( ) कमालाकर भट्ट ( )
श्री नारायण मिश्र ( ) प्रबोधानन्द सरस्वती

(आ) भक्तमाल के राजर्षि भक्त-चतुर्भुज नृपति
पृथ्वीराज, राजा जयमल, राठौर श्री खेमाल रत्नजी, राजा श्री रामरयन जी, श्री किशोर सिंह जी ।

(इ) भक्तमाल की भक्त नारियाँ-भीराबाई, श्री रामरयन की धर्मपत्नी, कात्यायनी जी, श्रीमती रत्नावती, करमैतीजी देवी गोपाली जी और लालमती जी ।

(4) गुजरात की दो दिव्य विभूतियाँ–नरसी मेहता और मीराबाई।

(5) भक्तमाल जगन्नाथ जी के भक्त
रघुनाथ गोसाईं, लाखा जी, अंगदजी और कल्याण दास (145-193)

तृतीय अध्याय

काव्यकला की दृष्टि से भक्तमाल- **127-136**

हरिगुन गान की महत्ता-भक्तिशास्त्र में वर्णित पंचभाव-शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर भाव के भक्त-दशधा भक्ति-नवधाभक्ति भक्तमाल में किस काव्य रस की प्रधानता ? काव्य गुण और भक्तमाल-माधुर्य और प्रसाद गुण की प्रधानता-ओजगुण का अभाव। भक्तमाल का छंद-विधान-अलंकार-निरूपण भाषा विधान । निष्कर्ष । (194-230) ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपसंहार 137-138

(1) चौबीस निष्ठाओं में विभक्त 269 भक्तों की नामावली (मुंशी तुलसी राम के विचारानुसार)

(2) भक्तमाल का संयुक्त कृतित्व- डॉ. किशोरी लाल गुप्त।

(3) नाभादासकृतभक्तमाल उसकी टीकाएँ ।

(4) विदेश में भक्तमाल डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त।

परिशिष्ट 139-164

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची 165-168

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथम अध्याय

भक्तमाल का भाव सौन्दर्य

'भक्तमाल' के भाव-सौन्दर्य पर प्रकाश डालते हुए आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने कहा है कि 'इन्होंने भक्तमाल में 200 भक्तों का चमत्कार बोधक चरित्र छप्पय छंद में लिखा है। उपास्य के नाम, रूप, लीला और धाम सबका इन्होंने वर्णन किया है।[1] 'भक्तमाल' का प्रारंभ मंगलाचरण से होता है–

भक्त, भक्ति, भगवंत, गुरु चतुरनाम बपु एक ।
इनके पद वंदन किये नासै विघ्न अनेक ।।
मंगल आदिं विचारि रह वस्तु न और अनूप ।
हरिजन को यश गावते, हरिजन मंगल रूप ।।[2]

मंगलाचरण के बाद नाभादास जी ने इस तथ्य का संकेत किया है कि गुरु (श्री अग्रदेव) की आज्ञा पाकर मैंने भक्तों के गुणगान करने का निश्चय किया) आरंभ चौबीस अवतारों की वंदना से होता है ।

जय जय मीन बराह, कमठ नरहरिबलि बावन ।
परसुराम रघुवीर कृष्ण की रति जग पावन ।।
बुद्ध कलंकी व्यास पृथु हरिहंस मन्वतर ।।
जग्य रिषभ हयग्रीव ध्रुवबरदैन मन्वन्तर ।।
बद्रीपति दत्त कपिलदेव सनकादिक करुणा करौ ।
चौबीस रूप लीला रुचिर श्री अग्रदास उर पद धरौ ।।

इसके बाद कवि ने भगवान राम के उन पद चिह्नों (अंबुज, अंकुश, यव, ध्वज, चक्र, ऊर्धरेखा स्वस्तिक, अष्टकोण, पवि, बिन्दु, त्रिकोण, धनु, अंकुश, मत्स्य, शंख, चन्द्रार्द्ध, गोष्पद, घट, ध्वज, कुलिश, अंकुश, कमल) की प्रार्थना की है जिनके स्मरण से पापों का विनाश होता है।

इसके बाद नाभादास ने देवताओं की वंदना की है, इनमें ब्रह्मा, नारद और शंकर जी प्रधान है। इन्हीं के साथ सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, कपिलदेव, मनु, प्रह्लाद, जनक, भीष्माचार्य, बलि और शुकदेव आदि की भी बन्दना की है। सत्ययुग, त्रेता, द्वापर के चरित्रों की वन्दना के बाद नाभादस ने 18 महापुराणों, 18 स्मृतियों के बाद राम के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंत्रियों, प्रमुख सखाओं (सुग्रीव, हनुमान, अंगद आदि, कृष्ण के सखाओं, गोपिकाओं आदि का विवरण दिया है, सप्त द्वीप के भक्तों की प्रशंसा, अष्ट कुलनागों की बदना के साथ नाभादास ने सत्ययुग, त्रेता और द्वापर के भक्तों के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है।

इस प्रकार भक्तमाल का पूर्वार्द्ध नाभादास जी के भक्तमाल का वह अंश है जो भारतीय परंपरा में श्रुतियों, स्मृतियों और पुराणों से समर्पित है।

कलियुग के भक्त

चतुः सम्प्रदायाचार्य

नाभादास जी ने कलियुग के भक्तों में चार प्रमुख सम्प्रदाय के प्रवर्तकों का सर्वप्रथम उल्लेख किया है–

रमा पद्धति रामानुज विष्णुस्वमि त्रिपुरारि ।
निम्बादित्य सनकादिका मधुकर गुरु मुखचारि ॥

रामानुज पद्धति (संप्रदाय) में लक्ष्मी जी, विष्णुस्वामी जी की पद्धति में शिवजी, निम्बार्क पद्धति कों आचार्य सनकादिक और का मध्वाचार्य का मार्ग ब्रह्मा जी की पद्धति है। ध्यान देने योग्य तथ्य है कि नाभादास जी ने भक्तमाल में वैष्णवभक्तों का ही वर्णन किया है, नानक पंथी और उदासी सम्प्रदायों की चर्चा नहीं की।

रामानुजाचार्य जी

स्वामी रामानुज के संबंध में दो छप्पय हैं। नाभादास के अनुसार लक्ष्मी जी का संप्रदाय सब संप्रदायों का शिरोमणि है और संसार के ताप से बचाने के लिए भक्ति के मण्डप का चँदोआ है। इसमें विष्वकसेन शठकोप, बोपदेव, नाथमुनि, पुण्डरीकाक्ष, राममिश्र, पराकुंशाचार्य, यामुनाचार्य और रामानुज जी हुए।

रामानुजाचार्य की परंपरा अत्यन्त महिमा शालिनी थी। उनसे देवाचार्य, हरियानंद राघवानन्द और रामानंद जी हुए । भक्तमाल में इससे संबद्ध दो छप्पय-

श्रीरामानुज पद्धति प्रतापअवनि, अमृत ह्वै अनुसरयो ।
देवाचारज द्वितीय महामहिमा हरिया नँद ।
तस्य राघवानंद भए भक्तन को मानंद ।
पत्रावलम्ब पृथ्वी करी व काशी स्थाई ।
चारि बरन आश्रम सबही को भक्ति दृढ़ाई ॥
तिनके "रामानंद" प्रगट विश्वमंगल जिन्ह बपु धरयौ ।
श्री रामानुज पद्धति प्रताप अवनि अमृत ह्वै अनुसरयो ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामानन्द जी और उनके शिष्यों के सम्बन्ध में नाभादास जी ने 'संसार सागर से पार करने का द्वितीय सेतु कहा है–

"श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जगतरन कियो।
अनन्तानन्द, कबीर, सुखा, सुरसुरा, पदमावति नर हरि।
पीपा, भावानन्द, रैदास, धना, सेन सुरसुर की धरहरि।
औरों सिष्य प्रशिष्य एक ते एक उजागर।
विश्वमंगल आधार सर्वानंद दशधा के आगर॥
बहुत काल बपुधारि कै, प्रनत जनन कौं पार दियो।
श्री रामानंद रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जग तरन कियौ॥"

–भक्तमाल-छंद 36

अनन्तानन्दाचार्य, कबीर, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, पद्मावती, नरहरि, पीपा, भावानन्द, रैदास, घना, सेन और सुरसुरी और भी शिष्य-प्रशिष्य-गाल्बानन्द, योगानन्द आदि ने दशधा भक्ति पद्धति का व्यापक प्रचार किया। इसी परंपरा के पयहारीकृष्णदास जी (24 शिष्य-पृ. 388) अग्रदेवजी (छंद 41) और इनके शिष्य नाभादास जी हुए।

श्रीरामानुजाचार्य (1017 ई.-1137 ई.)

श्री वैष्णव मत के आचार्यों के शिरोमणि श्रीरामानुजाचार्य का जन्म 1017 ई. में तेरूँकुदूर नामक मद्रास के ग्राम में हुआ। इनके पिता की मृत्यु हो गयी। इन्होंने कांची में जाकर यादव प्रकाश नामक अद्वैती विद्वान् के पास वेद तथा वेदांत का अध्ययन आरंभ किया किन्तु यह अध्ययन अधिक दिनों तक न चल सका। गुरु और शिष्य में उपनिषद् के अर्थ में विवाद खड़ा हो गया। अतः इनका साथ छोड़कर स्वतंत्र रूप में वैष्णवशास्त्र का अध्ययन करने लगे। इनके गुरु यामुनाचार्य थे। इनकी आज्ञा से इन्होने वैष्णवधर्म पर अनेक पुस्तकें लिखीं। (1) वेदार्थ संग्रह-शांकर मत तथा 'भेदाभेदकारी भास्कर मत का खण्डनात्मक मौलिक ग्रंथ।

(2) वेदांतसार-ब्रह्मसूत्र की टीका।

(3) वेदांतदीप-ब्रह्मसूत्र की ही कुछ विस्तृत व्याख्या।

(4) गद्यत्रय–ईश्वर तथा प्रपत्ति विषयक ग्रंथ।

(5) गीताभाष्य-गीता का श्री वैष्णव मतानुकूल भाष्य।

(6) श्रीभाष्य - ब्रह्मसूत्र का उत्कृष्ट पांडित्यपूर्ण भाष्य जिसमें रामानुज की प्रतिभा और विद्वत्ता अपने पूर्णरूप में विकसित हो रही है।[3]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामानुज मत के सिद्धान्त

रामानुज मत में पदार्थ तीन ही हैं चित्, का अभिप्राय भोक्ताजीव, 'अचित् भोग्यजगत् और ईश्वर का अन्तर्यामी परमेश्वर से जीव और जगत भी वस्तुतः नित्य और स्वतः स्वतंत्र पदार्थ हैं तथापि ईक्षर के इन दोनों के भीतर अन्त शक्ति रूप से विद्यमान होने के कारण ये उसके अधीन रहते हैं। इसीलिए चित्त और अचित् ईश्वर के शरीर या प्रकार माने गए हैं।

ईश्वर समसा-जगत् का निमित्त कारण होते हुए भी उपादान कारण है। जगत् की सृष्टि भगवान् की लीला से ही उत्पन्न होती है। सृष्टि में वह पदार्थों के साथ लीला किया करता है, इसी प्रकार संह्वति उसकी एक विशिष्ट लीला ही है क्योंकि इस व्यापार में ईश्वर आनंद का अनुभव करता है। ईश्वर दो प्रकार का होता है–कारणावस्थब्रह्म और कार्यावस्थ ब्रह्म। यही सगुण ईश्वर भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए परमेश्वर पाँचरूप धारण करता है–पर, विभव, व्यूह, अन्तर्यामी और अर्चावतार।

रामानुज मत में निर्गुण ब्रह्म की कल्पना असंभव है क्योंकि संसार के समस्त पदार्थ गुण विशिष्ट ही प्रतीत होते हैं। यहाँ तक कि निर्विकल्पक प्रत्यक्ष के अवसर पर भी विशेष वस्तु की ही प्रतीति होती है।[4] ईश्वर सर्वदा सगुण ही होता है। निर्गुण ब्रह्म का अर्थ यही है कि ईश्वर प्राकृत तथा लौकिक गुणों से विरहित है। ईश्वर के चित् और अचित् शरीर है।

चित्

चित् से अभिप्राय है जीव जो देह-इन्द्रिय-मन-प्राण बुद्धि से विलक्षण, अजड़, आनन्द रूप, नित्य, अणु, अव्यक्त, अचिन्त्य, निरवयव, निर्विकार तथा ज्ञानश्रय है। जीव मे एक विशेष गुण होता है शेषत्व अर्थात् अधीनत्व, अपने समस्त कार्य-कलाप के लिए जीव ईश्वर पर आश्रित रहता है। इसीलिए वह कहलाता है शेष तथा ईश्वर कहलाता है शेषी ब्रह्म तथा जीव के संबंध में रामानुज का मत है कि जिस प्रकार देह-देही का अंश है, चिनगारी अग्नि का अंश है, उसी प्रकार जीव ब्रह्म का अंश है।

अचित्

ज्ञानशून्य विकारास्पद वस्तु अचित् कहलाती है। अचित् तत्त्व के तीन भेद होते हैं– (1) शुद्ध सत्व (2) मिश्र सत्व और (3) सत्वशून्य । सत्वशून्य अचित् तत्व है काल तथा रज से मिश्रित मिश्र तत्त्व प्राकृत सृष्टि का उपादान है इसी की संज्ञा है, माया, अविद्या और प्रकृति । शुद्ध तत्व की शुद्धता रज और तम को लेशमात्रा से मिश्रित न होने के कारण है। यह नित्य, ज्ञानानन्द का जनक, निरवधिक तेजोरूप द्रव्य है जिससे नित्य तथा मुक्त पुरुषों के शरीर की तथा उनके भोग्य स्थान स्वर्गादिकों की रचना होती है। भगवान के व्यूहादिक रूप इसी तत्व से बने हुए है। रामानुज आत्मा की स्थिति शरीर के अभाव में किसी की दशा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में नहीं मान ते। अतः मुक्त दशा में भी जीवों को शरीर-प्राप्ति होती है । वह इसी शुद्ध सत्व का बना हुआ अप्राकृत होता है।[5]

साधना पद्धति

आचार्य रामानुज के अनुसार भगवान् और जीव में शेषशेषी भाव संबंध है अर्थात् जीव है शेष = दास और भगवान हैं शेषी = स्वामी । जीव की इस भावना का नाम है शेषभूतता। अतः अपने स्वरूप से परिचित होकर जीवन का परम कर्त्तव्य है कि वह तन, मन से भगवान् और भागवतों की सेवा निर्हेतुक और एक निष्ठा से करे। भगवान् की सेवा तबतक अपूर्ण ही रहती है, जब उनके भक्तजनों की सेवान की जाय। रामानुज स्वामी का यह स्पष्ट आदेश है।

स्वामी नारायण के चरणारबिन्द मे समर्पण करने के अतिरिक्त अन्य कोई महनीय साधना नहीं है। इसके लिए दास्य भक्ति गृहीत की गई है। भक्ति का सार है–प्रपत्ति । आत्मनिवेदन के बिना अन्य साधना केवल बहिरंग मात्र है। प्रपत्ति के तीन आकार या विशेषण हैं–

(1) अनन्य शेषत्व-भगवान का ही दास होना ।

(2) अनन्य साधनत्व-भगवान् को ही एकमात्र साधन मानना ।

(3) अनन्यभोग्यत्व–अपने को एक मात्र भगवान् का ही भोग्य समझना । इन तीनों से प्रपत्तिपूर्ण होती है (भगवद्कृपा ही भगवद् प्राप्ति में एकमात्र उपाय है। इसमें गुरु का आश्रय परमावश्यक है। आचार्य पुरस्कृतजीव को ही नारायण स्वीकार करते हैं, और जीव भी आचार्य के द्वारा कृपापूर्वक विहित उपदेश का पालन करता हुआ। भगवत् - चरण को पा सकता है।

आचार्य रामानुजाचार्य के अनुयायी भक्त

आचार्य रामानुज द्वारा प्रवर्तित विशिष्टाद्वैत के अनुयायी कई भक्तों का उल्लेख भक्तमाल में है, उनमें तत्त्वाजी और जीवाजी (69) जगन्नाथ पारीष (छंद 143) और श्री लक्ष्मण भट्टजी (छंद 184) उल्लेख्य हैं।

तत्त्वाजी और जीवा जी

दक्षिण के विप्रकुल में उत्पन्न रामभक्त तत्त्वाजी और जीवाजी 'पद्मा पद्धति' (श्री संप्रदाय) के भक्त थे। श्री रामचन्द्र जी के अनन्य भक्त थे। प्रियादास जी ने टीका में इनकी निष्ठा की अद्‌भुत कहानी लिखी है। इनलोगों ने अपने द्वार पर एक सूखे का काष्ठ का ठूँठ गाड़ दिया था। जो संत इनके यहाँ आते थे, उनके चरण धोकर चरणामृत उसमें डालते थे। उनके मन में यह था कि 'जिसके पद तीर्थ से इस ठूँठ में हरे-हरे पत्ते निकल आवें, उसी को अपना गुरुदेव मानकर उन्हीं से मंत्र लेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संयोग से इनके यहाँ कबीरदासजी आ गए, उनके चरणों को धोकर ज्यों ही उस जल को उस ठूँठ में डाला, उसमें हरित शाखा और पल्लव निकल आए। इन दोनों भक्तों ने उनसे मंत्र-दीक्षा की प्रार्थना की। उन्होंने श्री राममंत्र देकर दोनों भाइयों को कृतकृत्य किया और काशी में आवश्यकता पड़ने पर आने का निमंत्रण दिया।

ब्राह्मणों ने इन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया क्योंकि जुलाहे कबीर से इन्होंने दीक्षा ली थी। ये लोग कबीरदास जी के यहाँ गए। इनकी बात सुनकर कबीरदास जी ने कहा 'तुम्हारे दोनों भाइयों के एक-एक कन्या और एक एक पुत्र है, सो आपस में विवाह कर दो, इसें तुम्हारी कोई घटी नहीं होगी। भगिनी भ्राता (बहिन-भाई) का विवाह करने का विचार सुनकर ब्राह्मणों ने इनके पुत्र और कन्या के विवाह करने का वादा किया। कबीरदास जी ने कहा 'जो ब्राह्मण लोग नम्र हुए हैं; तो यह दंड करो कि भगवद् भक्ति करें, तब व्याह करो' इन दोनों भाइयों का गुरुवचन में ऐसा विश्वास देख विपक्षी भी बड़ाई करने लगे 'हमसे सब तो आपके गुरुवचन पालन ही में रीझ गए।"

नाभादास जी ने भक्तमाल में इन दोनों भाइयों के संबंध में भी जो बातें नहीं लिखी, प्रियादास जी ने आश्चर्य भरी-बातें भी लिख दी–

'तत्त्वा' जीवा दक्षिण देस बंसोद्धर राजत विदित ॥
भक्ति सुधा जल समुद्र भये बेलाबलि गाढ़ी ।
पूरबजा ज्यों रीति प्रीति उत्तरोत्तर बाढ़ी ॥
रघुकुल सदृश सुभाव, मिष्ट गुण सदा धर्म रत ।
सूर धीर, उदार, दया पर, दक्ष, अनन्य व्रत ॥
पदमखंड पदमा पद्धति प्रफुलित कर सविता उदित ।
तत्त्वा जीवा दक्षिण बंसोद्धर राजत विदित ॥

–भक्तमाल -69

श्री जगन्नाथ पारीष

रामानुजाचार्य में निष्ठा रखने वाले श्री जगन्नाथ पारीष जी राजा के पुरोहित थे और रक्षक भी थे, बड़े शूरवीर थे, पर भक्त ऐसे कि अपने अंगों को वैष्णव चिन्हों से भी मंडित करते थे–

पारीष प्रसिद्ध कुल काँथड़्या जगन्नाथसीवां धरम ॥
(श्री) रामानुज की रीति प्रीति पन हिरदै धारयो ।
संस्कार सम तत्त्व हंस ज्यों बुद्धि विचारयौ ॥
सदाचार मुनि-वृत्ति, इंदिरा पधति उजागर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदास सुत संत अननि दसधा को आगर ॥
पुरुषोत्तम परसाद तें उभै अंग पहिरयौ वरम ।
पारीष प्रसिद्ध कुल काथड़्या, जगन्नाथ सीवाँ परम ॥

–भक्तमाल-छंद 143

भक्तमाल के इस छंद के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि नाभादास जी ने भक्त के आचरण के माध्यम से भक्ति तत्त्व को स्पष्ट किया है। साधु स्वभाव, अनन्य शरणागति और दशधा (प्रेमा) भक्ति ये जिनमें दिखाई दें, वे ही रस सिद्ध भक्त हैं।

श्री लक्ष्मण भट्ट जी

श्री रामानुजाचार्य के संप्रदाय में शरणागति भक्तिमार्ग की प्रधानता है। लक्ष्मणभट्ट जी सदाचार और मुनिवृत्ति से भजन करने वाले भक्त थे। भगवद् भक्तों में उनकी प्रीति थी और दशधा (प्रेमा) भक्ति के स्थान ही थे। श्री मद् भागवत के विशिष्ट कोटि के वक्ता थे–

श्री रामानुज पद्धति प्रताप भट्ट लक्षमन अनुसरयौ ॥
सदाचार मुनिवृत्ति भजन भागौत उजागर ।
भक्तनि सों अति प्रीति भक्ति दसधां कौ आगर ॥
संतोषी सुठि सील ह्रदै, स्वारथ नहि लेसी ॥
परम धर्म प्रतिपाल संत मारग उपदेसी ।
श्री भागौत बरवान के, नीर क्षीर विबरन करयौ ।
श्री रामानुज पद्धति प्रताप, भट्ट लक्षमन अनुसरयौ ॥

–भक्तमाल-छंद 184

रामानुजाचार्य और रामानन्दाचार्य-

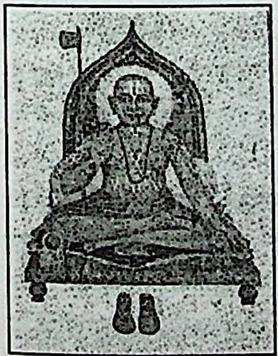

भक्त माल में रामानुज की पद्धति को 'रमा पद्धतिं के नाम से अभिहित किया गया है छंद-29) और (छंद 30) में सिन्धुजा 'सम्प्रदाय शिरोमणि' सिन्धुजा रच्यो भक्ति वितान भी कथित है। इसके अन्तर्गत विष्वकसेन, शठकोष, बोपदेव (श्रीमद्भागवत के उद्धारक) श्रीनाथ मुनि, पुण्डरीकाक्ष, राममिश्रजी, पराकुंशजी, या मुनाचार्य और अनन्त श्री रामानुजाचार्य आदि (आचार्य) को अंधकार का शमन करने वाले सूर्य के समान कहा गया है। उनका प्रशस्तिविषयक वह छंद द्रष्टव्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्त्र आस्य उपदेशकरि, जगत उधारन जतन कियौ ॥
गोपुर ह्वै आरूढ़ ऊँच स्वर मन्त्र उचारयो ।
सूते नर परे जागि, ब्रहत्तरि श्रवणनि धारयो ॥
तितनेई गुरुदेव पधति भई न्यारी न्यारी ।
कुरु तारक शिष्य प्रथम भक्ति वपु मंगलकारी ॥
कृपणपाल, करुणासमुद्र रामानुज सम नहिं वियो ।
सहस्त्र-आस्य उपदेश करि, जगत उधारन जतन कियो ॥

–भक्तमाल-छन्द 31

इस छप्पय से इतना तो पता चलता है कि रामानुजाचार्य ने अनेक शिष्यों और पद्धतियों से वैष्णव धर्म को व्यापकता दी । 'प्र पन्नामृत' नाम ग्रंथ में इनकी जीवन-गाथा और पद्धति की विशद चर्चा है। भक्तमाल में इनके चार गुरु भाई (श्रुति प्रज्ञा, श्रुतिप्रज्ञ, ऋषभ, पुष्कर) और इनके जामाता लालाचार्यजी (छंद 33) पादपङ्कजी -35) के चमत्कारपूर्ण कृत्यों का भी वर्णन है।

रामानुजाचार्य से सम्बद्ध छप्पय को लेकर एक विवाद यह खड़ा हुआ कि क्या रामानन्द जी का कोई स्वतंत्र संप्रदाय है या रामानुजाचार्य के वे अनुयायी हैं। सर्वप्रथम भक्तमाल का छप्पय लें–

श्रीरामानुज पद्धति प्रताप अवनि अमृत है अनुसरयो ।
देवाचारज द्वितीय महामहिमा हरियानन्द ।
तस्य राघवानन्द भए भक्तन को मानँद ॥
पत्रावलम्ब पृथिवी करी काशी स्थाई ।
चारिबरन आश्रम सबही को भक्ति हढ़ाई ॥
तिनके रामानँद प्रगट, विश्व मंगल जिन्हु वपु धरयौ ।
श्रीरामानुज पद्धति प्रताप अवनि अमृत है अनुसरयौ ॥

–भक्तमाल-छंद 35

रामानुज स्वामी के संप्रदाय की कीर्ति चारों ओर फैली थी। उसको देवाचार्य, हरियानंद और राघवानन्दाचार्य जी ने भरत खंड में और फैलाया। इन्हीं राघवानन्द स्वामी के शिष्य रामानन्द जी हुए, जो विश्व मंगल के सूत्रधार थे।

इस प्रकार रामानन्द को रामानुज का अनुयायी मानना क्या समीचीन है? आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस संबंध में इस प्रकार लिखा 'रामानन्द चाहे जिस दृष्टि से रामानुज के मतावलम्बी क्यों न रहे हों, तत्व दृष्टि से तो उनके मतावलम्बी नहीं थे, कुछ दूसरे पंडित ठीक इसके विरुद्ध मत का प्रतिपादन करते हैं। वे तत्त्वदृष्टि से तो रामानंद को रामानुज का अनुयायी मानते हैं, पर उपासना की पद्धति में एक दम अलग ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामानन्द द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय में राम और सीता को जिस प्रकार पर माराध्य माना जाता है, उस प्रकार रामानुज के प्रवर्तित श्री वैष्णव सम्प्रदाय में नहीं माना जाता। श्री वैष्णव सभी अवतारों की उपासना करते हैं।

रामानंदी लोगों में जो मंत्र प्रचलित हैं, वह भी रामानुज संप्रदाय के मंत्र से भिन्न है।

उनका तिलक रामानुजी मत के तिलक से मिलता-जुलता है, फिर भी हू-बहू यही नहीं है। बल्कि थोड़ा भिन्न है।

रामानंदी संप्रदाय का नाम भी हू-बहू वहीं जो रामानुजीय संप्रदाय का। नीचे लिखी तालिका से स्पष्ट हो जाता है कि दोनों संप्रदायों में सभी महत्त्वपूर्ण बातों में भेद है–

	रामानुजीय	रामानंदीय
सम्प्रदाय	श्रीवैष्णव संप्रदाय	श्री संप्रदाय
मंत्र	ॐ नमो नारायणाय	ओंऽम् रामाय नमः
भाष्य	श्रीभाष्य	आनन्दभाष्य

"फिर भी परंपरा से रामानंद का संबंध रामानुजीय संप्रदाय से सिद्ध हैं।"[6]

इसीलिए नाभादासजी ने भक्तमाल में रामानन्दाचार्य को रामानुजाचार्य की पद्धति का प्रचारक कहा है। स्पष्ट है कि दोनों संप्रदायों की चिंतन-पद्धति और आचरण-पद्धति पृथक् है। आगे आचार्य रामानन्द जी के दर्शन एवं भक्ति सिद्धान्त की व्याख्या की जा रही है।

आचार्य रामानन्द-व्यक्तित्व एवं कर्त्तृत्व

आचार्य रामानन्द के संबंध में भक्तमाल के दो छंदों में मात्र सामान्य निर्देश है 'श्री रामानुज स्वामी के संप्रदाय की पद्धति का प्रताप पृथ्वी पर अमृत के रूप में व्याप्त था, उनके शिष्य राघवानन्द हुए वे काशी आए, इनके शिष्य श्री रामानन्द मानों विश्वमंगल स्वरूप होकर प्रकट हुए' (छंद 35) ।

दूसरे 36वें छप्पय में 'श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों द्वितीय सेतु जग तरन कियो' रामानन्द ने संसार के उद्धार के लिए दूसरे पुल का निर्माण किया' और बहुत समय पृथ्वी पर रहकर दुःखी लोगों को संसार से पार करते रहे। (छंद 36) ।

रामानन्द को रामानुज-द्धति का अनुसरण करने वाला कहना अनेक विवादों का कारण बना। आचार्य रामानन्द ने युगानुकूल अपनी चिन्तनधारा से ऐसा परिवर्तन उपस्थित कर दिया, कि रामानुज की पद्धति से उनका पार्थकम हो गया।"[7] तत्त्वतः रामानुचार्य के मतावलम्बी होने पर भी अपनी-उपासना पद्धति का इन्होंने विशेष ध्यान रखा। इन्होंने उपासना के लिए वैकुंठ निवासी विष्णु का स्वरूप न लेकर लोक में लीला विस्तार करने वाले उनके अवतार राम का आश्रय लिया। इनके इष्टदेव राम हुए और मूलमंत्र हुआ समनाम । रामानंद जी ने केवल यह किया कि विष्णु के अन्य रूपों में राम रूप को ही लोक के लिए अधिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्याण कारी समझ छाँट लिया और एक सबल संप्रदाय का संगठन किया। इसके साथ उन्होंने उदारता पूर्वक मनुष्य मात्र को इस सुलभ सगुण भक्ति का अधिकारी माना और देशभेद, वर्णभेद, जातिभेद का विचार भक्तिमार्ग से दूर रखा। यह बात उन्होंने सिद्धों या नाथपंथियों की देखादेखी नहीं की, बल्कि भगवद्भक्ति के संबंध में महाभारत, पुराण आदि में कथित सिद्धान्त के अनुसार की । रामानुज संप्रदाय में दीक्षा केवल द्विजातियों को दी जाती थी, पर स्वामी रामानंद ने रामभक्ति का द्वार सब जातियों के लिये खोल-दिया और एक उत्साही विरक्त दल का संघटन किया जो आज भी 'बैरागी' के नाम से प्रसिद्ध है। अयोध्या, चित्रकूट आदि आज भी वैरागियों के मुख्य स्थान हैं।

रामानन्द स्वामी के जीवन काल के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। स्वामीजी की सर्वमान्य जन्मतिथि सन् 1299 ई (संवत् 1356 वि., कलि के 4400 वर्ष बीतने पर) माघ कृष्ण सप्तमी, चित्रा नक्षत्र, सिद्धि योग, कुम्भ लग्न; दिन सात दण्ड चढ़ने पर गुरु को मानी जाती है। अगस्त्य संहिता के भविष्योत्तर खण्ड में इस मत की प्रतिष्ठा की गई है। रामानन्द संप्रदाय के विद्वान् श्री भगवदाचार्य तथा सीतारामशरण भगवान प्रसाद रूपकला आदि इस मत से पूर्णतया सहमत हैं। प्रयागराज में कान्यकुब्ज ब्राह्मण पुण्य सदन के घर में विक्रमीय संवत् 1356 को माघ कृष्ण सप्तमी तिथि को माता सुशीला देवी के यहां स्वामी जी का जन्म हुआ। इनका पूर्व नाम रामदत्त था। इन्हें गुरु राघवानन्द की कृपा से सत्य का साक्षात्कार हुआ। गुरुजी ने रामान्द जी की अलौकिक प्रतिभा से प्रसन्न होकर अपना कार्य भार इन्हें सौंप दिया। रामानन्द जी ने अपना केन्द्र मठ पंचगंगाघाट (काशी) को बनाया और अनन्तादि शिष्य-प्रशिष्यों की गौरवशाली परंपरा प्रारंभ हुई।

काशी स्थित श्रीमठ को अपनी तेजस्विता और मौलिक चिन्तन से रामानन्द स्वामी ने सक्रिय बनाया। नाभादास जी ने रामानन्द को 'रघुनाथ के समान द्वितीय सेतु' बनाने वाला कहा है। भक्तमाल के अनुसार अनन्तानन्द, कबीर, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, पद्मावती, नरहर्थानन्द, पीपा, भावानन्द, रैदास, धना, सेन सुरसुरी आदि द्वादश शिष्य रामानन्द के प्रमुख शिष्यों में है। "यहाँ का सारावातवरण रामानन्द की स्मृति से ओतप्रोत है, यहीं रहकर उस मनस्वी ने अपने मतवाद का दृढ़ता से प्रचार किया था, यहीं से उस धर्म की ज्योति फूटी थी जिसकी एक किरण तुलसी के रूप में युग-युग के अन्धकार में प्रकाश भर गई।"

रामानन्द स्वामी की रचनाओं के संबंध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उनके 'वैष्णव मताब्ज भास्कर' और श्री रामार्चन पद्धति' को रामानन्द का मानते हैं। इनकी दृष्टि में साम्प्रदायिक झगड़े के कारण ब्रह्मसूत्रों पर आनन्दभाष्य और भगवद् गीता ग्रन्थ भाष्य' को भी इन्हीं का बताया जाता है। ये ग्रन्थ रामानुजपरंपरा से रामानंदजी की परंपरा को विल्कुल स्वतंत्र सिद्ध करने के लिए अलग बाद में उनके नाम से प्रचारित किए गए। शुक्लजी के अनुसार चिन्तामणि और रामरक्षा 'स्तोत्र' योग रामानन्द के नहीं हो सकते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने 'रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ नामक ग्रंथ में 'रामरक्षा', ज्ञानलीला, आरती, योगचिन्तामणि, ज्ञानतिलक स्तोत्र को रामानन्द कृत माना है।

डॉ. बदरी नारायण श्रीवास्तव ने उनकी 19 रचनाओं का उल्लेख किया है, पर वैष्णव मताब्ज भास्कर' और श्री रामार्चन पद्धति को प्रामाणिक रचना माना है।

रामानन्द स्वामी ने काशी के पंचगंगा स्थित श्रीमठ से अपने द्वादश शिष्यों के द्वारा रामभक्ति का प्रचार किया, इसको लक्ष्य कर स्वामी जी के समकालीन काशी निवासी रशीदुदीन फकीर ने अपनी फारसी रचना 'तजकर तूल फुकरा' में लिखा–"काशी में पंचगंगा घाट पर उर्ध्वपुण्ड्र तिलकधारी एक प्रसिद्ध महात्मा तेजपुंज योगेश्वर, वैष्णवों में सर्वमान्य आचार्य, ब्रह्मनिष्ठ समाज में अत्यधिक प्रभावशाली, केवल ब्रह्मवेला में गंगा में स्नानार्थ अपनी गुफा से बाहर निकलते थे। इस पवित्र आत्मा को स्वामी रामानन्द पुकारा जाता है। मुख्य शिष्यों की संख्या पाँच सौ से अधिक, द्वादश शिष्य अधिक कृपा मात्र । इनके संप्रदाय का नाम श्रीसम्प्रदाय है। इन्होंने अपने विशेष पार्षद हनुमान के द्वारा षडक्षरी रहस्य मत्र में रं रामायनमः' का में प्रकाश किया। इसे तारक मंत्र कहा जाता है।"[10]

यह श्रीमठ जो मुसलमानी शासन में ध्वस्त कर दिया गया था, उसे पुनः अपने प्राचीन रूप में गौरव रूप देने में वर्तमान जगद् गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी समनरेशाचार्य सन् 1988 से श्री रामानन्द पर ग्रंथ प्रकाशन, उत्सव महोत्सव विधान और मन्दिर निर्माण आदि के द्वारा रामानन्द के युगान्तकारी व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने में तत्पर हैं। वहाँ से अब तक पचासों ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं–

(1) श्रीमठ प्रकाश-संपादक-डॉ. विवेकी राय प्रकाशक-सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल ।

2. रामरक्षा स्तोत्र-मध्यप्रदेश सरकार ।

3. रामानन्द राम रसमाते-जनवरी 2001 संपादक-डॉ. उदय प्रताप सिंह।

4 पायसपायी-सन् 2008 डॉ. दया कृष्णविजयवर्गीय।

5. श्री रामानन्द चरितम् (गद्यकाव्यम्) 2011 डॉ. प्रभु नाथ द्विवेदी ।

6. तीर्थराज प्रयाग और महाकुंभ ।

7. हरिद्वार समग्र-2010 ।

इस प्रकार स्वामी रामानन्द की विचारधारा को मूर्त रूप देने के कई स्थानों से आयोजन हो रहे हैं।

रामानन्द स्वामी का दार्शनिक सिद्धांत

रामानन्द स्वामी द्वारा प्रवर्तित रामानंद संप्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्त के मान्य ग्रंथ 'वैष्णव मताब्ज भास्कर' और रामार्चन पद्धति है। वैष्णवमताब्ज भास्कर' में रामानंद के पट्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिष्य सुरसुरा नन्द ने दस प्रश्न पूछे हैं, तत्त्व क्या हैं? जप किसका किया जाय? इष्ट ध्यान क्या है? वैष्णव किसने प्रकार के होते हैं? उनके लक्ष्य क्या हैं? उन्हें कालक्षेप कैसे करना चाहिए? वे निवास कहाँ करें'? इन प्रश्नों के उत्तर में स्वामी रामानन्द ने अपने मत का निरूपण किया है, जिससे सूक्ष्म रूप में संप्रदाय का सारा स्वरूप व्यक्त हो गया। यहाँ उन्हीं प्रश्नों के उत्तर के आधार पर स्वामी जी के दार्शनिक मठों का विश्लेषण किरण जाता है।

दार्शनिक सिद्धांत

इस ग्रंथ के अनुसार तत्व त्रिविध हैं चित्, अचित् और ब्रह्म । चिदचिद् विशिष्ट एक ही ब्रह्म तत्त्व के तीन प्रकार हैं। तीनों अनादि और नित्य हैं। अचित् मायातत्त्व को प्रथम समझें। प्रकृति (माया) नित्य है, अज्ञ है, अचेतन (जड़) है, परिवर्तन शीला है, विश्व की कारणभूता है तथा एक होते हुए भी अनेक नाम-रूपों में दृश्यमान् होने वाली है, सत्व, रज, तम इन तीनों गुणों से संपन्न है, वह अजा प्रकृति अव्यक्त, प्रधान आदि अनेक नामवाली, स्वतंत्र शक्ति रहित, भगवत्पराधीन, अहंकार-मभकार प्रकट करने वाली तथा अनादि है।

जीव (जीवात्मा) नित्य है, यह चित (चेतन) ज्ञानशक्तिवाला, ज्ञानानंदस्वरूप और स्वयं प्रकाश है? बद्ध, मुक्त और मुमुक्षु विभिन्न स्वभाववाला है, प्रत्येक शरीर में भिनन-भिन्न है, अनेक प्रकार के नाम-रूप धारण करने वाला है। इसको अन्तर्यामी प्रभु की सान्निध्यता प्राप्त है, अपने कर्मों का फल स्वयं भोगने वाला है, विपत्ति में प्रभु की कृपा प्राप्त कर कृतार्थ होने वाला है। ऐसे निज कृत कर्म का अभिमानी जीव चेतन है।

ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर, कलुषरहित, सनातन और मन-वाणी के द्वारा अगम्य है। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, तारा, बिजली सभी इसके तेज से प्रकाशित है, जिसके भय से पवन निरंतर चलता रहता है तथा पृथ्वी पाताल में डूब नहीं जाती, वह सर्वेश्वर, सर्वज्ञ, सर्वसाक्षी, कूटस्थ, अद्वितीय और अनन्त दिव्य गुण संपन्न है।

ईश्वर और माया में यह अन्तर है कि ईश्वर ज्ञान स्वरूप है माया अज्ञान ईश्वर विभु है और माया अणु, ईश्वर विश्व के मध्य निवास करता है, कूटस्थ है, उसके विभुत्व के प्रदर्शन के लिए माया का होना आवश्यक है। दोनों विश्व के उत्पादक हैं। माथा विश्व योनि है, बिना उसके ईश्वर सृष्टि नहीं कर सकता ? माया से ईश्वर सृष्टि उत्पन्न करना है। माया तो स्वयं ब्रह्मतत्व में निहित होने से ग्रह्म विश्व का उपादान कराण है। संकल्पमय ईश्वर रूप से निमित्र कारण है और अन्तर्यामी रूप से सहकारी कारण है।

ईश्वर, जीव और और माया यह ब्रह्म की त्रिपाद विभूति हैं और समस्त व्यक्त सृष्टि ली विभूति ।

जीवका कल्याण कैसे हो?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीव बद्ध है, माया के कारण अनेक प्रकार के कष्टों को भोग रहा है। इससे मुक्ति कैसे मिले? इसका प्रधान साधन है पराभक्ति । इसका दूसरा नाम परा अनुरक्ति है। यह अनुरक्ति (स्मृति भक्ति) जो तैल धारावत हो, स्मृति या भक्ति हमारा संबंध स्थापित करती है। वह कई प्रकार की हो सकती है सामान्यतया उसके नौ भेद है, जिनकी प्रेरणा से भक्त उनका यशकीर्तन करता है, उनके चरणों की वन्दना करता है, विधि-विधान से उनकी पूजा करता है, उनकी दासता करता है, उनमें सखा भाव रखता है, और अपने आप को उनको अर्पण कर देता है–यही नौ संबंध वैष्णव मताब्ज भास्कर 'में' भी माने गये हैं–

उदार कीर्तेः श्रवणं च कीर्तनं,
हरेर्मुदा संस्मरणं पदश्रितिः ।
समर्चनं बन्दन दास्य सख्यका-
न्यात्मार्पणं सानवधेति गीयते ।

-वै. भ. भास्कर छंद-67

नवधा भक्ति अपने चरम रूप में पराभक्ति हो आती है। यही तैलधारावदनविच्छिन्न स्मृति भक्ति मत-मतांतरों में नाना प्रकार से व्यक्त की गई है सर्वेश्वर प्रभु की नित्य निरंतर अखंड स्मृति स्वरूपा पराभक्ति है। इसका उदय सद्विवेक निष्काम वृत्ति, सदैव भगवच्चिंवन भगवत् -भागवतों के कैंकर्य में अनुपमनिष्ठा निरंतर नाम स्मरणादिक से होता है। सत्य ऋजुता (कोमलशील स्वभाव) दया-दान-कल्याण साधना-अहिंसा-अदैन्य (राग-द्वेषजनित-विचार से रहित रहना, सन्तोष इत्यादि सप्त भूमिका की सिद्धि से तथा यम-नियम-आसन-प्राणायाम प्रत्याहार-ध्यान धारणा तथा प्रेम समाधि-इन इन अष्टांग योग साधना की सिद्धि स्वरूप फल प्राप्त होना ही पराभक्ति का कारण है यह पराभक्ति भगवान के साथ (वै. म. भा. 66)।

पितृभाव, भर्ताभावं, वात्सल्य भाव, स्वामीभाव, आत्मा-आत्मीय स्वभाव, सेवक-से व्यभाव और भोग्य-भोक्तृरक भाव आदि में से किसी एक भाव की साधना से उपलब्ध होती है।

प्रपत्ति

रामानन्द संप्रदाय से प्रपत्ति का बड़ा महत्त्व है। यह संप्रदाय ही प्रपत्ति मार्ग है। अपने को सर्वथा भगवान की शरण में छोड़ देना प्रपत्ति है। प्रपत्ति की विशेषता न्यास है और प्रवृत्ति की निवृत्ति न्यास कही गयी है अपने सब कर्मों को भगवान को निवेदित कर देना चाहिए। 'हे प्रभो ! मैं सर्वथा असमर्थ हूँ । तुम्हीं हमारे उपाय बनो' इस प्रकार की जो प्रार्थना है, उसी को प्रपत्ति कहते हैं। इसका तात्पर्य इस प्रकार जानना चाहिए' भगवान् के पास लाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रार्थना करें 'हे प्रभो! मैं मुक्ति चाहता हूँ किन्तु मोक्ष के साधक भूत शास्त्रविहित कर्मयोग तथा ज्ञानयोग से साध्य भक्तियोग करने में सर्वथा असमर्थ हूँ। इसलिए आप ही मेरे लिए भक्ति बनकर मेरी अभिलषित मुक्ति प्रदान कीजिए, इस प्रकार की प्रार्थना का नान्म प्रपत्ति है।

आचार्यों ने प्रपत्ति के पाँच अंग, इसके अतिरिक्त एक अंगी (अवयवी) इस प्रकार कुल मिलाकर प्रपत्ति के अंगों के स्वरूप का निर्देश किया है–

(1) भगवान् के प्रति अनुकूलता का संकल्प

(2) प्रतिकूलता का वर्जन

(3) भगवान् सर्वत्र रक्षा करेंगे, इस बात में अटल विश्वास ।

(4) केवल भगवान् का वरण ।

(5) आत्मनिक्षेप और कार्पण्य, इनको प्रपत्ति के ही अंग समझना चाहिए।

यहीं–षडविधा शरणागति है।[11]

आनुकूलस्य संकल्पः प्रातिकूलस्य वर्जनम् ।
रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्व वरणं तथा ।।
आत्मनिक्षेप कार्पण्यं षड्विधा शरणागतिः ।।

प्रपत्ति को सब ग्रहण कर सकते हैं, उसमें किसी प्रकार भी बाधा नहीं। समर्थ-असमर्थ सब उसके अभिकारी हैं, उसके लिए न बल चाहिए, न कुल, समय, न शुद्धता। उसका अनुसरण करना स्वयं शुद्धता प्रदान करता है। प्रपन्न भक्तों में जाति-पात है, पर खाईं के रूप में नहीं। नीचे वर्ण के प्रपन्न भक्तों की सेवा भी ऊँचे वर्ण के भक्तों से करणीय है। यदि कभी कोई दोष बन पड़े तो भगवान् के प्रपन्न हो जाने से उसका परिहार होता है क्योंकि प्रपन्न भक्त के कर्मों के भोग को व्यापक भगवान्,जो उन कर्मों का साक्षी है, स्वयं भोगता है और भक्त का उसे त्राण कर देता है, यही भगवान् की वत्सलता है। भक्त के दुख को वे सह नहीं सकते–

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाभ्येतत् व्रतं मम ।।

प्रपत्ति के विषय में आचार्य का मत है, स्मृति व्यक्ति के लिए प्रपत्ति आवश्यक है। स्मृति भक्ति के पहले षडक्षरतारक मंत्र (रां रामाय नमः) द्वयमंत्र (श्री रामचन्द्र चरणौ शरतां प्रपचे) और चरमं मंत्र (सकृदेव प्रपन्नाय) का जप करना चाहिऐ। प्रपत्ति के आधार हैं स्मृति भक्ति के नवविधि भावों में आत्मार्पण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्ति, कर्म और ज्ञान मार्गों का प्रपत्ति से विरोध है। स्वतंत्र रूप से उनको करने से प्रपत्ति में वाधा पड़ती है। परन्तु उनको स्वतंत्र न मानते हुए भगवान् की आज्ञा समझकर करना वांछनीय है। इसीलिए योग के यमादिअंग स्मृति के सुबोधक अंग कहे गए हैं। स्मृति प्रतिपादित नियमों का पालना भी लोक संग्रह के उद्देश्य से निहित हैं परन्तु उनके फल में कोी कामना न होनी चाहिए।

रामानंद संप्रदाय के विधि-विधान

रामानंद संप्रदाय के साम्प्रदायिक लक्षणों में पंच संस्कार सबसे पहले आते हैं– पहला संस्कार है, बाहुभूल में तप्तशंख-चक्रादि की छाप । प्रवेशोत्सुक-साधक को गुरु वर्ष पर्यन्त जाँचता है। जब उसे निश्चय हो जाता है कि साधक संप्रदाय में प्रवेश पाने योग्य है, तब वह शुभ विधि-विधान से चक्रांकित किया जाता है।

तदनन्तर वह ऊर्ध्व पुंड्र धारण करता है।

उसे कोई दासांत नाम दिया जाता है और मंत्र में दीक्षित किया जाता है तथा उसे तुलसी की माला पहनाई जाती है जिसमें तुलसी काष्ठ के 108 मनके होते हैं, और नाभि तक लंबी होती है। तब उसे पराभक्ति की ओर प्रवृत्त होने का साम्प्रदायिक अधिकार प्राप्त होता है। (वैष्णव मताब्ज भास्कर-श्लोक-61)।

इस संप्रदाय में जप के लिए 'रांरामाय नमः' इस षडक्षर मंत्र का विधान है। वेद मंत्रों में जो स्थान ॐ, को दिया जाता है, वह 'रां' को दिया गया है। इतना ही नहीं वह ॐ के ऊपर विठलाया गया है। 'ॐ' प्रणव है, रां प्रणवि, रां में ॐ निहित है। वह जगत् का आधार साक्षात् ब्रह्मविंदं है। भवसागर को तारने वाला 'रां रामायनमः' है। इसके एक-एक अक्षर की बड़ी विवृत्ति की गयी है। इसके अनन्तर द्वय मंत्र और श्रीरामचन्द्रचरणौ 'शरणं प्रपद्ये' की महिमा गायी गई है।

रामभक्त का वास्तविक पूजन उनके विग्रह, अर्चा मूर्ति के द्वारा होता है। मूर्ति के रूप में भगवान् अर्चावतार है। मिट्टी, पाषाण, धातु आदि की बनी होने पर भी मूर्ति के नहीं हैं क्योंकि अर्चावतार की देह अप्राकृतिक है। राम सब विषम गुणों के आग़ार हैं और सब हेय गुणों का उनमें अभाव है। दया, वत्सलता आदि इन गुणों का राम के साथ नित्य संबंध है और उनके विग्रह का राम के साथ। अर्चावतार सहिष्णु है, अर्चक के सब अपराधों को सहन करता है। किसी विशेष रूप में उसकी पूजा हो सकती हो, ऐसा कोई नियम नहीं। उसके सभी पूजा, भोग, रागादि अर्चक के अधीन है। भक्त अपने भगवान की पूजा द्विभुज, चतुर्भुज, किशोर, बालक आदि जिस रूप में चाहे भक्त अपने भगवान की पूजाकर सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त प्रभु राम का ध्यान, सांग सायुध होता है। बहुधा राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी होते हैं क्योंकि तीनों मिलकर परब्रह्म राम का पूर्णरूप हैं। राम ईश्वर हैं, सीता माया और लक्ष्मण शेष जीव।

सीता संप्रदाय की प्रवर्तक मानी जाती हैं, इसलिए संप्रदाय का नाम श्री संप्रदाय है, वे पुरुषकार परा हैं, अर्थात् गुरु की शरण में आये हुए भक्तों को भगवान् को निवेदित करती हैं।

नित्यं सा पुरुषकारभूता सीताऽनपायिनी।
अनुपायान्तरैर्विज्ञैरुच्यते तदुपायता। श्लोक 97।

प्रभु श्रीराम भी भक्तों के प्रति वात्सल्य एवं दया भाव रखते हैं। अपनी प्रभुता का विस्मरण कर उनकी रक्षा के लिए दौड़े जाते हैं। (श्लोक 98-99)

प्रभु श्रीराम के अर्चा विग्रह स्वयं, व्यक्त, देव पूज्य सिद्ध-संतो द्वारा प्रतिष्ठित तथा भक्त मानवों द्वारा पधराई हुई–ये चार प्रकार के भेद हैं। श्लोक 118

पूजा के सोलह उपचार होते हैं–आवाहन, आसन, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा और विसर्जन। प्रतिष्ठित श्री विग्रहों में नित्य प्रति आवाहन तथा विसर्जन नहीं किया जाता। भक्त को चाहिए कि वह भगवान् से प्रसन्नता की याचना करने हुए साष्टांग प्रणाम करे जिसमें दो पाँव, दोनों घुटने, छाती, सिर और दोनों भुजाएँ पृथ्वी को छूती रहें।

जगत्पते श्रीशजगन्निवास प्रभो जगत्कारण रामचन्द्र। नमोनमः कारुणिकाय तुम्यं पादाब्ज युग्मे तव भक्तिरस्तु मनो मिलिन्द स्तावपाद पङ्क्जे रमार्चिते रमतां भवे भवे। यशः श्रुतौ ते ममकर्णयुग्मकं त्वद्भक्त सङ्गोऽस्तु सदा ममं प्रभो पृ.54।

नित्यनैमित्तिक कार्यों से निवृत्त होकर प्रातः, मध्याह्न और सायं तीनों कालों में इस प्रकार रामार्चन होना चाहिए। साथ-साथ हनुमान, गरुड़ादिकों की भी पूजा है। पूजा की विधि का वड़ा-व्यापक वर्णन है, रामार्चन पद्धति में पूजा के कृत्यों का पूरा विवरण है।

अवकाश के समय रामायण, महाभारत श्रीभाष्य (के वेदान्त सूत्र पर रामानुज भाष्य) श्रीमद्भागवत आदि ग्रंथ तथा द्रविड़ आलवारों की रचनाएँ भी पढ़े।

बर्ष की 24 एकादशियों में व्रतोत्सव, का भी विधान है। सम्प्रदाय में विशेष स्थानों का भी मान है, जहां निवास करना चाहिए। जिस नाम से जहाँ भगवान निवास करते हैं, उस नाम के सहित छियालीस तीर्थों के नाम भी वैष्णव मताब्ज भास्कर में है।

रामानंद स्वामी का अवदान

स्वामी रामानन्द को सदा इस रूप में स्मरण किया जाता है कि वे ऐसे समय में हुए जब चारों ओर बड़ी अशांति और अव्यवस्था फैली हुई थी। शासक कर वसूल करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में लगे थे। अपने धन-जन की रक्षा का प्रबंध लोगों को स्वयं करना पड़ता था। स्वतंत्रता के साथ धर्मकृत्य करना कठिन काम सा था। इनसे एक शताब्दी बाद में 'होने वाले बल्लभाचार्य जी ने कृष्ण से प्रार्थना की, 'म्लेच्छों से दबाए गए देशों में जहाँ पाप का घर निवास बन गया है, हे कृष्ण! आप ही मेरी रक्षा करने वाले हैं–

म्लेच्छा क्रान्तेषु देशेषु पापैक निलयेषु च।
सत्पीड़ाव्यग्र लोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम ॥

–श्री कृष्णाश्रयः श्लोक-2

इसके साथ झूठी मान मर्यादा के कारण आपसी कलह ने अलग हिन्दुओं को ही नहीं संत-समाज को भी खडन-मंडन की स्थिति में ला दिया था। चार वैष्णव संप्रदायों में आचार्यों के मतभेद थे) 'जान पड़ता है कि स्वामी रामानन्द ने चतुः सम्प्रदाय को एकत्र करके संगठित किया । और अखाड़े संगठित हुए जिनमें नागे और अतीत आदि शस्त्रास्त्र क्रिया में पारंगत होने लगे। स्वामी जी ने वैष्णवधर्म की रक्षा के लिए एक अलग परंपरा चला दी।

स्वामी रामानंद की औदार्य पद्धति-से समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। उदारता का उनके नाम के साथ अटूट नाता जुड़ गया ।

जाति-पाँति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजै सो. हरि का होई।

उनके नाम के साथ यह अर्द्धाली स्मृति में चमक उठती हैं। जिन शूद्रों के लिए आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग, समाज में सिर उठाकर रहने का अधिकार सदा के लिए बंद कर दिया था, उनके लिए उन्होंने भगवान् का द्वार खोल दिया। अपने को भी मनुष्य समझने का अधिकार प्रदान कर दिया। उन्होनें भगवान् के समक्ष किसी के ऊँच-नीच नहीं ठहराया। भक्ति के लिए उन्होंने ऊँच-नीच का भेद नहीं। यही नहीं उन्होंने उन हिन्दुओं को भी अपनाया जो बल से मुसलमान बना लिए गये थे। हिन्दू धर्म से बिछुरे हुए पूर्वजों को भी स्वामी रामानंद ने हिन्दू धर्म की गोंद में स्थान दिया था। इसी प्रकार संयोगियों को जिन्हें फैजाबाद के नवाब ने बल से मुसलमान बना लिया था, उन्होंने हिन्दू बनाया। रामानन्द के योग के प्रभाव से उनलोगों के गले में 'तुलसी की माला, जिह्वापर राम नाम और मस्तक पर त्रिशूलाकार श्वेत रक्त तिलक अपने आप प्रकट हो गया। उन्होंने यह वातावरण उपस्थित कर दिया जिसमें हिन्दू धर्म एक निष्क्रिय संस्थामात्र नहीं रह गया प्रत्युत वस्तुतः विश्वबंधुत्व की ओर सक्रिय रूप से अग्रसर होने वाली सजीव पुष्ट संस्था हो गयी।

"स्वामी रामानन्द उन लोगों में थे जो अपने प्रयत्नों को अन्याय के निष्क्रिय विरोध ही तक सीमित नहीं रखते, प्रत्युत उनके निराकरण में उन्हें सक्रिय रूप देते हैं। खान-पान के संबंध में भी उन्होंने नियमों को संभवतः बहुत शिथिल कर दिया था। उनके शिष्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरुसुरानंद के संबंध में नाभा जी ने कहा है कि उनके मुख में म्लेच्छ की रोटी भी तुलसी दल हो जाती थी।[7]

स्वामी रामानन्द की उदारता का लोकप्रचलित प्रमाण है। उन्होंने कबीर जुलाहा, रैदास चमार, सेना नाई और धना जाट को भी अपना शिष्य बनाया। कहा तो यहाँ तक जाता है कि मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक धर्म परिवर्तन करके मुसलमान हुए लोगों को भी अपने रामतारक मंत्र से पुनः हिन्दू बनाया था। भविष्य पुराण के तृतीय पर्व चतुर्थ-खंड के अध्याय 21 में लिखा है–

म्लेच्छास्ते वैष्णवाश्चासन् रामानन्द प्रभावतः ।
संयोगिश्च ते ज्ञेया अयोध्यां बभूविरे ।
कंठे च तुलसी माला जिह्वा राममयी कृता ।
भाल-त्रिशूलचिह्नं चश्वेतरक्तं तदाऽभवद् ॥

'अयोध्यापुरी में वादशाहसिकन्दर लोदी ने अपने एक यंत्र द्वारा जिन हिन्दुओं को म्लेच्छ बना दिया था। उन्हें रामानन्द के शिष्यों ने स्वामी जी के प्रभाव से वैष्णव बना लिया। उनके गले में 'तुलसी की माला, जिह्वापर रामनाम, भाल में श्वेतरक्तवर्ण का त्रिशूल चिह्न अपने आप हो गया। इस प्रकार जो मुसलमान हिन्दू हुए, वे संयोगी नामक जाति के कहलाए।"[12]

"रामानन्द की रामभक्ति विभिन्न वर्णों एवं वर्गों के पारस्परिक मिलन का केन्द्रविन्दु हो गई। जिसके फलस्वरूप लोगों में एक दूसरे को समझने की प्रवृत्ति बढ़ी और पारस्परिक सद्भावना, सहयोग एवं सहानुभूति का उदय हुआ। सुधारक राभानंद का व्यक्तित्व कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।[13]

और यह भी..

"रामानन्द में कुछ न कुछ ऐसी साधना अवश्य थी । जिसके कारण योग प्रधान भक्तिमार्ग, निर्गुण पंथी भक्तिमार्ग और सगुणोपासक भक्तिमार्ग तीनों ही के पुरस्कर्ता भक्तों ने उन्हें गुरु माना है।[14]

रामानन्द के व्यक्तित्व का एक और प्रभावकारी पक्ष यह भी है कि उनसे प्रेरणा पाकर जिन भक्तों ने अपने अनुभूत सत्य को वाणी-बद्ध किया, प्रायः उन सभी ने हिन्दी भाषा का ही उपयोग किया। फलस्वरूप मध्ययुगीन प्रगतिशील चिन्तन धारा की श्रेष्ठतम विभूति हिन्दी भाषा को मिल सकी। संत काव्य मर्मज्ञ विद्वान् डॉ. पीताम्बरदत्त बड़खाल ने 'रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ' नामक ग्रंथ में हनुमान की स्तुति, आदिग्रंथ का एक पद, रज्जव की सरवंगी के दोपद, ज्ञानतिलक, योग-चिन्तामणि और रामरंक्षा स्तोत्र आदि को रामानन्द कृत माना है। 'संकुचित अर्थ में ये साहित्यिक रचनाएँ नहीं है।" ये रचनाएँ यह तो सिद्ध करती हैं कि रामानन्द का प्रभाव योगपरक साधना पर भी था। इस प्रकार आचार्य रामानन्द ने अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौलिक और उदार चिन्ता धारा से दर्शन समाज और साहित्य तीनों को समृद्ध किया। उनकी चिन्तनधारा आज भी कई रूपों में समाज के मंगल-विधान में सक्रिय हैं।

अनन्तानन्द जी

रामानन्द स्वामी के शिष्य अनन्तानन्द जी हुए। इसके शिष्य योगानन्द, गयेश, कर्मचन्द, अल्ह जी, श्रीकृष्णदास पयहारी, श्री सारी रामदास, श्रीरंगजी हुए। इनके शिष्य नरहरिदास जी हुए। इन्होंने श्री रघुबर कृपाल जी और श्री यदुवर जी (दोनों का सुयश गान कर कीर्ति प्राप्त की।

अनन्तान्द पद परसि के लोकपाल से ते भए ॥
योगानन्द, गयेश करमचन्द अल्ह पैहारी ।
सारी रामदास श्रीरंग अवधि गुण महिमा भारी ॥
तिनके नरहरि उदित मुदित मेहा मंगलतन ।
रघुवर यदुवर गाइ विमल कीरति संच्यो धन ॥
'हरिभक्तिसिन्धु' बेला रचे पानि पद्मजा सिर दए ।
अनन्तानन्द पद परसि कै लोकपाल से ते आए ।

–भक्तमाल-छंद-37

इनमें प्रिया दास ने श्रीरंग जी की कथा लिखी है। इनका जयपुर में सरावगीमत के वनिये के घर हुआ। ये रामभक्त कैसे हुए, इसकी अद्भुत कहानी है। इनके घर का टहलुआ मर के धर्मराज के लोक में यमदूत हुआ। यह एक दिन श्री रंग के सामने आया और उसने इनको अनन्तानन्द स्वामी का शिष्य बनने को कहा। वह गृहस्वाश्रम में रहते हुए शिष्य बना। दूसरी घटना यह है कि रंगनाथ जी के पुत्र को रात एक प्रेत दिखाई देता था। उसको इन्होंने प्रेतयोनि से मुक्ति दिखाई / रामभक्ति की ऐसी ही महिमा है।

पयहारी कृष्णदास जी

पयहारी कृष्णदास ऐसे परम भक्त हुए जो अन्न को छोड़ केवल दूध पीते थे। इनका जन्म दाहिन्या ब्राह्मणों के वंश में हुआ था। कुल्हू देश के राजा को पर्वत के कन्दरे में दर्शन दिया, राज्यपर अभिषिक्त किया और शिष्यत्व प्रदान किया। इन्होंने गलता और आमेर के कनफटे वैष्णव द्रोही योगियों को अपनी सिद्धियों से मठ से निकाल दिया। भक्तमाल (छंद 39) में इनके 24 शिष्यों का उल्लेख है जिनमें स्वामी कील्ह देव जी और स्वामी अग्रदेव प्रसिद्ध हैं हिन्दी साहित्य के इतिहास में रामभक्ति के संदर्भ में विशेष चर्चा है...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अनंतानन्द के शिष्य कृष्णदास पयहारी हुए जिन्होंने गलता (अजमेर राज्य, राजपूताना) में रामानंद सम्प्रदाय की गद्दी स्थापित की। यह पहली और सबसे प्रधान गद्दी हुई। कृष्णदास पयहारी जब पहले-पहल गलता पहुँचे, तब वहाँ की गद्दी नाथपंथी योगियों के अधिकार में थी। वे रात भर टिकने के विचार से वहीं धूनी लगाकर बैठ गए। पर कनफटोनें उन्हें उठा दिया। ऐसा प्रसिद्ध है कि इसपर पैहारी जी ने भी अपनी सिद्धि दिखाई और वे धूनी की आग एक कपड़े में उठाकर दूसरी जगह पर बैठे। यह देखकर योगियों का महंत बाध बनकर उनकी ओर झपटा। इस पर पयहारी जी के मुख से निकला कि "तू कैसा गधा है।" वह महंत तुरंत गदहा हो गया और कनफटों की मुद्राएँ उनके कानों से निकल कर पयहारी जी के सामने इकट्ठी हो गईं। आमेर के राजा पृथ्वीराज के कहने पर महंत फिर आदमी बनाया गया। उसी समय राजा पयहारी जी के शिष्य हो गए। और गलता की गद्दी पर रामानंदी वैष्णवों का अधिकार हुआ।"

निर्वेद अवधि कलि कृष्णदास, अन परिहरि पय पान कियो ॥
जाके सिर कर धरयौ, तासु कर तर नहि अड्ड्यो ।
अर्प्यो पद निर्वान सोक निर्भय करि छड्ड्यो ॥
तेज पुंज बल भजन महामुनि ऊरध रेता ।
सेवत चरण सरोज राय राया भुवि जेता ।
दाहिना वंश दिनकर उदय, सन्त कमल हिय सुख दियो ।
निर्वेद अवधि कलि कृष्णदास, अनपरिहरि पय पान कियो ।

-भक्तमाल -छंद 38

कील्हदेव जी

श्रीपयहारी कृष्णदास के शिष्य कील्हदेव जी थे। रामभक्ति के अनन्य अनुरागी होने के साथ इन्होंने सांख्य और योग मत को सुदृढ़ किया। प्रियादास के अनुसार इनके पिता सुमेरदेवजी गुजरात में सूबेदार थे। उनकी मृत्यु के समय कील्हदेवजी राजा मानसिंह के पास बैठे थे। अपने पिताजी के विभान पर आकाश में जाते देख उठकर इन्होंने प्रणाम किया और बोले, "बहुत अच्छा हुआ, भले पधारिये।" राजा मानसिंह के बहुत आग्रह पर इन्होंने उनके राम धाम पधारने की सब वार्ता कह सुनाई। राजा ने साड़िनी पर मनुष्यों को भेजकर इसकी सत्यता की परीक्षा की। मानसिंह ने अपने को ऐसे त्रिकालज्ञ महात्मा की संगति और सेवा से अपना जीवन धन्य माना ।

कील्हदेव के जीवन की एक लोकोत्तर घटना का भी उल्लेख इस प्रकार किया गया है। इनकी पूजा की पिटारी में साँप बैठा था, पूजा के लिए पिटारी में हाथ डालने पर उस साँप ने काट लिया, फिर हाथ उसके मुँह के समीप ले जाके इन्होंने कहा, "फिर काटले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेरा विष क्या मुझे चढ़ थोड़े ही सकता है क्योंकि मेरे तन में श्री सीतारामध्यानामृत व्याप्त है। इस प्रकार केवल एक क्या आनन्दपूर्वक तीन बेर कटवाया, पर उस काले सर्प का विष का प्रभाव इनके ऊपर कुछ नहीं पड़ा क्योंकि ये सदा श्री रामरसामृत को पान कर मग्न रहते थे।

जीवन के अन्तिम समय में ये सन्तमण्डली के समक्ष प्राण त्यागकर श्री रामधाम में प्रविष्ट हुए। 'भक्तमाल' में इनकी तुलना गंगाजी के पुत्र भीष्म से की है–

गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं, त्यों कील्ह करन नहि कालवश।
राम चरन चिंतवनि, रहसि निशिदिन लौ लागी।
सर्वभूत शिर निमित, सुर, भजनानँद भागी॥
सांख्य योगमत सुदृढ़ कियो अनुभव हस्तामल।
ब्रह्म रंध्र करिगौन भये हरि तन करनी बल॥
सुमेर-देव-सुत जगविदित, भू विस्तारयो विमल यश।
गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं, त्यों कील्ह करन नहिं कालवश।

–भक्तमाल-छंद-40

कील्हदेव के शिष्य गण (राजर्षि आसकरन जी आदि 11शिष्य (छंद 158)।

स्वामी अग्रदेव जी

(श्री) अग्रदास हरिभजन बिन काल बृथा नहि बित्तयो॥
सदाचारज्यों सन्त प्राप्त जैसे करि आये।
सेवा सुमिरण सावधान, चरण-राघव चित लाये॥
प्रसिध बाग सों प्रीति सुहथ कृत करत निरंतर।
रसना निर्मल नाम मनहुँ वर्षत धाराधर॥
कृष्णकृपा करिदत्त मन वच क्रम करि अटल दयो।
(श्री अग्रदास हरिभजन विन, काल वृथा नहिं वित्तयो॥

–भक्तमाल छंद-41

अग्रदास जी का आविर्भाव राजस्थान के किसी गाँव में 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। बाल्यावस्था में ही ये श्रीकृष्णदास जी पयहारी के शरणागत हुए और उनके सान्निध्य में साधनपूर्ण जीवन व्यतीत करते रहे। पयहारी जी के साकेत वासके अनन्तर जयपुर के पास रैवासा नामक स्थान में इन्होंने अपनी गद्दी स्थापित की। इनके शिष्य प्रशिष्य बड़ी-द्वारागादिकों के प्रवर्तक हुए जिनमें नाभादास, देवमुरारि, पूर्ण-वैराठी, दिवाकर और भगवन्नारायण प्रमुख आचार्य माने जाते हैं धीरे-धीरे इनकी परंपरा का इतना विस्तार हुआ कि वैष्णवों के 52 द्वारों में 11 द्वारे इन्हीं महाराज के स्थापित हो सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामभक्तिसाहित्य में इनके व्यत्तित्व की अलौकिकता अनेक प्रकार से प्रतिपादित की जाने लगी। युगलप्रियाजी ने इन्हें सीता की प्रिय सखी चन्द्रकला का अवतार बताया।[17] रसिक संप्रदाय में 'अग्रअली' के नाम से विख्यात हुए। अग्रदास इनका शरणागति सूचक नाम था और अग्रअली महली परिकर स्वरूप की संज्ञा थी।

अग्रदास जी को वाटिका से बड़ा प्रेम था। प्रियतम की विहारस्थली समझ कर उसका सारा कृत्य ये स्वयं अपने हाथों से करते थे। नामादासजी ने इन्हें वाग-बगीचों का प्रेमी कहा है। प्रिया दास जी ने अपनी टीका में महाराज मानसिंह से इनकी भेंट वाटिका में ही होने का वर्णन किया है ।

अग्रदास जी की हिन्दी में दो रचनाएँ मिलती है–1. अष्टयाम 2. ध्यान मंजरी अष्टयाम में भगवान राम के सखा-सखी, राम का ध्यान, सीता ध्यान, पार्षदों के ध्यान का वर्णन है। अष्टयाम में आठों प्रहर की सेवा का वर्णन है। रचना-शैली से एक उदाहरण–

सहज चलौंगी आपनी, अनखि मरैंगे लोग ।
अनखि मरैंगे लोग, वेदुकुलकानि न करिहौ ॥
भलो-बुरो सिरधारि, अनन मारग अनुसरिहौ ।
देव पितर विधि अवधिं, लोक परलोक न सूसो ॥
सरबसु सीता राम काज रूसो कोउ तूसो ॥
अग्र सुमति पयहरि बसैं, करिहौं दृढ़संयोग ।
सहज चलोगी आपनी अनखि मरैंगे लोग ॥

आद्य शंकराचार्य जी

केरल प्रदेश के कालटी नामक ग्राम में आद्य शंकराचार्य का जन्म हुआ। इनमें एक लोकोत्तर प्रतिभा थी कि आठ वर्ष की अवस्था में ही सभी-शास्त्रों का अध्ययन कर लिया। श्री गोविंदाचार्य जी से संन्यास ग्रहण कर भगवत्पाद के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने चार बार सारे देश का भ्रमण किया और सत्य सनातन धर्म के विरोधियों को पराजित कर अद्वैतवाद की प्रतिष्ठा की। इनके दस उपनिषदों, गीता और ब्रह्मसूत्र के भाष्य अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

'एकता के देवदूत-शंकराचार्य' नामक विशाल ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. दशरथ ओझा ने तत्कालीन परिस्थिति का उल्लेख इस प्रकार किया है–"शंकर के बाल्यकाल में जनता का घोर दारिद्र्य, जाति-वर्ण का विकट कलह, संघर्षशील राज्यों का देश विनाशक वैमनस्य, मादक द्रव्यों का उत्पात, धर्म के नाम पर स्थान-स्थान पर युद्ध, विदेशियों का नित्यप्रति बढ़ता हुआ प्रभाव, मानवमूल्यों का पूर्णतया विघटन, धर्मपरिवर्तन के नये प्रश्न पिशाच की भाँति मुख फैलाये समूचा भारत निगलने को तैयार बैठे थे। इस एकाकी सन्यासी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने किस प्रकार सारे देश में ऐसा नव जागरण उत्पन्न किया कि समूचा भारत लगभग चार सौ वर्षोंतक अपनी स्वतंत्रता और संस्कृति को बचाते हुए विदेशी आक्रमणों से देश को सुरक्षित रख सका।"[19]

भक्तमाल में आचार्य शंकर के समग्र व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का उल्लेख इस प्रकार है–

कलियुग धर्मपालक प्रकट; आचारज शङ्करसुभट ॥
उतशृङ्खल अज्ञान जिते अनीश्वरवादी ।
बुद्ध कुतर्की जैन पाखण्डहिं आदी ॥
विमुखनि को दियो दण्ड ऐंचि सन्मारग आने ।
सदाचार की सींव विश्व कीरतिहि बखाने ॥
ईश्वरांश अवतार महि मरजादा मॉडी अघट ।
कलियुग धर्मपालक प्रकट आचारज शङ्कर सुभट ॥

–भक्तमाल-छंद-42

प्रियादास जी ने टीका में आचार्य शंकर के अवदान का इस प्रकार वर्णन किया है–

छंद 124

शंकराचार्यजी ने भगवत् विमुख (सेबड़ा, अबुध अज्ञानी, बौद्ध, नास्तिक, अनीश्वरवादी (चार्वाक, जैन इत्यादि) समूहों को वाद में परास्त करके, दंड देकर श्री मन्नायण श्याम सुन्दरजी के सम्मुख कर दिया उस समय सेवरा आदि प्रबल नास्तिक समूह इस प्रकार लोक में फैले थे जैसे वाटिका में फूले केवड़े की बास फैल जाती है। ये लोग बड़े विवादी थे कि वेदवाक्य के ग्रहण में किसी प्रकार आ नहीं सकते थे।

(2)

एक बार शास्त्रार्थ में (मंडनमिश्र) से) पराजित भी होने की नौबत आयी। उनसे शृंगारपरक प्रश्न किए गए उन्होंने शृंगार विषयक ज्ञान के लिए एक राजा (अमरुक) के मृतक शरीर में परकाय प्रवेश सिद्धि के बल से प्रवेश किया उनके शरीर की रक्षा शिष्य करते रहे। उन्होंने पहले ही अपने शिष्यों को स्वनिर्मित 'मोहमुग्दर' नामक ग्रंथ सुनाने को कह दिया था। "कदाचित् विषयासक्त होके नृपदेह विषे मेरा ममत्व आवेश देखो तो आके यही ग्रंथ मुझे सुनाना, सुनते ही मैं नृपशरीर से न्यारा होके (तजके) निज देह में चला आऊँगा।" शिष्यों ने वैसा ही किया, वे अपने पूर्व शरीर में आ गए।

सेवड़ों को बाद में हराने के बाद उनके एक और षड्यन्त्र को इन्होंने समाप्त किया। उस देश का राजा इनका शिष्य हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल में ऐसा उल्लेख है कि शंकराचार्य ने पहले भगवद् भक्ति और भागवत धर्म का प्रचार किया परन्तु पीछे कालानुवर्ती प्रभु की प्रेरणा से अपने मत में कुछ मायावाद डाल दिया कि निर्विशेष अद्वितीय ब्रह्म ही सत्य है और सब माया है। शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद में ज्ञान की प्रधानता है । भक्ति का स्थान गौण है।

आचार्य शंकर के व्यक्तित्व की विलक्षणता यह है कि उन्होंने देवताओं की स्तुतियाँ लिखीं, देवताओं के मंदिर बनवाए । स्मार्त आपको अपना आचार्य और अद्वैतवादी अपना मानते हैं। निर्गुण मतावलम्बी अपना, तथा शैव और शाक्त भी अपना अपना आचार्य आप को मानते हैं।

आचार्य शंकर ने भारतीय दर्शन के मूल सिद्धान्त के संबंध में कहा है–"ब्रह्म ही एकमात्र चिरन्तन सत्य है। वही निर्विकार, निर्लिप्त, परमचैतन्य और आनन्द रूप है यह जगत् उसी की माया के रूप में व्यक्त हो रहा है। ब्रह्म निर्गुण-निराकार है। वही इस विराट विश्व में माया के कारण साकार बन जाता है। वास्तव में वही निराकार है, वही साकार है। जिस प्रकार सूर्य की ज्योति से चमचमाती रेत रजत कण के समान चमक उठती है, उसी प्रकार यह संपूर्ण जगत् उसी की ज्योति से आकर्षक प्रतीत हो रहा है। यही माया, जन्म और मृत्यु का कारण बनती है। ब्रह्म मायातीत है। जीव जन्म और मृत्यु से तभी छूट पाता है, जब माया, ब्रह्म जीवात्मा के पारस्परिक सम्बन्ध समझ लेता है। यही उपनिषद् का निष्कर्ष है, यही वेदों का सार है।"[20-21]

भक्तमाल में शंकराचार्य जी को रामानुजाचार्य आदि के बाद उल्लेख है। वस्तुतः ये सभी वैष्णवाचार्यों के पूर्ववर्ती हैं।

नाभादास-जीवन-वृत्त एवं रचनाएँ

हिन्दी की रामभक्तिशाखा के अन्तर्गत गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन नाभादास जी स्वामी अग्रदास जी के शिष्य थे। इनका वास्तविक नाम 'नारायणदास' था। प्रियादास का मत है कि ये जन्मान्ध थे। छोटी अवस्था में ही पिता का देहावसान हो गया। जब ये पाँच वर्ष के हुए उस देश में भीषण अकाल पड़ा। माता इन्हें लेकर उत्तर भारत चली आई। किसी प्रकार जयपुर पहुँचीं। प्राण संकट देखकर वे बालक को जयपुर के निकटस्थ किसी जंगल में छोड़कर चली गई । दैवयोग से उसी समय उस मार्ग से होकर महात्मा कील्हदास और अग्रदास निकले। अनाथ बालक को निर्जन स्थान में पड़ा देख दया आई। कील्हदास ने अपने कमण्डल से जल लेकर उनकी आँखों पर छीटा मारा। उनकी सिद्धि के बल से नाभादास की आँखें खुल गईं। अनाथ बालक को लेकर वे गलता गये और वहीं उनका पालन-पोषण अग्रदास जी ने किया।[22]

नाभादास की जाति के विषय में मतभेद है। संत परंपरा में उनका आविर्भाव डोमवंश में 'माना जाता है। किन्तु डोम कौन सी जाति थी, यह निश्चय करना कठिन है। भक्तमाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के टीकाकार रूपकला जी के अनुसार पश्चिमी मारवाड़ में डोम, कलावतं, ढ़ाढ़ी, भाट, कथिक आदि संगीतजीवी एक ही वर्ग के हैं।[23] प्रियादास इन्हें लांगूली' अथवा हनुमान वंशी मानते हैं।[24]

जब ये बड़े हुए तो अग्रदास जी ने अपने बड़े गुरुभाई कील्हदास जी से आज्ञा लेकर इनको मंत्र-दीक्षा दी। इनका 'नारायणदास' नाम तभी रखा गया।[25] अग्रदासजी जब गलता छोड़कर रैवासा आने लगे तो नाभादास भी उनके साथ चले आये और अपना सारा जीवन गुरु सेवा में बिताया। अग्रदासजी की ही कृपा से इन्हें रसिक साधना की प्रक्रिया का बोध हुआ और उन्हीं की आज्ञा से वे भक्तमाल की रचना मे प्रवृत्त हुए। गुरु की लोकयात्रा के पश्चात् ये रैवासा गद्दी के आचार्य बनाये गये।

नाभादास जी तुलसीदास जी के समकालीन थे। इनका भक्तमाल संवत् 1642 (1585 ई.) में लिखा गया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन्हें संवत् 1657 (1600 ई.) के आसपास वर्त्तमान माना है और गोस्वामी तुलसीदास जी की मृत्यु के बहुत पीछे तक जीवित रहे।[26] इनकी मृत्यु का अनुमान करते हुए डॉ. श्यामसुंदर दास ने कहा है कि नाभादास की मृत्यु लगभग 1680 संवत् के हुई थी। मिश्रबन्धुओं ने इनकी मृत्यु तिथि संवत् 1700 के लगभग निर्धारित की है।[27]

नाभादास जी की रचनाएँ

नाभादास जी की तीन रचनाएँ उपलब्ध हैं–भक्तमाल और दो अष्टयाम (ब्रजभाषा पद्य तथा ब्रजभाषा गद्य में) इनमें 'भक्तमाल' ही अधिक प्रसिद्ध है जिसका प्रकाशन संवत् 1909 (सन् 1852) में रूपकला जी ने भक्तिसुधा बिन्दु स्वाद तिलक नाम से किया। इसके महत्त्व का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि भारतीय भाषाओं के मर्मज्ञ जार्ज ग्रियर्सन ने इसे अपना प्रधान संदर्भ ग्रन्थ कहा है।[28]

इसके अतिरिक्त इन्होंने दो अष्टयाम' भी बनाए । एक ब्रजभाषा गद्य में और दूसरा राम चरित मानस की शैली पर, दोहान-चौपाइयों में। 'रामाष्टयाम' का प्रकाशन (संपादक एवं टीका कार-श्री स्वामी राजकिशोरी वरशरणजी-जानकी घाट, अयोध्या) सन् 1935 ई. में हुआ है। आचार्य शुक्ल ने दोनों के ये उदाहरण दिए हैं–

(गद्य) तब श्री महाराजा कुमार प्रथम श्री बसिष्ठ महाराज के चरन छुए प्रनाम करत भए। फिर अपर वृद्ध समाज तिनको प्रनाम करत भए। फिरि श्री राजाधिराज जू को जोहार करिकै श्री महेन्द्रनाथ दशरथ जू के निकट बैठत भए ।

पद्य–

अवधपुरी की सोभा जैसी ।
कहि नहि सकहिं शेष श्रुति तैसी ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रचित कोट कलधौत सुहावन ।
विविध रंग मति अति मन भावन ।।
चहुँदिसि विपिन प्रमोद अनूपा ।
चतुरबीस जोजन रस रूपा ।।
सुदिसि नगर सरजू सरि पावनि ।
मनिमय तीरथ परम सुहावनि ।।
बिगसे जलज, भृंग रस भूले ।
गुंजत जल समूह दोउ कूले ।।
परिखा प्रति चहुँदिसि लसति कंचन कोट प्रकास ।
विविध भाति नग जगमगत, प्रति गोपुर पुर पास ।।

इस प्रकार 'रामाष्टयाम' में 'द्वादशबन वर्णन', महल की सोभा, अंतःपुर का वर्णन, अंतः पुर में सखियों की सेवा, भोजन के समय, नृत्य-संगीत और शयन आदि 'अष्टयाम विषयक ललित वर्णन हैं। साहित्यिक सौन्दर्य से मंडित 'रामाष्टयाम' रसिको का कंठहार है।

आचार्य रामानन्द के प्रमुख शिष्यों की भक्ति-साधना

भक्त माल के अनुसार अनन्तानन्द, कबीर, सुखानन्द, सुरसुरानन्द पद्मावती, नरहर्यानन्द, पीपा, भावानन्द, रैदास, धना, सेन, सुरसरी आदि द्वादश शिष्य रामनन्द जी के प्रमुख शिष्यों में हैं।[30] नाभादास जी ने इन शिष्यों के सम्बन्ध में जिस क्रम से छंद (59-69) में विवरण दिया है, उसका उल्लेख किया जा रहा है। इनमें अनन्तानन्द जी का वर्णन (छंद 39) पहले आ चुका है।

श्री रैदास जी (छंद 59)

संदेह ग्रंथि मंडन निपुन बानि बिमल रैदास की ।
सदाचार श्रुति शास्त्र बचन अविरुद्ध उचारयो ।
नीर खीर विवरन परम हंसनि उर धारयो ।।
भगवत कृपा प्रसाद परम गति इहि तन पाई ।
राजसिंहासन बैठि ग्याति परतीति दिखाई ।।
बरनाश्रम अभिमान तजि पद रज बंदहि जासु की ।
संदेह ग्रंथि खंडन निपुन पानि विमल रैदास की ।। छंद 59

संताशिरोमणि रविदास जी की वाणी संदेह की ग्रंथियों को खोलने में पूर्ण समर्थ हैं। इन्होंने जो भी कुछ कहा है, वह सदाचार वेद-शास्त्रों के अनुकूल ही है। इन्होंने नीर-क्षीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात् सत् और असत् का विवरण करने वाला परमहंसों का भाव अपने हृदय में धारण किया तथा सार-असार का निर्णय करने वाली उनकी वाणी को परमहंसों ने धारण किया। आपने इसी मर्त्य शरीर से भगवान की कृपा और परमश्रेष्ठ गति प्राप्त की। राजसिंहासन पर बैठकर अपने शरीर में सोने का यज्ञोपवीत दिखाकर अपने पूर्वजन्म की जाति का विश्वास लोगों को दिलाया । महान् पुरुषों ने अपने ऊँचे वर्ण एवं आश्रम के अभिमान को छोड़कर जिनकी चरण-धूलि की वन्दना की, उन रैदासजी की वाणी शंकाओं को खंडन करने में अति ही चतुर है।

नाभादास जी ने तो रैदास के सदाचार-सिद्धान्त, विवेक-पूर्ण जीवन-सिद्धान्त (परमहंस मत) की चर्चा की इस पर प्रियादास जी ने जो 9 छंदों में टीका लिखी, उससे श्री रैदास के जन्म की कथा, रैदास का सन्तप्रेम और भगवान् से वार्तालाप और चित्तौरगढ़की रानी द्वारा इनके शिष्य बनने का वृत्तान्त स्पष्ट होता है।

रैदास जी के जन्म की कथा

आचार्य श्री स्वामी रामानन्द जी का एक ब्रह्मचारी शिष्य नित्यआटे की चुटकी ब्राह्मणों के यहाँ से माँग करलाता था। उससे ठाकुरजी का भोग लगाता था और साधु सेवा होती थी। मार्ग में एक बनिये की दूकान थी, वह बनिया वह नित्य ही ब्रह्मचारी जी से कहता था कि आप मेरा सीधा-समान स्वीकार कीजिए। एक दिन जोर की वर्षा के कारण ब्रह्मचारी ने उस बनिये से सीधा-सामान ले लिया। जब आचार्य जी ने ठाकुरजी को भोग लगाया तो उस दिन प्रभु भोग आरोगते हुए ध्यान में नहीं आए। उन्होंने ब्रह्मचारी से पूछा, 'आज भिक्षा कहाँ से लाए हो? उसने उत्तर दिया, एक बनिये से। पता लगाने पर मालूम हुआ कि बनिये ने किसी नीच वर्ण की प्रेरणा से अन्न दिया है। तब स्वामी जी ने बड़ा भारी शाप दिया कि तूने मेरी बात नहीं मानी, नीच की भिक्षा ली, अतः जाकर उसी घर में जन्म लो । वही दूसरे जन्म में रैदास भक्त हुए।

बालक रैदास माता का दूध नहीं पीते थे। उन्हें पूर्व जन्म की सब बातें याद थीं। स्वामी जी को आकाश वाणी हुई, आप केशाप से आप के शिष्य का जन्म रघु चमार के घर हुआ है, वह दूध नहीं पी रहा है, उस पर कृपा कीजिए। स्वामी जी वहाँ गए। माता-पिता की प्रार्थना पर स्वामी जीने दीक्षा देकर शिष्य बनाया और दूध पीने की आज्ञा दी। और रैदास जी स्वामी जी के शिष्य हो गए।

(2) रैदास जी का सन्तप्रेम और भगवान् से वार्तालाप-

सन्त सेवी रैदास को पिता ने अलग कर दिया। रैदास जी जूता बना कर सन्त सेवा करते थे। एक दिन स्वयं भगवान् आए, उन्होंने पारसमणि दी। रैदास ने उसे छप्पर में रख दिया। रैदास जी ने उसे छूआ तक नहीं। भगवान् ने दूसरी लीला की। प्रातःकाल रविदासजी ठाकुर जीकी सेवा करते, उन्हें पाँच मुहरें मिलती, उन्हें वे गंगा में डाल देते। भगवान ने पुनः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्हें हठ छोड़ने का आदेश दिया। उससे रैदास ने भव्य मंदिर बनवाया और उसमें दिन-रात सेवा और भजन-कीर्तन होने लगा। मानो भक्ति देवी वहाँ आ गई ।

(3) चित्तौड़ की रानी का शिष्य बनना

चित्तौड़ की झाली रानी काशी में आकर रैदास जी की शिष्या हो गयीं। उनके साथ आए ब्राह्मणों ने विरोध किया। राजा के पास जाने पर उन्होंने एक आयोजन किया, राजा ने रैदास जी को बुलवाया और भगवान की मूर्ति को सिंहासन पर विराजमान करा कर कहा– 'बुलाने से भगवान् जिसके पास चले आ जायँगे, वही उनकी सेवा का तथा उनके मंत्र को देने का अधिकारी समझा जायेगा।'' ब्राह्मणों ने सस्वर वेद-पाठ करके भगवान का आवाहन किया, किन्तु भगवान् उनके पास नहीं गये। रैदास जी 'पतित पावन नाम आज प्रकट कीजै' यह पद गाया । तब भगवान् श्री रैदास जी की गोदी में आकर विराजमान हो गए। झाली रानीके बुलाने पर रैदास जी चित्तौड़ गए, रानी ने बड़ा स्वागत किया। विशाल भण्डारा हुआ, बहुत से ब्राह्मण भी पधारे। उन्होंने भण्डारे से भोजन करना स्वीकार नहीं किया, इसलिये उन्हें सीधा-सामान दिया गया। ब्राह्मणों ने रसोई की और जब भोजन करने के लिए बैठे तो उन्हें पंक्ति में दो-दो ब्राह्मणों के बीच में एक रैदास बैठे दिखाई पड़े। यह चमत्कार देखकर उनकी आँखें खुल गईं। लाखों ब्राह्मण उनके शिष्य हो गये। श्री रैदास जी ने अपने शरीर की त्वचा को चीरकर सबको दिखाया। इससे सबको विश्वास हो गया कि 'ये दिव्य पुरुष हैं। ये पूर्वजन्म में ब्राह्मण थे।

''राजा सिंहासन बैठिग्याति परतीति दिखाई ।।''

भक्तमाला-59

हिन्दी साहित्येतिहास और संत रविदास

हिन्दी साहित्य के इतिहास में निर्गुण संप्रदाय के अंतर्गत रैदास और उनके अवदान का उल्लेख है। इनके जीवन के संदर्भ में अनेक अलौकिक कथाएँ कही जाती हैं, पर वे सब मान्य नहीं। रैदास ने अपनी जाति के बारे में बार-बार लिखा है–

ऐसी मेरी जाति विख्यात चमारं ।
हृदयराम गोविन्द गुन सारं ।।

ये आचार्य रामानन्द के शिष्य और कबीर के समकालीन थे। अतः इनका आविर्भाव काल कबीर के समय में ही मानना चाहिए। जो संवत् 1445 से संवत् 1575 के बीच है। आदि ग्रंथ के अनुसार ये काशी के निवासी थें। और चमारी का व्यवसाय करते थे। 'जाके के कुटुबं के ढेड़ सब ढोर डोवंत फिरहि बनारस आसपास।

आचार सहित विप्रकरहिं डंडउति तिनि तनै रविदास दासानुदासा ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल के अनुसार ये बड़े सिद्ध सन्त थे। संसार आकर्षण से परे थे। एक वीतराग महात्मा थे। इसी गुण के कारण चित्तौड़ की रानी इनकी शिष्या हो गयी थी।

रैदास की रचनाओं को लेकर भी विद्वानों में मतभेद है। आदिवाणी में उपलब्ध रैदास की वाणी, रैदास की वाणी, बेल वेडियर प्रेस और संतगुरु रविदास वाणी (डॉ. वेणीप्रसाद शर्मा) डॉ. शर्मा द्वारा संपादित रविदास वाणी में 177 पद तथा 49 साखियाँ हैं। डॉ शिवकुमार शाण्डिल्य ने महामानव रैदास 'में 126 पद और 8 साखियाँ दी हैं। प्रो. युगेश्वर 'रैदास समग्र' और डॉ0 शुकदेव सिंह की 'रैदास वानीं' नाम की पुस्तकें द्रष्टव्य हैं।[32]

रैदास की भक्ति साधना में सात्विकता की सुवास परिव्याप्त है। उनकी वाणी में गुरु महिमा और सत्संग-महिमा का स्वर प्रबल है। के मूलतः अपने आचरण मे संत और साधना में भक्त थे। उनकी भक्ति सरल और सहज है, उसमें न योग की जटिलता है और भक्ति का शास्त्रीय विधान। उसमें शास्त्रीयता की अपेक्षा अनुभूति की तीव्रता अधिक है। रैदास वे भक्ति के निर्गुण रूप को ही अपनाया है लेकिन उसकी अभिव्यक्ति सगुण भक्ति की तन्मयता एवं माधुरी को लिए हुए है। शास्त्रों में इसे ही प्रेमाभक्ति का नाम दिया गया है। एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा–?

सुख की सार सुहागिन जानै, तजि अभिमान रंगरलिया माने ।
तन मन देह न अंतर राखै, राम रसायन रसना चाखै ॥

रैदास की भक्ति रसात्मकता से ओतप्रोत तब दिखाई पड़ती है, जब ये प्रभु के साथ संबंध स्थापित कर लेते हैं–

गोस्वामी तुलसीदास की विनयपत्रिका का मर्म भी इस संबंध– स्थापन में ही है - ब्रह्म तू, हौं जीव, तू है ठाकुर, हौंचेरो'

अब कैसे छूटै नाम रट लागी ।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग-अंग बास समानी ॥
प्रभुजी तुम घन वन हम मोरा, जैसे चितवत चन्द चकोरा ।
प्रभुजी तुम दीपक हमबाती । जाकी जोति बरै दिन राती ॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसँ सोनें मिलत सुहागा ।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भगति करैं रैदासा ॥

श्री कबीरदास जी

(सन् 1400-1520)

कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट दरसनी ॥
भक्ति विमुख जो धर्म सो अधरम करि गायो ॥
जोग जग्य व्रत दान, भजन बिनु तुच्छ दिखायो ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दू तुरक प्रमान 'रमैनी, शबदी साखी' ॥
पक्षपात नहिं वचन, सबही के हित की भाखी ॥
आरूढ़ दसा ह्वै जगत पर, मुख देखी नाहिन भनी ।
कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट दरसनी ॥

—भक्तमाल ।।60।।

श्रीकबीरदास जी ने भक्ति हीन वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास) षट् दर्शन-सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त, वैशेषिक और न्याय) की आनि-कानि नहीं रखी अर्थात् मान्यता नहीं दी। ये भक्ति के विरुद्ध धर्म को अधर्म ही कहते थे। उन्होंने बिना भजन (भक्ति) के योग, यज्ञ, ब्रत और दान आदि को व्यर्थ सिद्ध किया। उन्होंने अपने बीजक-रमैनी, शबदी और साखी में किसी मत विशेष का पक्षपात न करके सभी के कल्याण के लिये उपदेश दिया। हिन्दू-मुसलमान सभी के लिए उनके वाक्य प्रमाण हैं। वे ज्ञान एवं पराभक्ति की आनन्दमयी अवस्था में सर्वदा स्थित रहते थे। उन्होंने किसी के प्रभाव में आकर मुँहदेखी बात नहीं कही। वे जगत् के प्रपंचों से सर्वथा दूर रहे।"

नाभादास जी ने भक्तमाल की पद्धति के अनुकूल कबीरदास के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें भक्तिविरोधी धर्मों का आलोचक, भक्ति के तथाकथित वहिरंग साधनों (यज्ञादि) का सूक्ष्म द्रष्टा और सामाजिक एकता के समर्थक के रूप में अंकित किया। प्रियादास जी ने इनके आचार्य रामानन्द के शिष्य बनने, उनकी दिनचर्या, जीवन के चमत्कार और सिकन्दर लोदी-प्रसंग और भगवदर्शन को अपनी टीका में विषय बनाया।

एक बार आकाशवाणी हुई कि अपने शरीर में तिलक लगाओ, आचार्य रामानन्द को अपना गुरु बनाओ, गले में तुलसी माला धारण करो।" यह सुनकर कबीरदास ने कहा कि मैं उनसे मन्त्र-दीक्षा कैसे लूँगा, वे मुझे म्लेच्छ मानकर मुख भी नहीं देखना चाहेंगे। पुन; आकाशवाणी हुई, 'वे गंगा स्नान करने जाते हैं, उस समय मार्ग में अपने को उनके चरणों में डाल देना। स्वामी जी नित्य प्रात;काल ब्राह्म मुहूर्त में गंगा-स्नान करने जाते थे। कबीरदास जी गंगाघाट की सीढ़ी पर लेट गए। यथा समय स्वामीजी गंगा-स्नान को निकले, उनके चरण कबीरदास जी के सिर पर पड़े उनके मुख से निकला-राम! राम! कहो। कबीरदास जी ने राम नाम को मन्त्र-दीक्षा के रूप में ग्रहण कर लिया। इस प्रकार आप स्वामीजी के शिष्य बनकर घर चले गए। शिष्यों से रामानन्द जी को खबर मिली कबीरदास बुलाए गए। स्वामीजी ने पूछा, हमने तुमको कब शिष्य बनाया। कबीरदासजी ने गंगा घाट की घटना को स्मरण दिलाया । स्वामी जी ने कबीरदास को गले लगाया और रामनाम को ही हृदय में धारण करने का आदेश दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबीरदासजी जीवन निर्वाह के लिए तानें-बाने से कपड़ा बुनते थे-सतत् रामनाम का जप । एक साधु के कहने पर पूरा थान ही दे दिया। घरका खर्च कैसे चले। वह साधु ही केशव बनजारे का रूप धारण कर आया और सब सामान कबीरदास जी के घर में रख दिया। यह सामान सुविधा के लिए है–

आराम से निर्वाह करो। वह धन भी कबीरदास जी ने भक्तों में बाँट दिया। ऐसी अनेक चमत्कापूर्ण घटनाओं का भक्तमाल में उल्लेख है।

एक और घटना भारत के तत्कालीन बादशाह सिकन्दर लोदी को लेकर है। कबीरदास जी की बढ़ती हुई महिमा को देखकर ब्राह्मणों के हृदय में ईर्ष्या हुई। भक्तिविमुख ब्राह्मणों ने लोदी के दरबार में जाकर शिकायत की कि मुसलमान होकर हिन्दू बाबा जी बन गया है। किसी धर्म को न मानकर ढोंग फैलाता है। बादशाह ने तुरंत आज्ञादी कि उसे अभी पकड़ कर मेरे पास लायें। मैं उसे देखूँगा कि वह कैसा मक्कार है। सिपाहियों ने कबीरदास को बादशाह के सामने खड़ा कर दिया किसी काजी ने कहा, ये बादशाह सलामत हैं, इन्हें सलाम करो। इन्होंने उत्तर दिया कि हम श्रीराम के अतिरिक्त किसी दूसरे को सलाम करना जानते ही नहीं। बादशाह ने कबीर को लकड़ियों में उन्हें दबाकर आग लगावा दी-हाथी भी इनसे डरकर भाग गया। अंत में कबीरदासजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर वह उनका शरणापन्न हुआ।

भगवान् चतुर्भुज रूप से आए, उनके दर्शन पर इनके नेत्र सफल हो गए। अन्त में कबीर दास जी मगहर गए, भक्ति का प्रचार किया। अन्त-समय में आपने बहुत पुष्प मँगाये, उन्हें बिछाकर लेट गए और भगवान् से जा मिले ।

मगहर में जाय भक्तिभाव को दिखाय,
बहु फूलन मँगाय पौढ़ि मिल्यौ हरिरागी) है ॥281॥

कबीर और साहित्येतिहास

मध्ययुगीन हिन्दी निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक सन्त कवि कबीर आचार्य रामानन्द के शिष्य थे पर अवश्य वे स्वाधीन चिन्तक थे। इनकी विचारधारा पर विचार करते समय दो विरोधी पक्ष सामने आते हैं। एक पक्ष तो उनके प्रखर तेजस्वी, अन्धविश्वास विरोधी, रूढ़ि भंजक और समाज सुधारक का है, दूसरा पक्ष विनीत सन्त, भक्त, ज्ञानी, मनीषी परोपकारी और मानवतावादी का है। इन दोनों रूपों में कबीर ने पूरी तरह से सामञ्जस्य कर दिखाया था। इनके गुरु भाइयों में पीपा और रैदास, धना और सेन का कबीर के संबंध में क्या कथन है,

पीपा (कबीर की महिमा)

जो कलि माँझ कबीर न होते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो लोक बेद अरु कलजुग मिलिकर भगति रसातल देते ॥
हमसे पतित कहा कहि रहते, कौन प्रतीति मन धरते ।
नाना वाणीं देषि सुणी श्रवणां, बहुभारग असासरते ।
हरि हरि भगत भगति कणलीना त्रिविधि रहनि थिति मोहे ।
पाखंड सुष भेषबह कंकर, ग्यान सूप करि सोहे ॥
त्रिगुण रहित भगति भगवतंहि बिरला कोउपावै ।
दया होइ जौं क्रिया नाथ की, तौ नाम कबीरहि गावै ।
अषणी भगति आप हरि काजै, भगति मेष धरि आया ।
राम सु नाभा रैदास कबीरा, तहाँ पीपै कछु पाया ॥[34]

राजवंश की विभूति और गॉगरौन गढ़ के राजा पीपा ने कबीरदास की प्रशस्ति में जो कहा है–यदिकलियुग में कबीर न होते तो लोक-वेद मिलकर भक्ति को रसातल में भेज देते।

रैदास ने भी कबीर का स्मरण इस रूप में किया है कि निर्गुण के गायक कबीर थे, उनको भी रामनाम के स्मरण से देह मुक्ति मिली–

नामदेव किछ जाति को ओछ ।
जाकौं जस गावैं तीनहु लोक ।
भगति हेत भक्तौ कौ मिलै ।
अंकमाल हौ बीठल मिलै ॥
निरगुन को गुन देखी आई ।
देही सहित कबीर सिधाई ॥[97]

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि कबीर की वाणी का सर्वोपरि लक्ष्य है भक्ति । इसीलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'कबीर' नामक पुस्तक में अनेक साधनाओं में कबीर के अवदान को स्वीकार करते हुए भी उपसंहार में इस प्रकार लिखा है–

'वे मूलतः भक्त थे। भगवान् पर उनका अखण्ड विश्वास था। वे कभी सुधार करने के फेर में नहीं पड़े । शायद वे अनुभव कर चुके थे कि जो स्वयं सुधरना नहीं चाहता, उसे जबर्दस्ती सुधारने का व्रत व्यर्थ का प्रयास है।

"कबीरदास का यह भक्त रूप उनका वास्तविक रूप है। इसी केन्द्र के इर्द-गिर्द अन्य रूप स्वयं में प्रकाशित हो उठे हैं। मुश्किल यह है कि इस केन्द्रीय वस्तु का प्रकाश भाषा की पहुँच के बाहर है। भक्ति कहकर नहीं समझायी जा सकती, वह अनुभव करके आस्वादन की जा सकती है। इस भक्ति या भगवान् के प्रति अहैतुक अनुराग की बात कहते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय उन्हें ऐसी बहुत सी बातें कहनी पड़ी हैं जो भक्ति नहीं हैं, पर भक्ति के अनुभव करने में सहायक हैं।" पृ. 220)

कबीर दास के कवि रूप पर भी आलोचकों के विभिन्न विचार हैं। द्विवेदी जी के शब्दों में कबीर ने कहीं काव्य लिखने की प्रतिज्ञा नहीं की तथापि उनकी आध्यात्मिक रूप की गगरी से छलके हुए रस से काव्य की कटोरी में भी कम रस इकट्ठा नहीं हुआ है।'...यह कविरूप घलुए में मिली हुई वस्तु है।"[217]

कबीर की भक्तिसाधना

कबीर ने अपनी वाणी में सद्गुरु की महानता का निरूपण किया। सद्गुरु की कृपा से ही उनमें अनन्यभक्ति का बीज वपन हुआ, उनको रामनाम का मंत्र मिला वे गुरु थे आचार्य रामानंद–

सद्गुरु के परताप ते मिटि गयो सब दुःख-दंद।
कह कबीर दुचिघामिटी, गुरु मिलिया रामानंद ॥

सत्य कबीर की साखी-1/8

गुरु ने रामनम के अलौकिक बीज को बो दिया कबीर ने इसके अंकुर को प्रेम की धारा से सींच दिया। प्रेमभक्तिके महारस से गुरु का भाण्डार परिपूर्ण था, उन्होंने बड़ी कृपापूर्वक यह महारस कबीर को दे दिया। इस प्रेमभक्ति के असाधारण रस को पाकर वे धन्य हो गए। द्रविड़ देश में उपजी हुई जिस भक्ति को उत्तरा खण्ड में ले आए थे, उसे कबीर ने सप्तद्वीप और नौखण्डों में व्याप्त कर दिया–

भक्ति द्राविड़-ऊपजी, लाये रामानंद।
पर गट किया कबीर ने सप्त-द्वीप-नवखण्ड ॥

-सं. क. सा. 15/1

कबीर की भक्ति विषयक अवधारणा क्या है? इनकी भक्ति में 'प्रेम तत्त्व की प्रधानता है। इसके तीन सोपान हैं–अनुराग, विरह और मिलन। जीव की अपने प्रिय से मिलन की लालसा का उद्रेक ही अनुराग है, इसी को दूसरे शब्दों में प्रेमलीला भी कह सकते हैं। जिस दिव्यात्मा को उसकी प्रेम लीला का अनुभव होता है, उसमें एक तड़पन होती है, संसार के किसी और विरह-व्यापार से तुलनीय नहीं है। चकई का विरह तो रात्रि के बाद समाप्त हो जाता है, पर राम का विरह इससे भिन्न है, राम का विरह कभी विराम नहीं लेता-

चकवी बिछुरी रैनि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुरे राम से, ते दिन मिलें न राति ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबीर इसको रामरस कहते हैं। यह सामान्य लौकिक रस से भिन्न होता है। कबीर के शब्दों में जो अपने सिर को कटा देता है अर्थात् जिसमें अनन्यता का भाव आ जाता है, वही प्रभु-प्रेम का अधिकारी होता है।

इस अनुराग के होने पर प्रभु की दूरी खटकती है, तब विरह का उद्रेक होता है और विरह से प्रेम घनीभूत होता है। विरह-बेदना की इस तीव्रता को कबीर ने विरह को अंग में व्यक्त किया है–45 दोहों में कबीर ने भगवद् विरह की अनुभूति को मूर्त कर दिया है–

बिरहा बिरहा जिनि कहौ, विरहा है खुलतान ।
जिह घर विरह न संचरै, सोघर सदा मसान ।21।।
हँसि हँसि कंत न पाइए, जिन पाया तिन रोइ ।
जो हाँसे ही हरि मिले, तो नहीं दुहागनि कोइ ।।39।।

विरह से प्रेम सघन होता है और एक ऐसी स्थिति आती है, जब प्रत्येक क्षण प्रिय की ही स्मृति सताने लगाती है, रोम-रोम पिउ पिउ करने लगता है। सुरति निरति की ओर बढ़ने लगती है और उसी में समा जाती है तब परम तत्त्व का साक्षास्कार होता है–यही मिलन दशा है, यही प्रेम की परिपूर्णता है, यह सहजस्थिति है और कबीर की साधना का यही लक्ष्य है।

श्री पीपा जी

पीपा प्रताप जग वासना नाहर कौं उपदेश दियौ ।।
प्रथम भवानी भक्त मुक्ति माँगन कौं धायो ।
सत्य कहयो तिहिं शक्ति सुदृढ़ हरिशरण बतायो ।
श्री रामानंद पद पाइ, भयो अति भक्ति की सीवाँ ।
गुण असंख्य निर्मोल सन्त धरि राखत ग्रीवाँ ।।
परसि प्रणाली सरस भई, सकल विश्वमंगल कियो ।
पीपा प्रताप जग वासना नाहर कौं उपदेश दियो ।।

भक्तमाल छंद सं-61

भक्तवर पीपा जी पहले भवानी देवी के भक्त थे। आपने मुक्ति माँगने के लिए देवी का ध्यान किया। देवी ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर सत्य बात कही कि 'मुक्ति देने की शक्ति मुझमें नहीं है वह शक्ति भगवान् में है। उनकी शरण में जाना ही सुदृढ़ साधन है। देवी के उपदेशानुसार आचार्य रामानन्द के चरण कमलों का आश्रय लेकर पीपाजी अति भक्ति की चरम सीमा हुए। गुरुकृपा एवं अतिभक्ति के प्रभाव से आप में असंख्य-अमूल्य सद्गुण थे, उन्हें सन्त जन सदा गाते रहते हैं। आपकी आराधना से संपूर्ण वैष्णवों की आराधना प्रणाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अत्यन्त सरस हो गयी। आपने अपने प्रभाव से संपूर्ण संसार का कल्याण किया। इसका प्रमाण यह है कि आप ने परम हिंसक सिंह को उपदेश देकर अहिंसक और विनीत बना दिया।।61।।

भक्तशिरोमणि पीपा जी गागरौन गढ़ के राजा थे। वे देवी के अन्य उपासक थे। इनकी देवी-आराधना ने कैसे वैष्णवी आराधना का स्वरूप धारणा किया, प्रियादास जी ने 24 छंदों में इसका रमणीय वर्णन किया है। इसे निम्नांकित शीर्षकों में विभक्त करके विश्लेषण किया जा रहा है।

(1) श्री रामानन्दाचार्य के शिष्य बनने की घटना

राजर्षि पीपा जी के यहाँ साधुओं की जमात आयी, राजा ने अपनी इष्टदेवी के प्रसाद से उन्हें सन्तुष्ट करना चाहा। साधुओं ने इसे स्वीकार नहीं किया। साधुओं ने रसोई करके भगवान् का भोग लगाया और मन ही मन प्रार्थना की हे प्रभो! इस राजा की बुद्धि को बदल दीजिए इसे अपना भक्त बना लीजिए। राजा ने रात्रि में स्वप्न देखा कि एक विकराल प्रेत ने मुझे पटक दिया है। राजा को भगवान की भक्ति प्रिय लगने लगी।

राजा ने देवी की आज्ञा से रामानन्द जी को गुरु बनाया, राजा ने स्वामी जी से दीक्षा ली और उनकी आज्ञा से घर लौट गए। उनकी भक्ति से प्रभावित होकर स्वामी जी अपने प्रिय चालीस भक्तों के साथ गाँगरौन गढ़ गए।।

(2) पीपाजी की रानी सीतासहचरी का शिष्या बनना- आचार्य श्री रामानन्दजी अपने चालीस शिष्यों के साथ गांगौरगढ़ के निकट पहुँचे। राजा ने सबका सम्मान किया। राजा ने स्वामी जी से 'अपने चरणों में ही रखने की प्रार्थना की। पीपाजी अपनी रानी सीता सहचरी के साथ स्वामी जी के यहाँ आए ।

(3) पीपा जी और सीता सहचरी जी सन्त समाज के साथ द्वारकापुरी पहुँचे। इन्हें भगवान् के दर्शन की इच्छा हुई, वे समुद्र में कूद गए। उसी क्षण श्रीकृष्ण ने अपने कुछ सेवकों को इन्हें 'लिवा जाने को भेजा, वे इन्हें सादर लिवा जाए। श्री पीपाजी ने दिव्यद्वारका दर्शन किया भगवान के द्वारा की गई शंख-चक्र को तथा भगवान् की आज्ञा आपने स्वीकार की । जब समुद्र से निकल कर तट पर आए तो लोगों ने एक विचित्र बातें देखी कि आप दोनों के वस्त्र सूखे हैं, परन्तु हृदय प्रेम से सराबोर है। पीपाजी ने भगवान् की हुई शंख-चक्र की छाप लोगों के शरीरपर लगायी। भीड़ के कारण भजन में बाधा समझ कर दोनों द्वारका से चल दिए। रास्ते में कुछ लोगों ने सीता सहचरी को छीन लिया। भगवान दौड़ आए और दुष्टों को मारकर सीता सहचरी को ले आए। इस प्रकार इनकी रक्षा करके और दर्शन देकर प्रभु ने इन्हें आनन्दित किया।

(4) पीपा जी द्वारा हिंसक सिंह को अहिंसक वैष्णव बनाना- द्वारका से लौटते समय मार्ग में इन्हें एक सिंह मिला जो बहुतों को मारकर खा चुका था परन्तु इनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दर्शन से उसका अन्तःकरण पवित्र हो गया। वह विनीत भाव से इनके निकट बैठ गया। इन्होंने उसे शिष्यबनाकर समझाया कि अब तुम वैष्णव हो गए, अतः किसी की हिंसा न करना।

(5) चौधर दम्पत्ति की सन्त निष्ठा । भक्त चौधर जी और उनकी धर्मपत्नी ने देखा कि परम भागवत श्री पीपा जी अपनी स्त्री समेत आए हैं वे परम प्रसन्न हुए। घर में खाने-पीने के का कुछ भी सामान न था। चौधरानी ने अपना एकमात्र-लहँगा उतार कर दे दिया। उसे अतिथिकी सेवा हुई/भगतिन सामने नहीं आयी सीता सरचरीजों ने उसे नग्न देखा। सीता सहचरी ने अपनी धोती में से आधी फाड़ कर उन्हें दिदा। सबों में एक साथ प्रसाद ग्रहण किया।

6. इस प्रकार पीपाजी को स्वर्ण मुहरों की प्राप्ति हुई, राजा सूर्यसेनमल पीपाजी के शिष्य बने (भक्त मालटीका 295-296) पीपा जी के जीवन में अनेक विलक्षण घटनाएँ हुईं, राजा सूर्यसेन मल को ज्ञान प्रदान किया (छथंद 300-301) दुराचारी लोगों को सन्तभाव प्रदान किया, ग्वालिन को शिष्य बनाया (छंद 304) और श्रीरंगदास को भक्ति का मर्म समझाया। दो स्त्रियों को भक्ति का चेत कराया, ब्राह्मण कन्या का विवाह कराया। इनके उदात्त चरित्र की सीमा नहीं। प्रियादास जी ने उपर्युक्त घटनाओं का इस प्रकार वर्णन किया है-

श्रीरंग के चेत धरयौ तिया हिय भाष मरयौ, ब्राह्मणकोशोक हरयौ राजा पै पूजाय कै।
चँदवा बुझायदियौ तेली को लै बैल दियौ दियौ पुनि घर माँझ भयो सुख आय कैं।।
बड़ोई अकाल परयौ जीव दुख दूरि करघौ परषौ भूमि सुख आप कै गर्भधन पायै वेलुटाय कै
अति विस्तार लियौ कियौ है विचार यह सुनै एकबार फेरि भूलै नहीं गाय के।

छंद-305

पीपा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की महानता पर अनन्तदास वैष्णव रचित 'भक्तरत्नावली' पीपाजी की परचई' द्रष्टव्य है। 56 पृष्ठों में इनका चरित्र वर्णित है।

श्री धनाजी

धन्य धना के भजन को बिनहिं बीज अंकुर भयो ॥
घर आयेहरिदास तिनहिं गोधूम खवायो ।
तात मात डर खेत थोथ लांगूल चलाये ॥
आसपास कृषिकार खेत की करत बड़ाई ।
भक्त भजे की रीति प्रकट परतीति जु पाई ॥
अचरज मानत जगत में कहुँ निपुज्यौ, कहुवै बयो ॥
धन्य धना के भजन को निबहिं बीज अंकुर भयो ॥

–भक्तमाल-62।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीघना के भजन को धन्य है कि बीज बोए बिना जिनके खेत में अंकुर जमा। बैष्णव भक्त उनके घर आए, उन्होंने बोने के लिए रखे हुए बीज का गेहूँ उन्हें खिला दिया। माता-पिता के डर से खेत में खाली-खाली हल चला दिया। परन्तु सन्त-सेवा के प्रताप से बिना बोये भी बढ़िया जमा । पास-पड़ोस के किसानों ने इनके खेत की बड़ाई की। लोगों ने साधु-सेवा की रीति और परतीति प्रत्यक्ष देखी। जगत में इस बात को सुनकर लोगों को आश्चर्य हुआ कि बोया गया किसी और के खेत में और उपजा किसी और ही के खेत में।

नाभादासजी के धना भक्त की विलक्षण कथा (बिना बीज के खेत में उपज होने की) के बाद अब प्रियादासजी से और विलक्षणं वृत्तान्त सुनिये। धनाजी में प्रथम भक्ति वैसे उत्पन्न हुई? इनके घर में एक भगवद्भक्त ब्राह्मण आए और श्री शालग्राम जी की भली प्रकार पूजा करने लगे। घना भक्त ने उनसे ठाकुरजी को लेकर स्वयं पूजा आराधना प्रारंभ की। ब्राह्मण देवता जैसे भोग लगाते देखा, वैसे ही आगे रोटी रखकर, परदा करके आँखे बन्द कर लीं। थोड़ी देर बाद परदा खोलकर देखा तो भगवान् ने एक टुकड़ा भी रोटी नहीं खायी थी। तब धन्ना को बड़ा भय हुआ।

श्री धन्ना जी भगवान् के पैरों में पड़कर अनुनय-विनय करने लगे। भगवान् के न खाने पर ये अंड़ गए कि आप नहीं खायेंगे तो मैं भी नहीं खाऊँगा। इनके हृदय के सच्चे भाव के समक्ष प्रभु ने इनके द्वारा अर्पित रोटियाँ खाईं । ये नित्य प्रति जंगल में 'गायें पराने जाते। इनके लिए जो छाक आती, तो ये बड़े प्रेम से भगवान् को भोग लगाते। भगवान के छोड़े हुए प्रसाद को ये प्रसननतापूर्वक ग्रहण करते।

एक दिन भगवान ने श्री धन्नाजी से कहा-देखो धन्ना! जो कोई जिसका खाता है, वह उसकी सेवा भी अच्छी तरह करता है। अतः मुझे भी कोई सेवा बताओ। धन्ना जी के मना करने पर भी श्री ठाकुर जी इनकी गायें रोज चराने लगे। एक वर्ष बाद वे ब्राह्मण फिर इनके यहाँ आए, परन्तु घर में सेवा-पूजा की प्रीति-रीति कही खोजने पर भी न मिली। पूछने पर भी धन्नाजी ने कहा कि भगवान गाय चराने गए हैं। पंडित जी के आश्चर्य का ठिकाना नहीं? जन्म पर पूजा की, भगवान् के दर्शन न हुए। पण्डितजी की प्रार्थना पर धन्नाजी ने उन्हें भगवान् श्याम सुन्दर का दर्शन करा दिया।

धन्ना जी पर प्रभु की ऐसी कृपा कि उन्होंने आज्ञा दी कि तुम स्वामी रामानन्दाचार्य जी के पास जाओ और उन्हें अपना गुरु बनाओ अर्थात् उनसे विधि-विधान पूर्वक मंत्र की दीक्षा ले ली । धन्ना जी ने स्वामी का शिष्यत्व ग्रहण किया और घर का सब काम-काज करते हुए भगवदाराधन करते रहे।

श्री सेन जी

विदित बात जग जानियै, हरि भये सहायक सेन के ॥
प्रभु दास के काज रूप नापित कौ कीनौ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छिप्र छुड़हरी गही पानि दर्पन तहँ लीनौ ॥
तादृस ह्वै तिहिं काल भूप के तेल लगायौ।
उलटि राव भयौ शिष्य प्रगट परचौ जब पायो ॥
स्याम रहत सनमुख सदा ज्यों बच्छा हित धेन के।
विदित बात जगजानियै, हरि भये सहायक सेन के ॥

—भक्तमाल -छं. 63

यह बात सर्वप्रसिद्ध है, सारा संसार जानता है कि भगवान परम भागवत श्री सेन जी के सहायक हुए । भक्तवत्सल प्रभु ने अपने भक्त (सेनजी) के लिए नाई का रूप बनाया। बगल में छड़हरी लटकाये, हाथ में दर्पण लिए ठीक सेन जी के समान रूप धारण करके जाकर राजा को तेल की मालिश की। जब राजा ने यह रहस्य जाना, तो वह उलटे ही सेनजी का शिष्य बन गया। जैसे नयी व्यायी हुई गाय हमेशा अपने बछड़े के कल्याण के लिए सामने ही रहती है, उसी प्रकार भगवान् श्री श्याम सुन्दर जी श्री सेनजी के हित के लिये उनके सन्मुख ही बने रहते थे।

प्रियादासजी ने टीका में श्रीसेनजी से संबद्ध अद्भुत वृतान्त दिया है। वघेलखण्ड का बान्धवगढ़ नगर अत्यन्त समृद्ध था। महाराज वीर सिंह वहाँ के राजा थे इसी नगर में परम विनयशील सेन जी रहते थे। वे नित्य प्रातः काल स्नान, ध्यान और पूजन के बाद राज सेवा के लिए घर से निकल पड़ते थे और दोपहर को लौट आते थे। जाति के नाई थे। राजा का बाल बनाना, तेल लगाकर स्नान कराना आदि उनका दैनिक काम था। एक दिन वे घर से निकले ही थे कि उन्होंने देखा कि एक भक्तमण्डली मधुर-मधुर ध्वनि से भगवान के नाम का संकीर्तन करती उन्हीं के घर की ओर चली आ रही है। सेनजी ने प्रेमपूर्वक सन्तों को घर लाकर उनकी यथाशक्ति सेवा-पूजा की और सत्संग किया।

उधर महाराज वीरसिंह को प्रतीक्षा करते-करते अधिक समय बीत गया। इतने में सेन नाई के रूप में स्वयं लीला विहारी राजमहल में पहुँच गए। उन्होंने राजा के सिर में तेल लगाया, शरीर में मालिश की और दर्पण दिखाया। सेन नाई राजा की पूरी-पूरी परिचर्चा और सेवा करके चले गए।

उधर जब भक्त मण्डली चली गई तो थोड़ी देर के बाद भक्त सेन को स्मरण हुआ कि मुझे तो राजा की सेवा में जाना है। उन्होंने आवश्यक सामान लिया और डरते-डरते राजपथ पर पैर रखा। राजा के बिगड़ने की बात सोचकर वे डर रहे थे।

एक राजसैनिक ने सेन से पूछ ही तो दिया 'कुछ भूल तो नहीं आए' उन्होंने कहा, अभी तो राज महल ही नहीं जा सका' सैनिक स्तब्ध। 'आज तो राजा आप की सेवा से इतने अधिक प्रसन्न हैं, कि इसकी चर्चा सारे नगर में फैल रही है। उनके राजमहल पहुँचते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही राजा वीरसिंह बड़े प्रेम और विनय तथा स्वागत-सत्कार से मिले। भक्तसेन ने बड़े संकोच से विलम्ब लिए क्षमा माँगी, सन्तों के अचानक मिल जाने की बात कही। राजा ने सेन के चरण पकड़ लिए' राज परिवार जनम-जनम तक आपका और आपके वंशजों का आभार मानता रहेगा। भगवान् ने आपकी ही प्रसन्नता के लिए मंगलमय दर्शन देकर हमारे असंख्य पाप-तापों का अन्त किया है।

श्री सुखानन्दजी

भक्तिदान, भैहरन भुज सुखानन्द पारस परस ॥
सुख सागर की छाप राग गौरी रुचि न्यारी ।
पद-रचना गुरु मंत्र मनो आगम अनुहारी ॥
निसि दिन प्रेम प्रवाह द्रवत भूधर ज्यों निर्झर ।
हरिगुन कथा अगाध भाल राजत लीला भर ॥
संत कंज पोषन विमल अति पियूष सरसी सरस ।
भक्तिदान भै हरन भुज, सुखानन्द पारस परस ॥

—भक्तमाल-64

श्री सुखानन्द जी की भुजा आश्रित जनों को भक्ति का दान देने वाली और संसार का भय हरने वाली थी। इनका स्पर्श लोहे के समान विमुख, दुष्ट लोगों को सोने के समान साधु-सदाचारी बनाने के लिए पारसमणि के समान था। ये अपने पदों में सुखसागर की छाप लगाते थे। राग गौरी में इनकी विलक्षण रुचि थी। इनके पद गुरुमंत्र तुल्य होते थे। इनकी रचना शास्त्र सम्मत होती थी। इनके हृदय में निरंतर प्रेम का प्रवाह उमड़ता रहता था और इनकी आंखों से ऐसा अविरल अश्रु पात होता रहता था, जैसे पर्वत से झरना झर रहा हो। भगवान के अनन्त गुण, कथा तथा लीला से पूर्ण इनका उन्नत ललाट अत्यन्त सुशोभित लगता था। ये सन्त समुदाय रूपी कमल वन का पोषण करने के लिए सूर्य तथा अनन्त निर्मल सरस अमृत के सरोवर के समान थे।64।।

इस छप्पय से श्री सुखानन्द जी की भक्तवत्सलता, पद रचना-नैपुण्य और गौरीराग की विशेषज्ञता स्पष्ट होती है। ये उज्जैन के निवासी थे। राम भारती नामक सन्यासी के साथ आकर इन्होंने रामानन्द स्वामी से दीक्षा ली और सुखानन्द नाम से प्रसिद्ध हुए। गुरु के आदेश से चित्रकूट रामशय्या नामक स्थान पर रहने लगे।

श्री सुरसुरानन्द जी

महिमा महाप्रसाद की सुरसुरानंद साँची करी ॥
एक समै अध्वा चलत वरा वाक छल पाये ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखादेखी शिष्य तिनहुँ पाछे ते खाये ॥
तिन पर स्वामी खिजे वमन करि बिन विस्वासी ।
तिन तैसे पर तच्छ भूमि पर कीन्हीं रासी ॥
सुरसुरी-सुवर पुनि उदगले, पुहुप रेनु तुलसी हरी ।
महिमा महाप्रसाद की सुरसुरानन्द साँची करी ॥

–भक्तमाल-छं. 65

श्री सुरसुरानन्द जी ने महाप्रसाद की शास्त्रोक्त महिमा को सत्य करके दिखा दिया। एकबार मार्ग में चलते समय एक दुष्ट के वाक् छल से दही-बड़ा खा लिया। आप की देखा-देखी शिष्यों ने भी पेट भर खाया । तब उनपर श्री स्वामी सुरसुरानन्द जी नाराज होकर बोले- तुम लोगों ने प्रसाद में विना विश्वास के ही स्वाद-बुद्धि से दही-बाड़ा खाया, अतः वमन करो। उन लोगों ने वमन करके पृथ्वी पर प्रत्यक्ष बड़ों का ढेर लगा दिया। इसके बाद परम साधु श्री सुरसुरी जी के पति ने वमन किया तो उनके उदर से हरी तुलसी, फूल और रेणु निकली। प्रसाद बुद्धि से ग्रहण करने से उड़द का बड़ा 'पुहुप रेनु तुलसी हरी' हो गया था।

संक्षिप्तविवरण

श्री सुरसुरानन्द जी श्री रामनन्दाचार्य जी के शिष्य थे। इनका जन्म लखनऊ के समीप परखम नामक ग्राम में हुआ था। श्री रामानन्दाचार्यमृत में श्री सुरसुरानन्दजी को देवर्षि नारद का अवतार कहा गया है। आचार्य जी की आज्ञा से आपने सुरसुरी नाम की मातृपितृ हीना ब्राह्मण बालिका से विबाह किया। अंतिम समय में अयोध्या आ गए-वही भगवद् दर्शन करते हुए दिव्य धाम साकेत की यात्रा की।

श्री सुरसुरी जी देवी

महासती सत उपमा, त्यों सत 'सुरसुरी' को रह्यौ ॥
अति उदार दंपती त्यागि गृह वन को गवने ॥
अचरज भयो तहँ एक, संत सुन जिन हो विमने ।
बैठे हुते एकांत आय असुरनि दुख दीयौ ।
सुमिरे सारंगपानि रूप नरहरि कौ कीनौ ॥
सुरसुरानन्द की घरनि कौ सत राख्यौ नरसिंह जह्यो ।
महासती सत ऊपमा त्यौं सत्त सुरसुरी को रह्यौ ॥

-भक्तमाल-छप्पय-66

महासती के सतीत्व के सदृश श्री सुरसुरी जी का पातिव्रत्य भी प्रभुकृपा से अक्षुण्ण रहा। इस दम्पति ने वैराग्यपूर्वक गृहत्याग करके भगवद् भजन के लिए वन को प्रस्थान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। वहाँ वन में एक दिन ये दोनों एकान्त में भजन कर रहे थे, उसी समय दुष्ट म्लेच्छों ने श्री सुरसुरी जी का अपहरण करने के लिए अनेक प्रकार के उपद्रव किए। उस समय दम्पत्ति ने श्री शार्ङ्गपाणि भगवान श्रीराम का स्मरण किया। भक्त के स्मरण करते ही श्री रामजी ने श्री नृसिंहरूप धारण कर असुरों को मार डाला और श्री सुरसुरानन्दजी की पत्नी श्री सुरसुरी जी का पातिव्रत्य बचा लिया।

पतिव्रत और भगवद्भक्ति की आदर्श स्वरूपा श्री सुरसुरी देवी के आख्यान से अवतारवाद की अवधारणा की अभिव्यक्ति होती है।

श्री नरहरिया नन्दजी

निपट नरहरिया नन्द कौं कर दाता दुर्गा भई ॥
घर झर लकरी नाहिं शक्ति कौ सदन उदारै ।
शक्ति भक्त सों बोलि दिनहिं प्रतिबरही डारैं ॥
लगी परोसी हौंस भवानी ध्वैं सो मारै ।
बदले की बेगारि मूँड़ बाके सिर डारै ॥
भरत प्रसंग ज्यों कालिका लडू देखि तन मैं तई ।
निपट नरहरिया नन्द कौ, कर दाता दुर्गा भई ॥67॥

—भक्तमाल छं 67

एकबार वर्षा की झड़ी लग जाने से घर में ईंधन के लिए सूखी लकड़ीं न होने से श्री ठाकुरजी के लिए भोग बनने एवं सेवा में बाधा देखकर श्री नरह रियानन्दजी ने समीप के दुर्गाजी के मंदिर को ही उजाड़ना शुरू किया। तब श्री दुर्गाजी ने प्रकट होकर भक्त से कहा कि मेरे मन्दिर को न उजाड़े, मैं प्रतिदिन आप के यहाँ सूखी लकड़ी का एक बड़ा बोझ रख आया करूँगी। उसी दिन से श्री दुर्गाजी श्री नरहरियानन्द के यहाँ लकड़ी पहुँचाने लगी। यह देखकर आश्रम के पड़ोस में रहनेवाले एक व्यक्ति की इच्छा हुई कि मैं भी इसी प्रकार दुर्गाजी से लकड़ियाँ लूँ! वह भवानी का मंदिर उजाड़ने लगा। तब भवानी ने उसे पृथ्वी पर पटककर बहुत मार लगायी और अपने में सिर की बेगार (लकड़ी पहुँचाना) उसके सिर पर सौंपकर तब उसको छोड़ा। जैसे जड़ भरत तथा लड्डूभक्त के प्रसंग में भक्त की भक्ति के तेज से कालिकाजी तप्त हो गयी थी, उसी प्रकार श्री नरहरियानन्द जी के भक्तितेज से तप्त होकर देवी ने कर दिया।

स्वामी नर हरिया नन्दजी रामानन्दा चार्य जी के शिष्य और गो. तुलसीदास के गुरु थे। अनन्ता नन्दजी ने नरहरिको दीक्षा दी। चित्रकूट इनकी साधना स्थली । अनेक कथाएँ हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास भक्तमाल के रचयिता नाभादास के समकालीन थे। इसलिए इन्होंने तुलसीदास के विषय में लिखा–

कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीकि तुलसी भयौ ॥
त्रेता काव्य निबंध करिब सतकोटि रमायन ।
इक अक्षर उद्धरैं ब्रह्महत्यादि परायन ॥
अब भक्तनि सुखदैन बहुरिलीला विस्तारी ।
रामचरन रस मत्त रटत अहनिसि व्रतधारी ॥
संसार अपार के पार को सुगम रूप नवका लयो ।
कलिकुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो ॥

–भक्तमाल छंद 129

इस छंद से तुलसीदास के संबंध में तीन तथ्य सामने आते हैं–

(क) तुलसीदास उन बाल्मीकि के अवतार हैं जिन्होंने रामायण की रचना की और उन्हीं की भाँति इन्होंने भी भगवान की लीला का गान किया।

(ख) यह अहर्निश रामचरण रस में मत्त रहते हैं।

(ग) संसृति-समुद्र के संतरण के लिए इन्होंने रूप की सुगम नौका प्रस्तुत की है।

प्रियादास ने 'भक्तमाल' के उपर्युक्त उल्लेख पर टीका के रूप में जिन ग्यारह छंदों की रचना की है उनकी रूपरेखा इस प्रकार है–संख्याएँ टीका की हैं–

(508) तुलसीदास अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करते हैं और उसकी भर्त्सना से ही उत्तेजित होकर वे विरागी होते हैं और काशी चले जाते हैं।

(509) काशी में वे एक प्रेत को प्रसन्न करके हनुमान के दर्शन करते हैं।

(510) हनुमान के द्वारा उन्हें घोड़ो पर चढ़ कर जाते हुए राम-लक्ष्मण के दर्शन होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(511) एक हत्यारा राम का नाम लेता हुआ आता है।, तुलसीदास उसके साथ भोजन करते हैं और काशी के पंडित इसके लिए जवाब तलब करते हैं।

(512) वे शिव के नन्दी को भोजन कराकर उनका समाधान करते हैं।

(513) चोर तुलसी दास के स्थान पर चोरी करने आते है और उन्हें वहाँ पहरेदारों के रूप में राम-लक्ष्मण के दर्शन होते हैं।

(514) तुलसीदास एक मृत व्यक्ति को जीवित करते हैं।

(515) यह सुनकर बादशाह उनको बुला भेजता है और उनसे करामात दिखाने को कहता है।

(516) इनकार करने पर वे बंदी किए जाते हैं, पर वे हनुमान की प्रार्थना करते हैं, बन्दर प्रगट होकर किले में उत्पात करते हैं।

(517) बादशाह उनके पैरों पड़ता है किन्तु वे बादशाह से वह किला छोड़ देने के लिए कहते हैं और बादशाह एक नया किला बनवा कर उसे छोड़ देता है। वापसी में वे वृन्दावन होते हुए आते हैं जहाँ नाभादास से उनकी भेंट होती है।

(518) वहाँ पर वे मदन गोपाल के दर्शनों के लिए जाते हैं किन्तु उनके इष्ट राम हैं अतः मदन गोपाल उन्हें राम के रूप में भी दर्शन देते हैं।

प्रियादास के द्वारा वर्णित सारे प्रसंग तुलसीदास की अलौकिकता को बतलाने वाले हैं।

प्रियादास की टीका का रचनाकाल संवत् 1769 है। डॉ. माता प्रसाद गुप्त के अनुसार ये समस्त प्रसंग भवानीदास के 'गोसाई चरित्र' और बेनी माधवदास के 'मूल गोसाईं चरित' मे मिलते हैं। हो सकता है कि इन रचनाओं पर प्रियादास का प्रभाव यथेष्ट हो।[38]

भक्तमाल के रचयिता नाभादास जी ने गो. तुलसीदास के संबंध में ।

'रामचरन रस मत्त रहत अहनिसि व्रतधारी' लिखा, इसका बड़ा गूढ़ अभिप्राय है। काव्यशास्त्र के आचार्यों ने भक्ति को देवादिवियक रति मानकर इसकी गणना भावों में की। आचार्यों का कथन है कि भक्ति और वात्सल्य पृथक् रस नहीं हो सकते क्योंकि इनके आधारभूत स्थायी भाव मौलिक नहीं हैं, प्रत्युत स्नेह के ही रूपान्तर मात्र हैं। बड़े का छोटे के प्रति स्नेह-वात्सल्य और छोटे का बड़े के प्रति स्नेह भक्ति या श्रद्धा कहलाता है। इस प्रकार यह देवताविषयक रति भाव ही है रस नहीं। भक्ति रसायन' के निर्माता आचार्य मधुसूदन सरस्वती के अनुसार भक्ति को रस न मान कर भाव ही माना जाय तब तो वह 9 रसों में मिला हुआ है क्योंकि–

न भाव हीनोऽस्ति रसो न भावो रसवर्णितः ।
परस्पर कृता सिद्धिरनयो रस भावयोः ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस नियम से रस बिना भाव के और भाव बिना रस के नहीं रह सकता। भक्ति भाव है, यह सब रसों में मिला रहेगा ।

चैतन्य मत के आचार्य रूप गोस्वामी भक्ति को स्वतंत्र रूप से रस मानते हैं। इन्होंने हरिभक्ति रसामृत सिंधु[1] और 'उज्ज्वल नीलमणि' में शास्त्रीय पद्धति से निरूपण करके सिद्ध कर दिया है। वे अन्य देवताविषयक रति को तो भाव मानते हैं किन्तु कृष्ण विषयक भक्ति को रस कहते हैं क्योंकि कृष्ण देवता नहीं साक्षात् ब्रह्म हैं। आचार्य मधुसूदन गोस्वामी ने भगवद्विषयक भक्तियोग नौ रसों में मिलित है अथवा स्वतंत्र रूप से पृथक् पुरुषार्थ है, इसको शास्त्रोक्त प्रमाणों से सिद्ध कर दिया है। इनकी दृष्टि में अंतःकरण का भगवदाकार होना ही भक्ति है-

द्रुतस्य भगवद्धर्माद्धारावाहिकतां गता ।
सर्वेशो मनसोवृत्तिभक्तिरित्य भिधीयते ॥

—भक्ति रसायन-श्लोक-3

"भगवद्ध धर्म अर्थात् भगवद् गुण श्रवणादि से द्रवीभूत हुए चित्त की सर्वेश्वर भगवान् के विषय में धारावाहिकता को प्राप्त हुई (तैलधारावत्) वृत्ति ही भक्ति कही जाती है।

गो. तुलसीदास के 'रामचरनरस' का अभिप्राय यही है कि दास्यभक्ति रस है, इस रस का आस्वादन किया था हनुमान जी ने, भाई भरत ने, लक्ष्मण ने और मानस के अधिकांश पात्रों ने ।

सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत ।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥

—मानस 4/3

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरवान ।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन ॥

—मानद्व 2/204

लक्ष्मण—जहँ लगि जगत सनेह सगाई ।
प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥
मोरे सबइ एक तुम स्वामी ।
दीनबंधु उर अंतरजामी ॥
धरम नीति उपदेसिअ ताही ।
कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥
मन क्रम वचन चरन रत होई ।
कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥

— मानस 2/72/5-8.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और अन्त में निष्कर्ष

सेवक सेव्य भाव विनु भव न तरिअ उरगारि ।
भजहु रामपद पंकज अस सिद्धान्त विचारि ॥
जो चेतन कहँ जड़ करइ-जड़हि करइ चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनायकहिं भजहिं जीवतें धन्य ॥

—मानव-7/119-क.ख.

विनयपत्रिका' तो 'रामचरन रस' की मनोरम काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। इसके लिए भगवत्स्वरूप की महत्ता और अपनी लघुता की अनुभूति जितनी ही अधिक होगी, उतनी ही दिव्य रसानुभूति पल्ले पड़ेगी–

रामसो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो ?
राम सों खरो है कौन, मों सो कौन खोटो पद 72/2

और भी

ब्रह्म तू, हौं जीव, तू है ठाकुर, हौ चेरो।
तात मात, गुरु-सखा तू सब विधि हितु मेरो ॥-पद 79

विनय की सप्त भूमिकाएँ भी तो रामचरण रस, तक पहुँचने में सहायक हो सकती हैं–

1. दीनता– कैसे देउँ नाथहिखोरि -
   काम-लोलुपभ्रमत मन हरि भगति परिहरितोरि ॥158॥
2. मानमर्षता-का हे ते हरि मोहि विसारो ।
   जानत निजमहिमा मेरे अध तदपि न नाथ सँभारो।
3. भय दर्शन–राम कहत चल, रामकहत चल, राम कहत चल भाई रे।
   नाहिं तौ सब-बेगारि महँ परिहै, छूटत अति कठिनाई रे -पद 189
4. भर्त्सना–ऐसी मूढ़ता या मन की ।
   परिहरि रामभगति-सुरसरिता, आस करत ओसकन की ॥ पद । 9 0
5. आश्वासन-ऐसे राम दीन हितकारी ।
   अति कोमल करुना-निधान, विनु कारन पर उपकारी ॥ पद 166
6. मनोराज्य-कबहुँक हौं यह रहनि रहौंगो ।
   श्रीरघुनाथ-कृपालु-कृपा ते संत-सुभाव गहोंगो॥ -पद 172
7. विचारणा-केंसव ! कहि न जाइ का कहिये ।
   देखत तब रचना विचित्र हरि! समुझि मनाहि मन रहिये ॥ - पद 121

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तिशास्त्र के आचार्यो ने शरणागति के द्वारा ही 'रामचरन रस' की उपलब्धि स्वीकार की है। नारद पांचरात्र में लिखा है–

आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रातिकूल्यस्य वर्जनम् ।
रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्व वरणं तथा ॥
आत्मनिक्षेप कार्पर्ण्ये षड्विधा शरणागतिः ॥

1. भगवान् के अनुकूल रहने का संकल्प (पद 172)
जो मन लागै राम चरन अस ।
देह-गेह-सुत-वित-कलत्र महँ मगन होत विनुजतन किये जस। पद-204

2. भगवान् के प्रतिकूल का त्याग-जाके प्रिय न राम-वैदेही। तजि ये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही ।

3. रक्षक भगवान में विश्वास-जो पै कृपा रघुपति कृपालकी। वैर और के कहा सरै।। पद 137

4. रक्षक भगवान् का वरण-और काहि माँगिये, को मॉगिबोनिवारो-पद-80

5. आत्म समर्पण-गरैगी जीह जो कहौ और को हौं।
जानकी जीवन! जनम जनम जनम पायो तिहारेहि कौर को हौ। पद 229

6. कार्पण्य अत्यन्त दीनता-सुनहु राम रघुबीर गुसाई ।
मन अनीति रत मेरो-पद 143 ।

चाहे भक्ति की सप्तभूमिका हो या षट्शरणागति-भगवत् कृपा ही प्रभु-प्राप्ति का अमोघ तत्त्व है और इसकी प्राप्ति अनन्यता से ही हो सकती है।

गोस्वामी तुलसीदास (संवत् 1554 -1680) गो. तुलसीदास भक्तमाल के सुमेरु हैं। 16वीं शती के उत्तरार्ध में विराजमान आचार्य मधुसूदन सरस्वती इनके मित्रों में थे। इनकी दृष्टि में तुलसीदास काशी में चलता-फिरता हुआ एक बृक्ष है। उसकी कविता रूपी मंजरी का श्री रामस्वरूप भ्रमर ने आस्वादन किया है।

आनन्द कानने ह्यस्मिन् तुलसी जंगमस्तरुः ।
कविता मंजरी यस्य रामभ्रमर चुम्बिता ॥

भक्तमाल में गो. तुलसीदास से सम्बद्ध जो अनेक कथाएँ प्रसिद्ध हैं, उनमें एक यह भी है कि दिल्ली में आने के बाद ये नाभादास जी से मिले। गोस्वामी जी ने वृन्दावन में मदन गोपाल श्री कृष्ण के दर्शन कर प्रार्थना की प्रभो! आपकी छवि अवर्णनीय है, परन्तु सच्ची बात तो यह है कि भगवान् श्रीराम मेरे सच्चे इष्टदेव हैं।" लीलाधारी श्रीकृष्ण भगवान् ने श्री राम रूप धारण कर दर्शन दिया। एक दिन ऐसा हुआ कि श्रीकृष्ण के अनन्य उपासकों ने कहा भगवान् श्रीकृष्ण सोलह कलाओं से पूर्ण हैं और श्रीरामचन्द्रजी अंशावतार हैं, यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनकर आपने उत्तर दिया कि अब तक तो मैं उन्हें श्री दशरथ का पुत्र परम सुन्दर, उपमारहित जानकर प्रेम करता था, परन्तु आज आप के द्वारा मालूम हुआ कि उनमें ईश्वरत्व भी है, अब उनमें मेरी प्रीति करोड़ो गुनी अधिक हो गयी है–

प्रियादास जी ने इनकी इष्ट के प्रति अनन्यता का वर्णन इस प्रकार किया है–

मदन गोपाल जू कौं दरसन करि कही, सही राम इष्ट मेरे दृष्टि भावपागी है,
वैसे ही सरूप कियौ, दियौ लै, दिखाई रूप, मन अनुरूप छवि देखि नीकी लागी है
काहू कही कृष्ण अवतीरीजू प्रसंस महा, राम अंस, सुनि बोले, मति अनुरागी है।
दशरथ सुतजानौ, सुन्दर अनूप मानौः ईशताबताई रति कोटिगुनी जागी है।।

टीका-संख्या 518

हिन्दी साहित्य की रामभक्तिशाखा के मूर्धन्य कवि गो. तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 में बाँदा जिले के राजापुर नामक गाँव में एक प्रतिष्ठित सरयू पारीण ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। रहीम ने भी लिखा–

सुरतिय नरतिय नागतिय सब चाहति अस होय।
गोदलिये हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय ।।

एक जनश्रुति के अनुसार इनका जन्म अमुक्तमूल नक्षत्र में हुआ था। इससे इनके माता-पिता ने उन्हें त्याग दिया था। चुनिया नाम की दासी ने पालन-पोषण किया। बाबा नरहरिदास ने अपने पास रखकर शिक्षा-दीक्षा दी। पंचगंगाघाट के परम विद्वान् महात्मा शेष सनातन जी ने इन्हें वेद-वेदांग, दर्शन, इतिहास-पुराण में प्रवीण कर दिया। प्रसिद्ध कथा के अनुसार पत्नी के चुभते बचनों से आहत होकर काशी आ गए। देश-देशान्तर में भ्रमण के पश्चात् संवत् 1631 में अयोध्या में रामचरितमानस की रचना आरम्भ की और 2 वर्ष 7 माह में समाप्त किया।

गोस्वामी जी के मित्रों और स्नेहियों में नवाब अब्दुर्रहीम खानखाना, महाराज मानसिह, नाभादास जी और मधुसूदन सरस्वती आदि कहे जाते हैं। काशी में इनके बड़े स्नेही और भदैनी के एक भूमिहार जमीदार टोडर थे जिनकी मृत्यु पर इन्होंने कई दोहे रचे हैं–

चार गाँव को ठाकुरो मन को महामहीप।
तुलसी या कलिकाल में अथए टोडर दीप ।।
तुलसी राम सनेह को सिर पर भारी भारु।
टोडर काँधा नहि दियो, सब कहि रहे 'उतारु'
राम धाम टोडर गये, तुलसी भये असोच।
जियबो मीत पुनीत बिनु, यहै जानि संकोच ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी जी की रचनाओं के संबंध में भी विद्वानों में कम मतभेद नहीं है। बाबा बेनी माधव दास, पं. रामगुलाम द्विवेदी और डॉ. माताप्रसाद गुप्त आदि ने बारह ग्रंथ, शिव सिंह सेगर ने 18, रामनरेश त्रिपाठी ने 30, खोजरिपोर्ट के अनुसार 36 और डॉ. उदयभानु सिंह ने 51 ग्रंथ तुलसीदास जी के माने हैं। किन्तु अधिकांश विद्वानों ने निम्नलिखित 12 ग्रंथ ही प्रामाणिक समझे हैं।

1. रामचरितमनस, 2. गीतावली, 3 कवितावली, 4. कृष्ण गीतावली, 5. विनयपत्रिका 6. दोहावली, 7. रामललानहछू, 8. वैराग्य संदीपनी, 9. रामाज्ञा प्रश्न, 10. बरवै रामायण, 11. जानकी मंगल, 12. पार्वती मंगल। तुलसीदास जी का स्वर्गवास कब हुआ, इस विषय में यह दोहा बहुत महत्त्वपूर्ण है–

'संवत् सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यौ सरीर॥

पर बाबा वेणीमाधव दास की पुस्तक (मूल गोसई चरित) में दूसरी पंक्ति इस प्रकार है–

'सावन स्यामा तीज सनि, तुलसी तज्यो सरीर॥
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार यह ठीक
तिथि है क्योंकि टोडर के वंशज अब तक इसी
तिथि को गोस्वामी जी के नाम सीधा दिया करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास की प्रशस्ति में जितना लिखा गया, वह अपने में कम आश्चर्य का विषय नहीं? नाभादास जी के भक्तमाल का उल्लेख कई बार हो चुका है।

''कलिकुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकितुल सी भयो॥''

–नाभादास

"कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला"

–हरिऔध

धन्य वह धन्य है भारतभूमि जहाँ मल-रेखा गई धुल सी।
पुत्र विचित्र दिया जग को जिसने धन है वह माँ हुलसी॥
मानस धोकर मानस में इस विश्व की आँख गई खुल सी।
आज भी जीवित हो जग में तुलसीकृत मानस के तुलसी॥[3]

–पं. रामदीन व्यास

मध्वाचार्य (द्वैतवाद) ब्रह्म संप्रदाय

आचार्य मध्व (बारहवीं शताब्दी) का जन्म दक्षिण भारत के बेलिग्राम नामक स्थान में हुआ। वेदान्त में पारंगत होने पर भी सन्यास लेने पर इनका नाम आनन्दतीर्थ रखा गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्होंने बदरिकाश्रम में आठ मंदिरों का निर्माण किया और वैष्णव भक्ति के प्रचार में योग दिया। इन्होंने अद्वैतवाद का विरोध किया। इनका दार्शनिक मत द्वैतवाद है। इनके मत में जगत सत्य है। समस्त जीव हरि के अनुचर हैं। मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन अमला भक्ति है।

श्री कमलाकर भट्ट

भक्तमाल में कमलाकर भट्ट को द्वितीय मध्वाचार्य कहा गया है, इन्होंने तत्त्ववाद की ध्वजा फहरायी थी, ये भगवान के सभी अवतारों को पूर्ण अवतार मानते थे, अंश, कला भेद को स्वीकार नहीं करते थे। विजय ध्वजी परिपाटी के अनुसार श्रीमद्भागवत की कथा कहते थे–

क़मलाकर भट 'जगत में तत्त्ववाद रोपी धुजा ।
पंडित कला प्रवीन अधिक आदर दे आरज ।
संप्रदाय सिरक्षत्र, द्वितीय मनो 'मध्वाचारज ॥''
जेतिक हरि अवतार सबै पूरन करि जानै ।
परिपाटी 'ध्वज विजै' सदृश भागौत बरवानै ॥
श्रुति स्मृति, संमत पुरान तात मुद्राधारी भुजा ।
'कमलाकर भट' जगत में तत्त्ववाद रोपी धुजा ॥

–भक्तमाल -छंद 128

विष्णु स्वामी संप्रदाय

इतिहास ग्रंथों में विष्णुस्वामी के नाम से तीन आचार्यों का उल्लेख मिलता है। डॉ. भण्डारकर के अनुमान से इनका उदय तेरहवीं 'शताब्दी में हुआ था। इनके मत में ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप है तथा वे अपनी आह्लादिनी शक्ति के द्वारा आश्लिष्ट हैं। माया उन्हीं के अधीन रहती है। इस संप्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्त ग्रन्थ रूप में उपलब्ध नहीं है। इनकी शिष्य परंपरा में वल्लभाचार्य का स्थान है, और उन्हीं के सिद्धान्तों को विष्णुस्वामी संप्रदाय में स्थान दिया जाता है।

इस विष्णुस्वामि संप्रदाय में ज्ञानदेव प्रसिद्ध संत हुए। इनके शिष्य नामदेव और त्रिलोचन सूर्य और चन्द्र के समान उजागर हुए।

ज्ञानदेव

विष्णु स्वामि संप्रदाय दृढ़ ज्ञानदेव गंभीर मति ॥
नाम त्रिलोचन शिष्य सूर शशि सदृश उजागर ।
गिरा गंग उनहारि काव्यरचना प्रेमाकर ॥
आचरज हरिदास, अतुलबल आनंद दायन ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेहि मारग वल्लभ विदित पृथु पधति परायन।
नवधा प्रधान सेवा सुदृढ़ मन, बच, क्रम हरिचरनरति।
'विष्णुस्वाभिसंप्रदाय' दृढ़ ज्ञानदेव गंभीर मति ॥

—भक्तमाल-छंद 48

महाराष्ट्री साहित्य में ज्ञानदेव, नामदेव और त्रिलोचन की बड़ी प्रतिष्ठा है। नाभादासजी के भक्तमाल की टीका में) नामदेव के संबंध में अनेक अलौकिक घटनाओं का उल्लेख है।

नामदेव

नामदेव प्रतिज्ञा निर्वही, ज्यों त्रेता नरहिरदास की ॥
बाल दसा 'बीठल' पानि जाके, पै पीयौ ॥
मृतक गऊ जिवाय परचौ असुरन कौं दीयौ ॥
सेज सलिल तें काढ़ि पहिल जैसी ही होती।
देवल उलट्यौ देखि सकुचि रहे सबही सोती ॥
पंडुरनाथ कृत अनुगज्यों छानि सुकर छाई घास की।
नामदेव प्रतिज्ञा निर्बही ज्यों त्रेता नरहरिदास की ॥

—भक्तमाल -43 पृ. 322

बाल अवस्था में जिनके हाथों से श्री विट्ठल भगवान् ने दूध पिया। मरी हुई गाय को जिलाना और नदी से अनेक पलंग निकालना तथा देवालय के द्वार का अपनी ओर कर लेने और प्रभु द्वारा छप्पर छा जाने की चमत्कारी घटनाओं से नामदेव की भक्तिनिष्ठा व्यक्त होती है।

इस प्रकार ज्ञानदेव और नामदेव के द्वारा भक्तमाल के रचयिता नाभादास ने विष्णु स्वामी संप्रदाय की व्यापकता को स्पष्ट किया है। त्रिलोचन की साधु-सेवा से प्रभु के चाकर बनने की कथा अपने में बाँध लेने वाली है।

त्रिलोचन

भक्तमाल में त्रिलोचन का उल्लेख ज्ञानदेव (छंद 48) के साथ हुआ है क्योंकि ज्ञानदेव के शिष्य नामदेव और त्रिलोचन थे। नाभदेव और त्रिलोचन को सूर्य और चन्द्र के समान कहा गया है। त्रिलोचन का जन्म वैश्य कुल में हुआ था। परम वैष्णव भक्त त्रिलोचन जी की यही लालसा रहती थी कि कोई ऐसा नौकर हाथ लगता, जो सन्तों की इच्छानुसार, उनकी इच्छानुसार टहल (सेवा) किया करता (टीका बं. ८०)

भक्त की अनोखी अभिलाषा जान कर एक दिन स्वयं प्रभु ही एक टहलू के रूप में, कंधे पर फटी कमरी, पावों में टूटी पनही पहने इनके द्वार आ ही तो पहुँचे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिलोचन जी ने देखते ही इनका पता पूछा।

उस वेषधारी टहलू ने कहा, मेरे माँ-बाप कोई नहीं हैं। जो मुझे रखे और मेरा और उसका स्वभाव मिल जाय तो मैं सेवा-टहल भले प्रकार करता हूँ। त्रिलोचनजी ने पुनः पूछा, आपके स्वभाव में अनमिल वार्ता कौन सी है? वह भी तो बता दीजिए। टहलू ने उत्तर दिया, "मैं पाँच-सात सेर खाता हूँ इसीलिए जिसके यहाँ रहता हूँ वह रिसाय जाता है। ग्लानि मानने लगता है, तब मैं चल ही देता हूँ। और भी मैं चारों वर्णों की रीति जानता हूँ और अकेले ही सब टहल कर लेता हूँ। मेरा नाम अन्तर्यामी है, मैं आप का चाकर हुआ। त्रिलोचन जी जैसे सहज भक्त ने भी हर्षित होकर कहा 'जितना चाहो उतना अधाकर कर खाइओ कुछ शंका मत करो।" उन्होंने अन्तर्यामी को मॉज-माँज कर स्नान कराया, पनही और कमली आदि नई मँगवा दी।

त्रिलोचन ने अपनी घरनी को हर प्रकार की सेवा करने का हुक्म दे दिया। अन्तर्यामी की सेवा से प्रसन्न होकर और साधु-सन्त आने लगे। त्रिलोचन जी की साधु-सेवा की धूम मच गई। एक वर्ष और एक मही ने बीतते-बीतने एक तनिक ही बात पर अन्तर्यामी अन्तर्धान हो गए।

भक्तराज त्रिलोचन जलहीन मछली की भाँति विकल हो उठे। पत्नी को धिक्कारते हुए कहा, अभागिन ! तूने क्यों उनकी वार्ता चलाई । वह साधु-सेवा में, अति अनुरागी था। अब उनको कहाँ से कैसे लाऊँ ? भक्तराज त्रिलोचन को आकाशवाणी हुई कि 'तुम प्रसाद पावो, जलपान करो, उपवास मत करो, यह अन्तर्यामी नामक टहलू मैं ही था और मैं सदा तुम्हारे पास हूँ भी, यदि अब भी तुम्हारी इच्छा हो, तो वैसी ही सेवकाई सन्तों की मुझे स्वीकार है, मैं तो सदैव भक्तों के ही अधीन हूँ कहो तो फिर पहुँचू ?

इस प्रकार प्रभु की आकाशवाणी सुन त्रिलोजन जी ग्लानि से विलाप करने लगे "मैं कैसा दास हूँ? हा! मुझसे दासत्व भी कुछ न बना, स्वयं प्रभु दास हो के रहे, यह भारी उपहास की बात हो गई, मैं संसार में क्या मुँह दिखाऊँ, लोग मुझे भक्त कहते हैं, धिक्कार मेरी भक्ति को !! ऐसी अज्ञानता मेरी सो प्रभु के मन में भी न आई ।"

इस प्रकार प्रेम-पश्चात्ताप कर, प्रभु की कृपालुता स्वभाव स्मरण पूर्वक भजन और सन्त सेवा में व्यतीत करने लगे ।

त्रिलोचन जैसी अनेक रोचक कथाओं से भक्तमाल सराबोर है, ये कथाएँ काल्पनिक न होकर सत्य हैं। भक्त माल ऐसी रोचक कथाओं से पाठक को बाँध लेता है।

निम्बाकाचार्य (सनकादि संप्रदाय (भेदाभेद)

निम्बाकाचार्य और इनके द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय का व्रजमण्डल में अपना महत्त्व है। निम्बार्क का समय 1162 ई. के आसपास माना गया है (डॉ. भण्डारकर) वर्तमान मैसूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदेश के वैल्लारी जिले के निम्बापुर नामक नगर में इनका जन्म हुआ यद्यपि दक्षिण प्रान्त में हुआ था किन्तु इनकी कर्मभूमि ब्रजमण्डल ही है, बृन्दावन, मथुरा, गोवर्धन, नीम गाँव आदि स्थानों में घूमकर अपने सिद्धान्तों का प्रचार करते रहें। इनके चार प्रधान शिष्य बताए जाते हैं जिनमें श्री निवासाचार्य प्रसिद्ध हैं जिनका लिखा ग्रन्थ वेदान्त कौस्तुभ है।

निम्बार्काचार्य ने अपने सिद्धान्तों की स्थापना के लिए पाँच ग्रन्थों का प्रणयन किया जिनके 'वेदांत पारिजात सौरभ', दश श्लोकी, श्रीकृष्ण स्तवराज, मन्त्ररहस्य षोडशी और प्रपन्न कल्पबल्ली नाम हैं। दार्शनिक दृष्टि से इनके सिद्धान्त का द्वैताद्वैत' नाम है। इसके अनुसार जीव परब्रह्म का अंश है। भक्तिद्वारा जीव ब्रह्म या ईश्वर को प्राप्त करता है। ईश्वर को सगुण अवतारी श्रीकृष्ण के रूप में स्वीकार किया जाता है। कृष्ण भक्ति में राधा-कृष्ण का युगल स्वरूप स्वीकृत है। राधा का स्वकीया रूप स्वीकृत है। वृन्दावन में श्री जी की बड़ी कुंज स्थान निम्बार्क सम्प्रदाय का है।

श्री भट्ट जी

श्रीभट्टजी निम्बार्क संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कवि हैं। 'युगलशतक' इनकी काव्यकृति है। इसको 'आदिवाणी' भी कहते हैं इसमें एक दोहे के साथ एक पद है। इस प्रकार 100 दोहे और 100 पद हो जाते हैं। है। इनके आविर्भाव काल को लेकर विद्वानों में मतैक्य नहीं है।[39] भक्तमाल में श्री भट्ट के लिए वर्तमान कालिक क्रियाओं का प्रयोग है, इसलिए-1352 ठीक है।

श्रीमट सुभट प्रगटयौ अघट रस रसिकन मन मोदघन ।
मधुर भाव संमिलित ललित लीला सु ललित छबि ।
निरखत हररवत हृदै प्रेम बरसत सु कलित कबि ॥
भव निस्तारन हेतु देत दृढ़ भक्ति सबनि नित ।
जासु सुजस ससि उदै हरत अति तम भ्रम श्रम चित ॥
आनन्द कन्द श्री नन्द सुत श्री वृषभानु सुता भजन ।
श्रीभट सुभट प्रगट्यौ अघट रस रसिकन मन मोद घन ॥

—भक्तमाल-छंद-76

प्रस्तुत छंद में मधुर भावापन्न युगल छवि का अंकन है, जो रसिकोपासकों का सर्वस्व है । श्रीनन्दन और वृषभानुनन्दिनी के भजन में लीन श्रीभट्ट जी ने युगलशतक की रचना की।

हरिव्यास जी

हरिव्यास जी निम्बार्क संप्रदाय के उन महात्माओं में हैं जिन्होंने संप्रदाय का संगठन नये सिरे से किया और इसकी अनेक विच्छिन्न परंपराओं को पुन स्थापित किया। नाभादास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने 'भक्तभाल' में इन्हें श्रीभट्ट का शिष्य बताया और इनके अलौकिक चमत्कारों का परिचय दिया है। कहा जाता है कि इन्होंने शाक्तों को भी वैष्णव बनाया और उनमें भक्ति का प्रचार किया। इनके द्वारा लिखित पाँच ग्रंथ बताए जाते हैं जिनमें चार संस्कृत में और अंतिम व्रजभाषा में। इनकी महावाणी सम्प्रदाय की रसिक परंपरा का ग्रंथ है।

हरिव्यास तेज हरिभजन बल देवी को दीक्षा दई ॥
खेचर नर की शिष्य, निपट अचरज यह आवैं ॥
विदित बात संसार संत मुख कीरति गावैं ॥
बैरागिन के वृन्द रहत सँग श्याम सनेही ।
ज्यों जोगेश्वर मध्य मनो सोभित बैदेही ॥
श्रीभट्ट चरण रज परस तें सकल सृष्टि जाको नई ।
हरिव्यास तेज हरिभजन बल, देवी को दीक्षा दई ॥

–भक्तमाल-छंद-77

हरिव्यास देव जी ने अपने तेजबल से देवी को दीक्षा दी । आकाश में चलने वाली देवी मनुष्य की शिष्या बनी। श्रीभट्ट जी इनके गुरु थे। काव्यगहा सौर्न्य से मंडित छंद निश्चय ही स्पृहणीय है। श्री हरिव्यास जी के शिष्य 'श्रीजनगोपालजी (छंद 111) ।

परशुराम देव

हरिव्यास देव के प्रमुख सिष्य परशुराम थे। ये ही निम्बार्क संप्रदाय की गद्दी को सलेमाबाद ले गए। राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रचार करने का श्रेय इन्हीं को है। इनका जन्म जयपुर राज्य के नारनौल के समीप गौड़ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होंने पुष्कर में मुसलमान सिद्धों को योगबल से परास्त किया। इनका प्रमुख ग्रंथ परशुराम सागर है। मोतीलाल मेनोरिया के अनुसार इनके ग्रन्थों की संख्या 21 है।

जंगली देश के लोग सब परशुराम किय पारषद ॥
ज्यौं चन्दन कौं पवन नीम्ब पुनि चन्दन करई ।
बहुत काल तम निबिड़ उदै दीपक ज्यों हरई ॥
श्रीभट पुनि हरिव्यास संत मारग अनुसरई ।
कथा कीरतन नेम रसन हरिगुण उच्चरई ॥
गोविन्द भक्ति गदरोगगति, तिलक दाम सद बैदहद ।
जंगली देश के लोग सब परशुराम किय पारषद ॥

–भक्तमाल-छंद 137

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परशुरामदेव जी ने आपने उपदेश से जंगली वेश के लोगों को भगवत् पारषदों के समान कर दिया। इन्होंने श्रीभट्ट और हरिव्यास जी की साधना-पद्धति का विस्तार किया। नाभादस जी ने उदाहरण अलंकार के माध्यम से परशुराम देव जी का व्यक्तित्व स्पष्ट किया। छप्पय, 102 में भी कविजनों में इनका नाम आया है।

वल्लभाचार्य एवं उनके वंशज भक्त

भक्तमाल में आचार्य बल्लभ को विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के अंतर्गत मानकर ज्ञानदेव के छप्पय (48) में 'तेहि मग वल्लभ विदित पृथू पद्धति परायण' कहकर उल्लेख है। प्रियादास ने एक छप्पय में उनकी वात्सल्य भक्ति की बड़ी प्रशंसा की है और उनके चमत्कारपूर्ण कृत्य का उल्लेख किया है।[40]

बल्लभाचार्य के वंशजों की विरुदावली भी भक्तमाल में विस्तार से मिलती है। इनके यशस्वी पुत्र विट्ठलनाथ से सम्बद्धपद इस प्रकार है–

विट्ठलनाथ ब्रजराजज्यों लाल लड़ाय के सुख लियौ।
राग भोग नित विविध रहत परिचर्या तत्पर।
सज्या भूषन बसन रचित रचना अपने कर॥
वह गोकुल वह नंद सदन दीच्छित को सो है।
प्रगट विभौ जहाँ घोस देखि सुरपति सम को है॥
बल्लभ सुत बल भजन के, कलियुग में द्वापर कियौ।
विट्ठल नाथ ब्रजराज ज्यों लाल लड़ाय के सुख लियौ॥

–भागवत 66-78

विट्ठलनाथ जी ने अपने पुत्रों में श्रीकृष्ण भाव मानकर नन्दराय के समान लाड़ लड़ाय कर सुख लिया। भक्तमाल में विट्ठलनाथ के पुत्र श्री गिरिधर जी (छंद 131) श्री गोसाई गोकुलनाथ जी (छंद 132) और विट्ठलेश सुत श्री गिरिधर, श्री गोविंद, श्री बालकृष्ण, श्री गोकुलनाथ, श्री रघुनाथ महाराज, श्री यदुनाथ और श्री घनश्याम जी की कथा (छंद 80) में आयी है।

इस प्रकार बल्लभ संप्रदाय के आचार्यं और कवियों का वर्णन बड़े विस्तार से हुआ है।

श्री गिरिधर जी (श्री विट्ठलनाथ जी के पुत्र)
बल्लभ जू के बंस में सुरतरु गिरिधर भ्राजमान॥
अर्थ धर्म काम, मोक्ष भक्ति अनपायनि।
हस्तामल स्त्रुति ज्ञान सब ही सास्त्र कौ ज्ञाता॥
परिचर्या ब्रज राज कुँवर के मन को कर्षे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरसन परम पुनीत सभातन असृत बर्षै ।
दरसन परस पुनीत सभातन असृत वर्षै ॥
विट्ठलेसनंदन सुभावजग कोऊ नहि ता समान ।
श्री बल्लभजू के बंस में सुरतरु गिरिधर भ्राजमान ॥131॥

श्री गोसाईं गोकुल नाथ जी (श्री विट्ठल नाथ के चतुर्थ पुत्र)

श्री बल्लमजू के बंस में गुन निधि गोकुल नाथ अति ।
अधिसद अक्षोभ सहज सुन्दर मितभाषी ।
गुरु वत्तन गिरिराज भलप्यन सब जग साषी ॥
विट्ठलेश की भक्ति भयो बेला दृढ़ ताकैं ।
भगवत तेज प्रताप नमित नरवर पद जाकैं ॥
निर्विलीक आसय उदार, भजन पुंज गिरि धरन रति ।
बल्लमजू के वंश में गुनविधि गोकुलनाथ अति ॥

—छंद 132

बल्लभाचार्य एवं उनके अनुयायी कवि भक्त

'भक्तमाल' में आचार्य बल्लभ द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय; निष्ठा एवं अनुयायी भक्तों पर विशिष्ट रूप में विस्तार से चर्चा हुई है। इनके पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने 'अष्टछाप' की स्थापना द्वारा सम्प्रदाय की पूजा-पद्धति और सेवा-पद्धति को पूरा विस्तार दिया। हिन्दी साहित्य भी इनकी रचनाओं से समृद्ध हुआ। बल्लभाचार्य के चार शिष्य-कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास और परमानन्ददास तथा गोस्वामी विट्ठलनाथ के चार शिष्य गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नन्द दास थे।

सूरदास (सन् 1479-1582) भक्तमाल में सूरदास से सम्बद्ध पद में उनकी काव्य-माधुरी और कला- विदग्धता को लक्ष्य कर कहा है–

उक्ति चोज अनुप्रास बरन अस्थिति अतिभारी ।
बचन प्रीति निर्वाहि अर्थ अद्‌भुत् तुकधारी ॥
प्रतिबिम्बित दिविदृष्टि हृदय हरिलीला भासी ।
जनम करम गुन रूप सबै रसना परकासी ।
बिमल बुद्धि हो तासु की जो यह गुन श्रवननि करै ।
सूर कथित सुनि कौन कवि जो नहि सिर चालन करै ॥

—भक्तमाला-छंद 73

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल में सूरदास के समकालीन तथा उनके समय से आगे पीछे सूर नाम के अन्य भक्त भी हो गए हैं–उनका विवरण इस प्रकार है।

(बिल्वमंगल सूरदास (इनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'कृष्णाकर्णामृत' है। (छंद - 46)।

(2) सूरजदास-कृष्णदास पयहारी के शिष्य और सीताराम के उपासक थे।

(3) सूरदास मदनमोहन-छंद-136

(4) अष्टछापी सूरदास - छंद सं . 73

परमानन्द दास (छंद 74)

भक्त माल में चार परमानंदों का उल्लेख है।

अष्टछापी परमानन्द विषयक छंद 174) इस प्रकार है–

ब्रज वधू रीति कलियुग विषै परमानन्द भयौ प्रेमकेत ।
पौगंड बाल, कैशोर, गोपलीला सब गाई ।
अचरज कहा यह बात हुतौ पहिलौ जु सखाई ।।
नैननि नीरप्रवाह रहत रोमांच रैन दिन ।
गदगद गिरा उदार श्याम शोभा भीज्यौ तन ।
'सारंग' छाप ताकी भई श्रवण सुनत आवेस देत ।
ब्रज बधू रीति कलियुग विषै परमानंद भयौ प्रेम केत ।। 74।।

कुंभनदास, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी।

(1) कुंभनदास का भक्त माल में छंद 98 में केवल नामोल्लेख ।

(2) छंद 102 में गोविन्द स्वामी का उल्लेख ।

(3) छंद 103 में चतुर्भुजदास का उल्लेख ।

(5) छंद 146 में छीतस्वामी का उल्लेख ।

कृष्णदास (छंद 81)

भक्तमाल छंद सं. 81 में कृष्णदास का परिचय दिया है—

गिरिधरन रीझि कृष्णदास कौं नाम मौझ साझौ दियौ ।
श्री बल्लभगुरुदत्त भजन सागर गुन आगर ।।
कवित नोख निर्दोष नाथ सेवा मैं नागर ।।
बानी वंदित विदुष सुजस गोपाल अलंकृत ।
ब्रजराज अति, आराध्य, वहै धारी सर्वस चित ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सांनिध्य सदा हरिदास वर्य गौर श्याम दृढ़ व्रत लियौ ॥
गिरधरन रीझि कृष्णदास कौ नाम माँझ साझौ दियौ ॥

कृष्ण ने रीझकर अपने नामपर कृष्णदास रखवाया-राधाकृष्ण भजन के ढढ़ व्रती।

नन्ददास

भक्तमाल में नन्ददास का छंद सं. 110 में बृत्तान्त ।
नन्ददास आनन्द निधि, रसिक सु प्रभुहित रँगमगे ॥
लीला पदरस रीति ग्रंथ रचना में नागर ।
सरस उक्तिजुत जुक्ति भक्तिरस, गान उजागर ॥
प्रचुर पयध लौं सुजस 'रामपुर' ग्राम निवासी ।
सकल सुकुल संबलित भक्त· पद रेनु उपांसी ॥
श्री नंददास आनन्द निधि रसिक सु प्रभुहित रगमगे ॥

युगल लीला गान में प्रवीण, चन्द्रहास अग्रज और रामपुर निवासी छंद 110 थे। भक्तमाल में चतुर्भुज दास (छंद 103) और गोविन्द स्वामी (102) का उल्लेख सूरदास परमानन्ददास, कृष्णदास और नन्ददास के भाव एवं कला सौन्दर्य का संक्षेप में अच्छा वर्णन है।

विट्ठलनाथ जी के शिष्य प्रेमानिधि जी (छंद 167) ।

प्रेमनिधि जी

प्रगट अमित गुन प्रेमनिधि, धन्य विप्र जे नाम धरयौ ।
सुन्दर सील सुभाव, मधुर बानी मंगल करु ।
भक्तनि कों सुख देन फल्यौ बहुधा दसधा तरु ॥
सदन बसत निर्वेद, सारभुक, जगत असंगी ।
सदाचार उद्धार नेम हरिदास प्रसंगी ॥
दया दृष्टि बसि आगरैं कथा लोग पावन करयौ ।
प्रगट अमित गुन प्रेमनिधि धन्य विप्र जे नाम धरयौ ॥

–भक्तमाल-छ्यंद 167

श्रीप्रेमनिधि जी में प्रेमाभक्ति संबंधी अनन्त गुण प्रकट थे। उस ज्योतिषी विप्र को धन्यवाद है जिसने गुणों के अनुरूप ऐसा (सार्थक) नाम रखा। आप सुन्दर, शीलवान और स्वभाव से नम्र थे। आपकी वाणी मधुर रसमयी और श्रोताओं का सर्वाधिक कल्याण करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाली थी। घर में रहते हुए आप गृहस्थाश्रम के प्रपंचों से परम विरक्त थे। भक्तों के साथ सतसंग करते थे। आगरा निवासी) भक्तों पर रक्षा करके आपने श्री वृन्दावन से बाहर आगरे में निवास किया और भगवान् की कथाओं के द्वारा सबको पवित्र किया।

प्रियादास जी ने टीका। (छंद 596-600) में पाँच छंदो में प्रेमनिधि की भक्ति का वर्णन किया है। ये विठ्ठलनाथ जी के शिष्य थे, आगरे में रहते थे। ये नित्य यमुना से जललाकर पूजा करते थे। इस कार्य में भगवान् ने बालक बनकर इन्हें मशाल दिखाकर सहायता की। तत्कालीन वादशाह ने लोगों की शिकायत पर इन्हें कैद किया, पर जेल में प्रभु ने इनकी सहायता की। बादशाह ने इनसे क्षमा माँगी।[41]

भक्तमाल और राधावल्लभ संप्रदाय

हिन्दी की कृष्ण भक्तिशाखा में राधावल्लभ संप्रदाय का अपना अलग महत्त्व है। इस संप्रदाय का प्रवर्तन आचार्य हित हरिवंश गोस्वामी ने 1534 ई. में किया। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवनन्द नामक कस्बे के गौड़ परिवार में इनका जन्म हुआ 1533 ई. में किसी आभ्यंन्तर प्रेरणा से ब्रजभूमि आए और अपने संप्रदाय की स्थापना की। इसमें प्रेम को ही भक्ति तथा संप्रदाय का मूलाधार माना गया है रस रूप भगवान कृष्ण और राधा तथा प्रेम तत्त्व में कोई तात्त्विक भेद नहीं है। मुख्य रूप से नित्यविहार सहचरी (जीवात्मक) का उपास्य भाव है। राधा और कृष्ण नित्य विहारी है और जीवात्मा सखी भाव से उनके विहार दर्शन को परम सुख मानता है।

गोस्वामी हित हरिवंश के दो हिन्दी ग्रंथ (हित चौरासी और स्फुट वाणी) दो संस्कृत ग्रंथ (राधा सुधानिधि, यमुनाष्टक) तता विठ्ठलदास को लिखे गए दो गद्य पत्र अद्यावधि उपलब्ध हुए हैं।

भक्तमाल-(छंद-90) में श्री हित हरिवंश गोस्वामी विषयक छंद

श्री हरिवंश गुसाई भजन की, रीति सकृत कोउ जानि है।
राधा चरण प्रधान हृदै, अति सुदृढ़ उपासी।
कुंज केलि दंपति, तहाँ की करत खवासी॥
सर्वसु महाप्रसाद प्रसिद्ध ताके अधिकारी।
बिधि निषेध नहि दाम अनन्य उत्कट ब्रत धारी॥
व्यास सुवन पथ अनुसरै, सोई भलै पहिचानि है।
हरिबंश गुसाई भजन की रीति सकृत कोउ जानिहै॥

-(छंद-90)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यास जी

श्रीहित हरिवंश के शिष्य व्यास जी (हरिराम व्यास) व्रज मण्डल के प्रसिद्ध रसिक भक्तों में थे। इनका जन्म ओरछा (टीकमगढ़) राज्य में हुआ था। इनके जन्मकाल के विषय में दो मत हैं। कुछ विद्वान इनका जन्म 1510 ई में मानते हैं, किन्तु भगवतमुदित के अनन्य रसिकमाल के साक्ष्य पर इनका आविर्भाव 1492 ई में माना जायेगा क्योंकि वे 1534 ई. में बयालीस वर्ष की आयु में वृन्दावन आये थे।

व्यासजी की रचनाओं के संबंध में अंतिम रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। विद्वानों के अनुसार इनकी ये रचनाएँ हैं–

व्यासवाणी - 758 पद और 148 दोहे

रागमाला (अप्रकाशित) 604 दोहे

नवरत्न और स्वधर्म पद्धति (संस्कृत) व्यास वाणी में माधुर्य भक्ति और राधा-कृष्ण की निकुंज लीला का वर्णन है। भाव एवं भाषा की दृष्टि से ये समर्थ कवि हैं। भक्तमाल में —

उत्कर्ष तिलक अरु दाम कौ, भक्त इष्ट अति व्यास के

काहू के आराध्य मच्छ, कच्छ, नरहरि, सूकर।
वामन, फरसाधन, सेतुबंधन जु सैलकर॥
एकन के यह रीति नेम नबधा सों लायें।
सुकुल सुमोखन सुवन अच्युत गोत्री जु लड़ायें॥
नौ गुण तोरि नुपुर गुह्यो महत सभामधि रासके।
उत्कर्ष तिलक अरु दाम कौ भक्त इष्ट अति व्यास के॥

छंद-92

व्यास जी की भक्तिविषयक अनन्यता ऐसी थी भक्तों को लाड़-प्यार और उपासना पूजा किया करते थे।

(3) चतुर्भुजदास

चतुर्भुज दास नाम के भक्त कई हो चुके हैं। अष्टछाप के कवि चतुर्भुजदास, राधावल्लभ संप्रदाय के चतुर्भुजदास, नाभादास जी ने राधावल्लभी चतुर्भुजदास का वर्णन इस प्रकार किया है।

हरिवंश चरन बल चतुरभुज गोड़ देश तीरथ कियौ।
गायौ भक्ति प्रताप सबहि दासत्व दृढ़ायौ।
राधावल्लभ भजन अनन्यता वर्ग बढ़ायौ॥
'मुरली धर' की छाप कवित अति ही निर्दूषन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तनि की अँघ्रिरेनु वहै धारी सिरभूषन ॥
सतसंग महा आनन्द मैं, प्रेम रहत भीज्यौं हियौ ।
हरिबंश चरनबल चतुरभुज गौड़ देश तीरथ कियौ ॥

–भक्तमाल 123

इस छप्पय के अनुसार हित हरिवंश के शिष्य चतुर्भुज जी ने गोंडवाना अधमदेश को तीर्थ समान पवित्र कर दिया। और श्री राधावल्लभ की भक्ति का व्यापक प्रचार किया। कविता में 'मुरलीधर' की छाप रखते थे। काव्य की शुद्धता से मंडित इनके भावोद्गार अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान करते थे।

(4) नरवाहन

श्री हितहरिवंश के शिष्य नरवाहन का उल्लेख (छंद 105) में हुआ है। ये भौ गाँव में रहते थे। ब्रज के एक जमींदार थे और लुटेरे भी। एक सेठ लाखों की संपदा नाव में भरकर चला आ रहा था, इन्होंने सब लूट लिया और उस को कारागार में बन्द कर दिया। उस सेठ को भोजन देने एक लौड़ी कारागार में जाती थी। सेठ की दयनीय दशा देखकर उस दासी को बड़ी दया आई । उसने सेठ से एक उपाय बताया कि तुम बड़े जोर से 'राधावल्लभ श्री हरिवंश' नाम जपो, जब पूछा जाय, तो कहना कि मैं श्री हरिवंश जी का शिष्य हूँ।" नरवाहन ने पूछा 'तुम यह नाम क्यों जपते हो? उसने कहा 'मैं श्री हरिवंश का शिष्य हूँ।' नरवाहन श्री हरिवंश के शिष्य थे। यह सुनते ही धन देकर कहा कि 'श्री गुसाईं जी से यह बात मत कहना'। वह वैश्य घर में आकर शीघ्र ही वृन्दावन गया और श्री हितहरिवंश का शिष्य हो गया और अपना वृत्तान्त भी उसने बतला दिया। 'नरवाहन जी ने लाखों का धन लेकर मुझे बंदी गृह में डाल दिया था, मैंने आप का नाम लिया और झूठ ही कहा कि 'आप का शिष्य हूँ' तब उन्होंने धन देकर मुझे घर भेज दिया। यह सुनकर गुसाईं जी ने दोनों को प्रभु पद प्रदान किया।

राजा नागरी दास जी ने 'पद प्रसंग माला' में नरवाहन की कथा लिखी है। ध्रुवदास ने 'भक्तनामावली' में इनके बारे में लिखा है–

कहा कहौं कहि नहि सकौं नरवाहन को भाग ।
श्री मुख जाको नाम धरयो निजवानी अनुराग ॥

–भक्तनाभावली-दोहा-46

(5) श्री जसवंत जी (छंद 155)–

(6) इसीप्रकार श्री हरिदास जी (छंद 156) राधावल्लभ संप्रदाय के भक्त थे। अपनी अनन्य निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(7) छंद 161 श्री खङ्गसेन जी कायस्थ

(8) छंद 170 गंगा-जमुनाबाई ।

स्वायी हरिदास जी और उनके अनुयायी

स्वामी हरिदास द्वारा प्रवर्तित सखी संप्रदाय या हरिदासी संप्रदाय के भक्तों और उनकी भक्तिपद्धति को 'भक्तमाल' में विशेष स्थान मिला है।

स्वामी हरिदास जी अपने समय के महान संगीतज्ञ थे। अकबरी दरवार के तानसेन को इन्हीं का शिष्य कहा जाता है। यह भी प्रसिद्ध है की सम्राट अकबर स्वामी जी के दर्शन करने वृन्दावन आए थे। स्वामी हरिदास की 'रसिक' छाप थी। इनके द्वारा लिखित केवल दो रचनाएँ हैं–सिद्धान्त के पद और केलिमाल । 'केलिमाल' स्वामी-जी की रसमयी रचना है जिसमें 110 पदों में श्री श्यामाकुंजविहारी की लीलाओं के अनेक मृदु चित्र अंकित है।

'आसधीर' उद्योतकर रसिक छाप हरिदास की ।
जुगल नाम सो नेम, जपत नित कुंजबिहारी ।
अवलोकन रहे केलि, सखी सुख के अधिकारी ।।
गान कला गंधर्व, स्याम स्याामा को तोषैं ।
उत्तम भोग लगाय, मोर मरकट लिमि पोषै ।।
नृपति द्वार ठाढ़े रहे दरसन आसा जास की ।
'आस धीर' उद्योत कर रसिक छाप हरिदास की ।।

–भक्तमाल-छंद 91

स्वामी हरिदास जी श्री रसिक जी इस नाम से विख्यात थे। आप निरन्तर युगल नाम का जप किया करते थे और प्रिया-प्रियतम की केलि-विलास की लीला का दर्शन करते थे। सखी-सुख के परम अधिकारी थे। अपने रसमय संगीत से प्रिया-प्रियतम को रिझाते थे। प्रसाद द्वारा मयूर वन्दर और मछलियों को संतुष्ट करते थे।

बिट्ठल विपुल जी

भक्तमाल (छंद 94) वृन्दावन की माधुरी का पान करते 14 भक्तों में विट्ठलविपुल जी को नाभादास जी ने 'रससागर' कहा है । श्री गुरु हरिदास जी के परमधाम जाने पर ये इतने व्यथित हुए कि अपना पाञ्चभौतिक शरीर ही छोड़ दिया–प्रियादास जी ने लिखा है–

स्वामी हरिदासजू के दास, नाम बीठल है,
गुरु से वियोग दाह उपज्यो अपार है।
रास के समाज मे विराज सब भक्तराज,
बोलियौ पठाये, आये आज्ञा बड़ो भार है ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युगल सरूप अवलोकि, नाना नृत्यभेद, गान, तान कान सुनि रही न सँभार है।

मिलि गये वाही ठौर पायो भाव तन और,
कहे रस सागर सो ताकों ये विचार है।।

छंद 377 प्रियादास

गुरू की ऐसी निष्ठा कि स्वयं अपने प्राण भी त्याग दिया।
विह्वल विपुल जी के केवल 40 पद उपलब्ध हैं।
जिनमें नित्यविहार के रम्य चित्र काव्य गुणोपेत हैं–

हमारे माई स्यामाजू को राज।
जाके अधीन सदाई साँवरौ या व्रज कों सिरताज।
यह जोरी अविचल वृन्दावन, नाहिं आन सों काज।
श्री बिट्ठल विपुल बिहारिन केवल दिन जलधर संगगाज ।।

श्री विट्ठल विपुल की वाणी-पद 25

(3) छंद संख्या 146 में 'श्री बिहारीदेवजी का नामोल्लेख है

(4) श्रीजसवंत जी (छंद 155) श्री हरिदास जी के शिष्य।

चैतन्य संप्रदाय और उनके अनुयायी

भक्तमाल में श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु, उनके अनुयायी आचार्य और भक्तों का वर्णन बड़े विस्तार से हुआ है। चैतन्य महाप्रभु का जन्म सन् 1486 में बंगाल के नवद्वीप में हुआ। उस समय बंगाल में विष्णु भक्ति का प्रचार बहुत कम था। बहुधा काली और मनसा देवी के उपासक थे। शाक्तों का उस समय बंगाल में जोर था। ईश्वरपुरी की प्रेरणा से चैतन्य वैष्णव धर्म की ओर मुड़े। इन्होंने रूपगोस्वामी, सनातन गोस्वामी और जीवगोस्वामी को वृन्दावन में प्रचार के लिए भेजा। ये तीनों महात्मा अष्टछाप कवियों के समकालीन थे। इन तीनों भक्तों की प्रशंसा नाभादास ने भक्तमाल में की है जिससे पता चलता है कि श्रीकृष्ण चैतन्य और अनुयायी राधाकृष्ण युगल रूप के चरणों के उपासक थे। 'कृष्ण चैतन्य जिस समय ब्रज में गये, उस समय वर्तमान वृन्दावन में दो चार घरों के अतिरिक्त कोई बस्ती नहीं थी। चारो ओर यमुना के कछारों के जंगल थे। श्रीकृष्ण चैतन्य ने उस स्थान को एकतीर्थ स्थान बना दिया। अब वृन्दावन एक बड़ा तीर्थ स्थान समझा जाता है।

श्री जीवगोस्वामीजी ने वृन्दावन में श्री राधा दामोदर के मंदिर की स्थापना की और श्री गोपालभट्ट ने श्रीराधा रमण का मंदिर बनवाया। भक्तमाल में गोपाल भट्ट के राधारमणजी के इष्ट होने का वृत्त तथा उनके अन्य चैतन्य सम्प्रदायी भक्तों के नाम दिये हुए हैं जो नाभादस जी के समय तक उस संप्रदाय के मुख्य भक्त तथा प्रचारक समझे जाते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृन्दावन की माधुरी, इन मिलि आस्वादन कियौ।
सर्वस राधा रमन भट्टगोपाल उजागर।
हृषीकेश, भगवान, विपुल बीठल रससागर॥
थानेश्वरी जगन्नाथ, लोकनाथ, महामुनि मधुश्रीरंग।
कृष्णदास, पंडित उभै अधिकारी हरि अंग॥
घमंडी, युगल किशोर, भृत्य भूगर्भ जीव दृढ़व्रतलियौ।
वृन्दावन की माधुरी इन मिलि आस्वादन कियौ॥

–भक्तमाला-94

नित्यानन्द और श्रीकृष्ण चैतन्य

नित्यानन्द कृष्णचैतन्य की भक्ति दसोदिसि बिस्तरी॥
गौड़ देस पाखंड मेटि कियो भजन परायन।
करुणा सिन्धु कृतज्ञ भये अगनित गति दायन॥
दसधा रस आक्रान्ति, महतजन चरण उपासे।
नाम लेत निहपाप दुरित तिहि नरके नासे॥
अवतार विदित पूरब मही, उभय महत देही धरी।
नित्यानन्द कृष्ण चैतन्य की भक्ति दसों दिसि विस्तरी॥

–भक्तमाल-छं 72

इस छंद में नित्यानंद प्रभु को बलदेव का अवतार और श्रीकृष्णचैतन्य को श्रीकृष्ण का अवतार कहा गया है।

श्री रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी

(1478-1563) (1487-1558)

चैतन्य महाप्रभु के मत को दार्शनिक आधार पर प्रतिष्ठित करने वाले रूप गोस्वामी जी और सनातन गोसमी जी थे। रूपगोस्वामी जी ने भक्तिशास्त्र पर तीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ संस्कृत में लिखे–

'भक्तिरसामृतसिन्धु', 'उज्ज्वल नीलमणि' और 'लघु भागवतामृत'। इनके बड़े भाई सनातन गोस्वामी जी ने 'श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध की टीका तथा 'बृहद् भागवतामृत' ग्रंथ लिखे। श्री 'रूपगोस्वामी जी के भतीजे श्री जीव गोस्वामी जी ने, रूप गोस्वामी जी के दोनों ग्रन्थों की टीका, दशम भागवत की टीका, षट् संदर्भ तथा 'गोपाल चम्पू' काव्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखे। इन सबग्रन्थों में चैतन्य संप्रदायी भक्तिके तत्त्ववाद का निरूपण है। 'भक्तमाल में इनका वर्णन।

'संसार स्वादसुख वांत ज्यों दुहुँ 'रूप' सनातन' त्यागि दियौ ।
गौड़ देश बंगाल हुते सबही अधिकारी ।
हयगय भवन भँडार विभौ भुभुज उनहारी ॥
यह सुख अनित्य विचारि बास वृन्दावन कीन्हौ ।
यथा लाभ संतोष कुंज करवा मन दीन्हौ ॥
व्रजभूमि रहस्य राधाकृष्ण भक्त तोष उद्धार कियौ ।
संसार स्वाद सुख बांत ज्यों दुहुँ रूप, सनातन त्यागि दियौ ॥

–भक्तमाण छं. 89

प्रियादास जी इन दोनों भाइयों की ज्ञान और भक्ति संपदा के वर्णन में इतने तन्मय हो गए कि 7 कवित्तो (357-363) में ब्रज भूमि का उद्धार, भगवान् कृष्ण की कृपा और मानसिंह द्वारा गोविन्द जी के मंदिर-निर्माण के संबंध में उल्लेख कर दिया है।

श्रीजीव गोस्वामी

चैतन्यमत के दार्शनिक तत्त्वबाद के व्याख्याता आचार्य श्री जीवगोस्वामी के संबंध में नाभादासजी ने का व्यगुणसंपन्न यह छंद लिखा है–

श्री रूप, सनातन भक्तिजल जीव गुँसाई सर गँभीर ॥
बेला भजन, सुपक्व, कषाय न कबहूँ लागी ।
वृन्दावन दृढ़ वास जुगल चरननि अनुरागी ॥
पोथी लेखन पान अघट अक्षर चित दीनौ ।
सदग्रन्थनि कौ सार सबै हस्तामल कीनौ ॥
संदेह ग्रन्थि छेदन समर्थ, रस रास उपासकपरम धीर ।
रूप सनातन भक्ति जल जीवगुसाईं सर गँभीर ॥

–भक्तमाल-छंद-93

श्रीरूपगोस्वामी और सनातन गोस्वामी द्वारा समर्थित भक्ति का जल इनके सर (तालाब) में भर गया। इससे इनकी भरावद्भक्ति पुष्ट हुई। वृन्दावन में रहते हुए इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। परंपरा में मीरा और जीव गोस्वामी का आख्यान भी प्रसिद्ध है। मीरा ने पूछा-'श्रीकृष्ण चन्द्र के अतिरिक्त यहाँ पुरुष और कौन है?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूरदास मदनमोहन

भक्तमाल में नाभादास जी ने सूरदास मदनमोहन की काव्य-रचना की प्रशंसा की है और उन्हें राधा-कृष्ण भक्ति का एकान्त अधिकारी बताया है, ये सनातन गोस्वामी के शिष्य थे। इनका जन्म अनुमानतः 1513 ई. के लगभग हुआ था। ये अकबर के अमीन या दीवान थे और सण्डीले में नियुक्त थे। प्रसिद्ध है कि एकबार खजाने में 13 लाख मुद्राएँ आयीं। इन्होंने उस राज्य द्रव्य को साधुओं की सेवा में लगा दिया और स्वयं चुपचाप वृन्दावन चले गए। खजाने के विवरण में इन्होंने लिख दिया–

तेरह लाख सण्डीले उपजे, सब साधुन मिलि गटके।
सूरदास मदनमोहन, वृन्दावन को सटके॥

सूरदास मदनमोहन की रचनाओं का कोई प्राचीन संग्रह अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। बाबा कृष्ण दास ने 'सुदृढ़ बानी' में इनके 105 पदों का संग्रह किया था। श्री प्रभु दयाल मीतल ने किसी प्राचीन अशुद्ध और संदिग्ध प्रति में से चुनकर इनके पदों का संकलन प्रकाशित किया है। भक्तमाल में इनसे संबद्ध छंद इस प्रकार है–

(श्री मदन मोहन सूरदास की नाम शृंखला जुरी अटल॥
गान काव्यगुणराशि, सुहृद सहचरि अवतारी।
राधाकृष्ण उपास्य रहसि सुख के अधिकारी॥
नवरस मुख्य सिंगार विविध भाँतिन करि गायौ।
वदन उच्चरित बेर सहस पायनि ह्वै धायौ।
अंगीकार की अवधि यह, ज्यों आख्या भ्राता जमल।
(श्री) मदनमोहन सूरदास की, नाम शृंखला जुरी अटल॥

–भक्तमाल छंद- 126

गदाधर भट्टजी

गदाधर भट्ट को नाभादास जी ने सुदृढ़ सुशील, वचन प्रतिपालक, निर्मत्सर, निष्काम, करुणाशील, अनन्य, भजनीक, भक्तसेवी तथा भागवत के अद्वितीय वक्ता के रूप में चित्रित किया है। ध्रुवदास, नागरीदास, भगवतरसिक आदि भक्तों ने भी इनकी भागवतकथा की भूरि-भूमि प्रशंसा की है–

गुन निकर गंदाधर भट्टअति सबहिन को लागै सुखद॥
सज्जन, सुहृद, सुशील, वचन आरज प्रतिपालय॥
निर्मत्सर, निष्काम, कृपा, करुणा कौ आलय॥
अनन्य भजन दृढ़ करनि धरयौ वपु भक्तनि काजै॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम धरम कौ सेतु, विदित वृन्दावन गाजै।
भागौत कथा बरषै बदन, काहू कों नाहिन दुखद।
गुन निकर गदाधर भट्ट अति, सबहिन को लागै सुखद ॥

–भक्तमाल-138

प्रियादास ने भक्तमाल की टीका में इनसे संबंधित कुछ घटनाओं का वर्णन किया है। उनके अनुसार एक बार गदाधर भट्ट द्वारा रचित कृष्ण प्रेम संबंधी एक पद किसी साधु के मुख से जीव गोस्वामी ने सुना और वे मुग्ध हो गए। उन्होंने गदाधर भट्ट को वृन्दावन आने का निमंत्रण दिया। यहाँ आकर उन्होंने जीवगोस्वामी के दर्शन किये और उनकी प्रेरणा से रघुनाथ भट्ट गोस्वामी की शिष्यता ग्रहण की।

गदाधार भट्ट का अब तक कोई स्वतंत्र ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। ये प्रमुख रूप से राधा-कृष्ण की कैशोर लीलाओं के गायक हैं।

सखी, हौ स्याम रंग रँगी।
देखि निकाय गई, वह मूरति सूरति मोहि पगी ॥

× × ×

प्रियादास

नाभादास कृत भक्तमाल की 'भक्तिरसबोधिनी' टीका के कर्ता प्रियादास चैतन्यमत के अनुयायी थे। इनका जन्म सूरत नगर राजपुरा ग्राम में हुआ। पिता का नाम वासुदेव और माता का नाम गंगाबाई था। आप के जन्म संवत् का पता नहीं है किन्तु इनके द्वारा रचित प्रसिद्ध भक्तमाल की टीका की समाप्ति संवत् 1769 की फाल्गुन वदी सप्तमी तथा रसिक मोहिनी का रचनाकाल संवत् 1794 दिया गया है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि लगभग 1740 संवत् के पहले आपका जन्म हुआ। नवीन उम्र में ही वृन्दावन आकर श्री मनोहर देव महाराज के शिष्य हो गए। प्रयाग, चित्रकूट आदि तीर्थों में भ्रमण कर जयपुर गए। वहाँ गलता गादी (जहाँ नाभादास ने भक्तमाल की रचना की थी) में कुछ दिन निवास किया। उसी समय श्री नाभास्वामी द्वारा भक्तमाल की टीका लिखने की आज्ञा हुई। तब इन्होंने 'भक्ति रस बोधिनी टीका लिखी।

महाप्रभु कृष्ण चैतन्य के प्रति अनन्यभक्ति के कारण भक्तमाल की टीका लिखने के पहले मंगलाचरण में श्री चैतन्य के प्रति अपनी भक्ति निवेदित की है–

महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरनजू के चरण कौ ध्यान मेरे नाममुख गाइये। ताही समय 'नाभाज्' ने आज्ञा हुई, लई धारि, टीका विस्तारि भक्तमाल की सुनाइये। कीजिये कवित्त बंद छंद अति प्यारो लगै, जगै जगमाहि कहि वाणी विरमाइये। जानौ निजमति, ऐपै सुन्यो भागवत शुकं द्रुमनि प्रवेश कियौ, ऐसे ई कहाइये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रियादास ने भक्तमाल की टीका के पूर्व 8 कवित्तों में जो कुछ लिखा है, उससे उनकी भक्ति भावना और कला-कौशल दोनों की अभिव्यक्ति हुई इनके रसिकमोहिनी, अनन्यमोहिनी, चाहबेली और भक्तसुमिरनी भी प्रकाशित है। भक्त सुमिरनी एक प्रकार से भक्तमाल की पद्धति पर भक्तों के पावन नामों का स्मरण है–

भक्त माल रतनन की माल ।
कंठ करन हित रची रसाल ॥4॥

श्री भगवन्त मुदित (श्री माधवदास के पुत्र)

भगवन्त मुदित जी सूजा के दीवान थे। इनकी एक रचना प्राबोधानंद सरस्वती के 'श्री वृन्दावन महिमामृत' के एक शतक का संस्कृत से ब्रजभाषा में पद्यानुवाद, प्रकाशित भी हो चुकी है। इसकी पुष्पिका में भगवत मुदित जी में अपनी टीका का संवत् 1707 का इस प्रकार उल्लेख किया है–

संवत् दस सै सात सै, अरु साल बरस बैजान ।
चैतमास में चतुरबर, भाषा कियो बरवान ॥

इससे भगवन्त मुदित का रचना-काल संवत् 1707 के आसपास प्रत्यक्ष ही है। नाभाजी के भक्तमाल में इनका उल्लेख और संवत् 1707 के प्राप्त इस रचना-काल से अनुमान किया जा सकता है कि भगवत मुदित जी व्यास जी के समकालीन थे। प्रियादास जी व्यासजी के समकालीन थे। प्रियादास जी की भक्तमाल टीका से इनका वृन्दावन में निवास करना भी प्रकट है।

रसिक अनन्यमाल के मंगला चरण में श्री कृष्ण चैतन्य को प्रणाम किया है' ये गौड़ीय संप्रदाय के उपासक थे–

भगवंत मुदित उदार जस, रस, रसना आस्वाद किय ॥
कुंज विहारी केलि सदा अभ्यन्तर भासै ।
दम्पत्ति सहज सनेह प्रीति परिमिति परकासै ॥
अननि भजन रस रीति पुष्ट मारग करि देखी ।
विधि निषेध बल त्यागि पागि रति हृदय विशेखी ॥
माधव सुत संमत रसिक, तिलक दाम धरि सेवलिय ।
भगवन्त मुदित उदार जस, रस रसना आस्वाद किय ॥

छंद 198

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निष्कर्ष

भक्तमाल में भक्तों के विविध प्रकार के कृत्यों की आश्चर्य जनक कथाएँ हैं, जिनका उल्लेख करना कठिन है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि में नाभादास के भक्तमाल में ही भक्तों के नाम के साथ सिद्धियाँ और चमत्कारों का वपन हुआ है–सिद्धियों की कथा प्रत्येक नाथपंथी सिद्ध के नाम से जुड़ी हुई थीं। 14वीं / 15वीं शताब्दी में निश्चित रूप से इन सिद्धियों की कहानी का अम्बार सा लग गया था। नाभादास को ऐसी सैकड़ों सिद्धियों की कहानी गलता में 'प्रचलित मिली होगी। उनके दादा गुरु कृष्णदास पयहारी ने सिद्धि के प्रताप से ही गलता की गद्दी अधिकार की। उन्हें वैष्णव भक्तों की महिमा बताने के लिये सिद्धियों की कहानी आवश्यक लगी होगी। भक्तमाल ने इस उद्देश्य की पूर्ति की।

नाभादास जी के शिष्य प्रियादास जी ने भक्तमाल पर एक ठीका कवित्त-सवैयों में लिखी जिसमें जीवन वृत्त की अपेक्षा चमत्कारों का ही विस्तार अधिक किया गया । भक्तमाल में वैष्मव भक्तों की रक्षा का भार भगवान पर आ गया। भक्त अपना निरीह भाव छोड़ने को वाध्य नहीं, उस पर जो भी विपत्ति आती है, वह भगवान की शरणागति से दूर हो जाती है। इस नयी प्रवृत्ति ने भक्तों को बहुत लोकप्रिय बनाया। नाभादास की पुस्तक ने साहित्य और साधना-पद्धति को गंभीर रूप से प्रभावित किया।"?

भक्तमाल में वर्णित चमत्कार पूर्ण कथाओं के प्रति नाभादास भी सावधान थे। बे चमत्कारपूर्ण कथाओं का उल्लेख कर सामान्य जनता के मन पर भक्तों का वैशिष्ट्य प्रकट करना चाहते थे। उन्हें आशंका थी शायद लोग इन अलौकिक घटनाओं पर विश्वास न करें, अतः भक्तमाल के अंतिम छंद में पाठकों को स्पष्ट चेतावनी दे दी कि भक्तों के चरित को सुनकर कोई आश्चर्य न प्रकट करे —

उत्कर्ष सुनत संतनि कौ, अचरज कोऊ जिनि करौ ॥
दुर्वासा प्रति स्याम दास बसता करि भाषी ।
ध्रुव, गज, पुनि प्रह्लाद, राम शबरी फल साखी ॥
राजसूय यदुनाथ चरण धोय जूंठ उठाई ।
पाण्डव विपति निवारि, दियौ विष विषया पाई ॥
कलि विशेष परचौ प्रगट, आस्तिक ह्वै कै चित धरौ ।
उत्कर्ष सुनत संतनि कौ, अचरज कोऊ जिनि करौं ॥

—भक्तमाल-छं. 202

भक्तमाल के विवेच्य विषय की नवीनता यह है कि जहाँ पहले गीध, अजामिल, शबरी, ध्रुव एवं पौराणिक पात्रों के साथ ऐसी अलौकिक कथाएँ, प्रचलित थीं, वहाँ नाभाजी ने ऐतिहासिक पात्रों पर ईश्वर कृपा की कथा लिखकर भक्तों के महत्त्व को प्रकट किया।[44]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. वाङ्मय विसर्श-पृ. 272-273 ।
2. भक्तमाल-छंद 1-2 ।
3. भागवत संप्रदाय-पृ. 205 आचार्य बलदेव उपाध्याय ।
4. सर्वदर्शन संग्रह-पृ. 43 ।
5. भागवत संप्रदाय-पृ. 211 ।
6. हिन्दी साहित्य-उद्भव और विकास-पृ. 106 ।
7. श्री. प्रकाश' में जगद्गुरुरामनन्दाचार्य (भूमिका) स्वामी राम नरेशाचार्य जी ।
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास. पृ. 118 ।
9. रामानन्द संप्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव-पृ. 89 डॉ. बदरी नारायण श्रीवास्तव ।
10. भागवत संप्रदाय-संस्करण 2010-पृ. 255-बलदेव उपाध्याय ।
11. वैष्णव मताब्जभास्कर-श्लोक 100-108 ।
12. रामानन्द की हिन्दी रचनाऐं-पृ. 49 ।
13. रामानन्द संप्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव-पृ. 486 ।
14. हिन्दी साहित्य-उद्भव और विकास-पृ. 108 ।
    आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
15. हिन्दी साहित्य का इतिहास-पृ. 131 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
16. अग्रदेव जी के शिष्य-छंद देव 150 ।
17. रसिक प्रकाश भक्तमाल-छंद 14 और 215 ।
18. भक्तमाल सटीक-पृ. 313-315 ।
19. एकता के देवदूत शंकराचार्य-दो शब्द से आचार्य शंकर-स्वामी अपूर्णानन्द श्री रामकृष्ण आश्रम नागपुर ।
20. एकता के दूत-शंकराचार्य-पृ. 92 ।
21. विवेक चूड़ामणि-आद्य शंकराचार्य ।
22. भक्तमाल (सटीक) प्रियादास-छंद सं. 16 ।
23. भक्तमाल-सटीक (रूपकला) पृ. 47 73 ।
24. भक्तमाल सटीक (रूपकला) पृ. 43 ।
25. वही, पृ. 931 ।
26. हि.सा इतिहास-पृ. 147 ।
27. मिश्रबन्धु विनोद-पृ. 375 ।
28. **Sita Ram Saran Bhagwan Prasdas edition of Bhaktamal–'It is a most imposrtant and Valuable work, I have been reading it with great interest.**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

This excellant work has been so far as it goes my chief authority in doubful points. Dr G.A. Grearson.

The Jorunal of the Royal Society. July 1909.

29. रामभक्ति साहित्य में मधुर उपासना-पृ 194-199-डॉ. माधव ।
30. भक्तमाल-छप्पय-36 ।
31. संतरविदास की भक्ति साधना-डॉ. बी. पी. शर्मा ।
32. पूरब रंग सत्यु कविता पृ. 59 डॉ. उदय प्रताप सिंह ।
33. रैदास-पू 45-डॉ. धर्मपाल मैनी ।
34. गुरु नानक वाणी- डॉ. बी. वी. पी. शर्मा के अन्तर्गत पीपा-वाणी ।
35. महामानव रैदास-पृ. 5, छंद-14 ।
36. कबीर ग्रंथावली-संपादक डॉ. श्यामसुंदर दास दोहा 21 और 29 ।
37. स्वामी रामानन्द और तुलसीदास' के सम्बन्ध में विशेष विवरण 'तुलसीदास और उनका युग (पृ. 237-238) में द्रष्टव्य है। डॉ0 राजपति दीक्षित ।
38. तुलसीदास-पृ. 67 ।
39. हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य में मधुरभाव की उपासना-पृ. 280 डॉ. पूर्णमासी राय।
40. भक्तमाल (सटीक) पृ. 388-389 ।
41. भक्तमाल छंद 169 की टीका में सरस वर्णन ।
42. द्रष्टव्य-श्रीश्री चैतन्य चरितावली-श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ।
43. हिन्दी साहित्य-उद्भव और विकास-पृ. 240-244 ।
44. भक्तमाल का अनुशीलन एवम् विवेचन-पृ. डॉ. नरेन्द्र झा ।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वितीय अध्याय

भक्तमाल की अन्य विशिष्ट विभूतियाँ संस्कृत के कवि एवं आचार्य

जयदेव

भक्तमाल में कविराजों के राजा जयदेव की कीर्तिकथा का वर्णन अलंकृत शैली में इस प्रकार किया गया है–

जयदेव कवि नृप चक्कवै, खण्डमंडलेश्वर आन कवि ॥
प्रचुर भयो तिहुँलोक गीत गोविन्द उजागर ।
कोक काव्य नवरस सरस सिंगार को सागर ॥
अष्टपदी अभ्यास करैं तेहि-बुद्धिबढ़ावैं ।
राधारमन प्रसन्न सुनन निश्चय तहँ आवैं ॥
संत सरोरुह खंड को पद्मापति सुरवजनक रवि ।
जयदेव कवि नृप चक्कवै खण्ड मंडलेश्वर आन कवि ॥

–भक्तमाल-छंद 44

जयदेव के चक्रवर्ती और अन्य कवियों को मण्डलेश्वर राजा की संज्ञा से अभिहित कर नाभादास ने उच्च स्थान पर अधिष्ठित कर दिया है। गीत गोविंद को कोकशास्त्र का, काव्य के सभी अंगों का, नवों रसों का और सरस श्रृंगार रत्नाकर का समुद्र कहा है। और भी गीतगोविन्द की अष्ट पदियों को बुद्धिवर्द्धक और राधा वल्लभप्रिय की संज्ञा दी है।

इतना ही नहीं जयदेव संतसरोरुह के लिए रवि के समान हैं। प्रियादास ने इनकी कथा 20 छंदों (144-363) में लिखी है। किन्दु बिल्व ग्राम में जन्म, पिता भोजदेव और माता राधा देवी । इसमें जयदेव और पद्मावती की ललित कथा बड़े विस्तार से वर्णित है। संस्कृत साहित्य के इतिहास में जयदेव के गीतगोविन्द को प्रथम स्थान दिया गया है। ये बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन के दरबारी कवि थे। इनका समय 1100 ईस्वी के लगभग अनुमानित है।

प्रगट भयो जयदेव मुख, अद्भुत गीतगोविन्द ।
कह्यौ महाश्रृंगारस सहित प्रेम मकरंद –ध्रुवदास ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीधर स्वामी (भक्तमाल छं. 45)

श्रीमद्भागवत के सुप्रसिद्ध टीकाकार श्रीधर स्वामी ने इनके आधार पर परम धर्म का निर्णय किया। इन्होंने श्री भावार्थदीपिका नामक टीका लिखी उत्तर मीमांसा के वेदान्ती इसे ज्ञान प्रधान सिद्ध करते हैं। श्रीधर स्वामी ने षट्शास्त्रों के अनुकूल भागवत की टीका की। स्वयं विन्दुमाधव ने इसे सुधारा ।

श्रीधर स्वामी तौ मनौ, श्रीधर प्रगटे आनि ।
तिलक भागवत को कियौ, रचि सब तिलक परमानि ॥

—ध्रुवदास

विल्ब मंगल (भक्तमाल छंद 46)

विल्वमंगल की अमर कृति कृष्णाकर्णमृत रसपेशल मौलिक कृति है। दक्षिण के कृष्णवेणा नदी के तट पर ब्राह्मण कुल में जन्म। चिन्तामणि नामक वेश्या के प्रति अतिशय अनुरक्त थे। मुर्दे का सहारा लेकर नदी पार कर वेश्या के घर गए। उसके धिक्कारने से इनमें कृष्णभक्ति जाग्रत हो उठी प्रियादास ने 12 छंदों में इनकी कथा लिखी है। (छंद 165-176)[1]

विष्णुपुरी (भक्तिरत्नावली)

श्रीकृष्ण चैतन्य के शिष्य विष्णुपुरी ने भक्तिरत्नावली की रचना की। तेरह विरचन में भक्तितत्त्व की मीमांसा इस ग्रंथ में है। श्रीमद्भागवत से 500 श्लोक चुनकर यह रत्नावली बनी है।

कमलाकर भट्ट (भक्तमाल छंद 86)

'कमलाकर भट' जगत में तत्त्ववाद रोपी धुजा ॥
पंडित कलाप्रवीन अधिक आदर दे आरज ।
सम्प्रदाय सिरक्षत्र द्वितीय मनोमध्वाचारज ॥
जेतिक हरि अवतार सबै पूरन करि जानै ।
परिपाटी 'ध्वजविजै' सदृश भागौत बखानै ॥
श्रुति स्मृति, संमत पुरान, तप्त मुद्राधारी भुजा ।
कमलाकर भट जगत में तत्वावाद रोपी धुजा ॥86॥

कमलाकर भट श्री मद्भागवत के मर्मज्ञ विद्वान् थे। विजय ध्वजी 'परिपाटी के अनुसार बागवत की कथा कहते थे और भगवान् के सभी अवतारों को पूर्ण अवतार मानते और अवतारों के अंश, कला-भेद नहीं रखते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री नारायणमिश्र (भक्तमाल-छं. 134)

भागौत भली विधि कथन कौ, धनि जननी एकै जन्यौ ॥
नाम नरायण मिश्र, वंश नवला जु उजागर ।
भक्तन की अति भीर भक्ति दशधा कौ आगर ॥
आगम निगम पुरान सार शास्त्रनि सब देखे ।
सुरगुरु, शुक, सनकादि, व्यास, नारद जु विसेखे ॥
सुधाबोध सुख सुरधुनी जस वितान जग मैं तन्यौ ।
भागौत भली विधि कथन कौ, धनि जननी एकै जन्यौ ॥

–छंद 134

नाभदास जी ने भागवत के विशिष्ट वेत्ताओं की प्रशंसा मुक्त कंठ से की है।

परम धर्म प्रति पोषकौं सन्यासी ए मुकुट मनि ।
चित सुखटीकाकार भक्ति सर्वोपरि राखी ।
श्री दामोदर तीर्थराम अर्चन विधि भाखी ॥
चन्द्रोदय हरिभक्ति नरसिंहारन कीनी ।
माधो मधुसूदन सरस्वती, परमहंस की रति लीनी ॥
प्रबोधानंद, रामभद्र, जगदानंद कलिजुग्ग धनि ।
परम धर्म प्रति पोषकौं सन्यासी ए मुकुटमनि ॥

–भक्तमाल-छंद 181

परम धर्म को शास्त्रीय मान्यता देने वाले और शास्त्र निर्माता–(1) चित सुखानन्द सरस्वती ने गीता की चित्सुखी टीका लिखी ।

(2) श्री दामोदर तीर्थ ने रामार्चन चन्द्रिका में 'रामपूजन विधि का वर्णन किया है।

(3) श्री नृसिंहारण्य ने श्री हरिभक्ति चन्द्रोदय ग्रंथ लिखा ।

(4) मधुसूदन सरस्वती जी ने 'भक्तिरसायन' की रचना की ।

(5) प्रबोधानंद जी, रामभद्रसरस्वती जी और श्री जगदानन्दजी ने अनेक प्रकार के ग्रंथ लिखे।

श्री प्रबोधा नन्द जी आनन्द कन्द श्री कृष्ण चैतन्य के शिष्य थे। आपने अपने ग्रंथ में वृन्दावन वास की महिमा व्यक्त की।

इन कतिपय दृष्टान्तों से स्पष्ट होता है कि जयदेव, श्रीधर स्वामी, वित्वमंगल, कमलाकर भट्ट, श्रीनारायण मिश्र, मधुसूदन सरस्वती और प्रबोधानन्द सरस्वती जैसे दिग्गज आचार्यों ने अपनी अपनी कृतियों से भक्ति के शास्त्रीय पक्ष को स्पष्ट किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल के राजर्षि भक्त

(1) चतुर्भुज–भक्तमाल में वर्णित भक्तों में राजर्षि (राजा) नृपति भक्तों की भक्ति विविध रूपों की है, कोई भक्त का आगमन सुनते ही योजन भर दौड़कर उन्हें अपने घर लाता है और पाद-प्रक्षालन करता है और धूप-दीप-नैवेद्य के द्वारा उनके आगे नाचने लगता है- ये हैं–श्री चतुर्भुज नृपति (छंद 114) करौली के राजा। प्रियादास जी ने 6 छंदों में इनके अतिथि-सत्कार का वर्णन किया है। (टीका छंद 65-70)

(2) श्री पृथ्वी राज–आमेर नगर के राजा श्री पृथ्वी राजजी कूर्म (कछवाह) को श्री द्वारिकानाथ ने आसेर में ही कृपा करके दर्शन दिया। पृथ्वीराज जी स्वामी कृष्णदास पयहारी के साथ द्वारिका जाने को तैयार हुए। स्वामी जी ने उन्हें नगर में ही रहकर सेवा का आदेश दिया। राजा को यह आज्ञा प्रिय न लगी। स्वामी जी ने पुनः कहा 'तुम चिन्ता मत करो, दर्शन, स्नान, छाप, यहाँ ही लो।'' राजा ने स्वामी जी की आज्ञा शिरोधार्य की। स्वामी जी ने द्वारका की यात्रा की । पृथ्वी राज जी व्याकुल हो उठे, उन्हें रात्रि में नीद ही नहीं, इनकी मानसिक पीड़ा द्वारिका धीशजी के मन में व्याप्त हो गई। इससे साक्षात् आके राजा से मधुर वाणी में 'बोले-प्रभु ने श्रीकृष्णदास जी (पयहारीजी) की वाणी में 'पुकारा' ऐ पृथ्वी राज! राजा सुन के उठे और दौड़ के वहां ही आए, देखा तो श्री द्वारिका नाथ खड़े हैं, प्रदक्षिणा कर साष्टांग प्रणाम किया। प्रभु ने आज्ञा दी ''कानों को मूँद गोमती जी में स्नान करो।'' आज्ञा सुनकर राजा ने प्रत्यक्ष गोमती जी में स्नान किया, फिर प्रभु अन्तर्द्धान हो गए। उनको न देखा और शंख-चक्र की छापें राजा के तन में सब प्रेरित हो गईं। रानी ने भी इन आश्चर्य जनक घटनाओं को सुनकर प्रभु-कृपा के प्रति आश्चर्य व्यक्त किया। राजा ने बड़ा भारी मंदिर बनवाया और प्रभु को पधराकर (प्रतिष्ठा कर) सप्रेम पूजा भजन करने लगे। पृथ्वी राज की भक्ति के ये अलौकिक दृश्य भक्तमाल में अंकित है।

(3) छंद 117 राजा (जयमल की अद्भुत पूजा)

भक्तमाल में राजवंश के उन राजाओं का भी उल्लेख किया है, जिन्होंने भक्तों का सर्वतोभावेन आदर किया। उनमें श्री लघुजन जी, श्री जयमलजी, श्री रामचन्द्र जनजी, श्री नीवाँजी, श्री अभय रामजी, श्री भगवान जी, श्री बीरमजी, श्री ईश्वर जी, श्री अक्षयराज जी, श्री रायमल, श्री कान्हर जी और मधुकर साह जी मुख्य हैं।

इनमें मीराबाई के भाई जयमल ने मंदिर में पूजा को ठीक न समझकर (क्योकि वह नीचे है) इन्होंने छत पर बँगला बनवाया। उसें चंदोवा, दिव्य सेज, सुन्दर तकिया, विछौना, ओढ़ना आदि सजाकर सुन्दर जड़ाऊ सुवर्ण के पानदान, इत्रदान आदि सामग्री रखकर जरी के परदे द्वारों पर लगवाये। उस पर चढ़ने के लिए काठ की सीढ़ी रखी अष्टयाम पूजा का विधान। मानसी भावना पर ध्यान करते थे 'श्री लालजी सेज पर पधारते हैं, पान खाते हैं, फिर पीकदान में उगाल डाल देते हैं–भक्तों के सुखदाता शयन करते हैं–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल ऐसी कथाओं का भण्डार है।

(4) राठौर श्री खेमालरत्न जी–क्षत्री राठौर श्री खेमालरत्न जी के घर में भगवद् भक्ति ने आकर मानो निवास स्थान बना लिया इनके पुत्र रामरयनजी; पौत्र श्री किशोर सिंह जी-इन तीनों भक्तों ने दास्य भावना से साधु-सेवा रूपी कीर्ति की ऊँची ध्वजा गाड़कर फहरा दी–

"हरिदासन के दास, दसा ऊँची ध्वज धारी।
निर्भै अननि उदार रसिक, जस रसना भारी ॥
दशधा संपत्ति, सं i बल सदा, रहत, प्रफुलित बदन।
खेमाल रतन राठौर के अटल भक्ति आई सदन ॥"

–भक्तमाल-छंद 118

इस छंद में साधु सेवा से कीर्ति की प्राप्ति होती है; और दशधा (प्रेमाभक्ति) भक्ति से आनन्दानुभूति की निरन्तरता बनी रहती है, इस रहस्य का उद्घाटन हुआ है और जिस परिवार में सभी लोग भक्त हों, उसमें सुख और शान्ति सदा विद्यमान रहती है।

(5) राजा श्री रामरयन जी

कलियुग भक्ति करारी कमान, 'रामरैन' कैं रिजुकरी ॥
अजर, धर्म आचरयौ, लोक हित मनौ नील कंठ।
निन्दक जग अनिराय कहा, महिमा जानैगी भूसठ ॥
विदित गांधर्वी व्याह कियौ दुसकंत-प्रमानै।
भरत पुत्र भागौत सुमुख शुकदेव बखानै ॥
और भूप कोउ ह्वै सकै, दृष्टि जाय नाहिन धरी।
कलिजुग भक्ति करारी कमा न 'रामरैन' कैं रिजु कारी ॥

–भक्तमाल-छंद 119

कलियुग में धर्म का पालन अत्यंत कठिन है, भक्ति की साधना तो और भी मुश्किल है। परन्तु श्री रामरयन जी ने इस कठिन कार्य को बड़ी सरलता के साथ संपन्न किया। इन्होंने वैष्णव धर्म का इस विधि से पालन किया कि उसमें कभी जीर्णता न आयी। वह सदा नवीन बना रहा। आप श्री शंकरजी के समान सभी लोगों का कल्याण करने वाले थे परनिन्दक दुष्ट जिनका स्वभाव कुत्तों के समान है, वे भला आपकी महामहिमा कैसे जान सकते हैं?

जैसे राजा दुष्यंत ने शकुन्तला से विवाह किया और उनसे महान प्रतापी पुत्र भरत जी परम भागवत हुए, जिनका वर्णन श्रीमद्भागवत में श्री शुकदेव जी ने किया है, उसी प्रकार आप ने अपनी कन्या का विवाह गान्धर्व विधि से रासविहारी श्रीकृष्ण के साथ किया। आपने जैसी भक्ति का आचरण किया, दूसरे राजा लोग उसे मन में ला भी नहीं सकते, आचरण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना तो बहुत दूर रहा। नाभादासजी ने राजा रामरयनजी के भक्तिपरक आचरण को रूपक अलंकार से इस प्रकार व्यक्त किया है कि कलियुग में भक्ति को 'कररी कमान' कहा है, इन्होंने इसको सीधा कर दिया–

"कलियुग भक्ति कररी कमान 'रामरैन' कैं रिजुकरी आखिर राजा लोगों का विवाह धनुष-भंग के बाद ही होता था। व्यंजना से त्रेता युगीन श्रीराम विवाह की ओर संकेत है।

प्रियादासजी ने अपनी टीका में श्रीरामरनयजी के जीवन में घटी एक घटना के माध्यम से स्पष्ट किया।

पूनौं मैं प्रकाश भयौ सरद समाज रास विविध विलास नृत्य राग रंगभारी है बैठे रस भीजे दोऊ, बोल्यो राम राजारीझि, भेंट कहा जै विप्र कही जोई प्यारी है। प्यार को विचारै न बिहारै कहूँ नैकु छटा, सुता रूपघटा अनुरूप सेवा ज्यारी है। रही सभा सोचि आप जाय के लिवाय ल्यायै वेष सों दिवाये फेरे संपत लै पारी है।

कवित्त से स्पष्ट है कि एक बार शरत्पूर्णिमा की रात को जिसमें चन्द्रमा की चाँदनी छिटकी हुई थी, उसमें रासलीला का भव्य आयोजन हुआ। राजा रामरयनजी एवं उनकी पत्नी (रानी) दोनों रास का दर्शन कर रहे थे। नृत्यगान को पूर्णकर प्रेमरस में सरावोर युगल किशोर सिंहासन पर विराजमान हुए। उस समय राजा रामरयनजी ने प्रेम-विभोर होकर अपने मंत्रियों से पूछा कि 'ठाकुरजी को क्या भेंट करना चाहिए! भक्त ब्राह्मण मन्त्री ने कहा–राजन्! जो वस्तु आपको सर्वाधिक प्यारी हो, वही प्रभु को अर्पण करना चाहिए।" यह सुनकर राजा ने अपने मन में सोचा-विचारा और निश्चय किया कि 'घनी घटा के समान जिसमें सौन्दर्य छाया है, वही अपनी प्रिय कन्या श्री ठाकुर को भेंट में देने योग्य है। तत्पश्चात् आप अपने महल में गए और वस्त्राभूषणों से विभूषित अपनी कन्या को लिवा लाये और उसे रासविहारी श्रीकृष्ण को अर्पण कर दिया। बाद में विधि-विधान के अनुसार भाँवरे पड़ीं; विवाह हुआ, बहुत सी सम्पत्ति दहेज में दी और न्यौछावर भी।

यह है भक्तमाल से लीलानुकरण निष्ठा का सर्वोत्तम उदाहरण। इनकी रानी की उदारता की कहानी भी विलक्षण है। (छंद 120)

श्री किशोर सिंह जी (छंद 121)

श्री किशोर सिंह जी श्री खेमालरत्न जी के पौत्र और श्री रामरयन जी के पुत्र थे। श्री खेमालरत्न मरणासन्न थे, उनकी आँखों से निरंतर आँसुओं की धारा बह रही थी। श्रीरामरयन जी ने पूछा, आप को क्या कष्ट है, आप स्पष्ट कह दीजिए।' उन्होंने कहा। 'मैंने अपने मन में सेवा के दो मनोरथ किए थे, वे पूरे नहीं हुए, इसी बात का दुःख है। पूछने पर उन्होंने कहा–एक से तो यह कि मैं भगवान् श्री सीताराम जी के लिये अपने सिर पर जलभरा कलश नहीं लाया। दूसरा यह कि पैरों में घुँघरू बाध कर कभी भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र जी के आगे मैंने नृत्य नहीं किया।" इसे सुनकर उनके पौत्र श्री किशोर सिंह जी बोल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उठे, आप हमें आज्ञा दीजिए, मैं इन दोनों सेवाओं को नित्य करूँगा। जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे, तब तक नित्य नियम को निभाऊँगा। अपने पौत्र की ऐसी प्रतिज्ञा सुनकर श्री खेमाल रत्न जी के मन में अपार सुख हुआ। उन्होंने उठकर श्री किशोरसिह को छाती से लगा लिया और फिर सुखपूर्वक अपने शरीर का त्याग किया। उन्होंने जो प्रतिज्ञा की थी, उसका जीवन भर निर्वाह किया–

अभिलाष उभै खेमालका, ते किशोर पूरा किया ॥
पॉयन नूपुर बाँधि नृत्य नगधर हित नाच्यौ ॥
राम कलस मन रली सीस तातें नहिं बाँच्यौ ॥
बानी विमल उदार, भक्ति महिमा विस्तारी ।
प्रेम पुंज सुठिसील विनय सन्तनि रुचिकारी ॥
सृष्टि सराहै रामसुव लघु वैस लछन आरज लिया ।
अभिलाष उभैं खेमालका, ते किशोर पूरा किया ॥

छंद -121

भक्तमाल की भक्त नारियाँ

नाभादास कृत भक्तमाल में भक्त नारियों का वर्णन दो रूपों में हुआ है। अधिकांश नारियों के लिए एक-एक छंद हैं और छंद 104 में 29 युवतियाँ और छंद 170 में 21 अबलाएँ हैं। जिन अबलाओं के लिए एक छंद है, वे सभी कृष्णभक्त हैं–जिनके नाम इस प्रकार है–

1. दो बाई की कथा-छंद 50
2. मीराबाई (छंद 115)
3. श्रीरमरयन की धर्मपत्नी, (छंद 120)
4. कात्यायनी जी-छंद 127
4. श्रीमती रत्नावती- छं. 142
6. करमैती जी छंद - 160
7. देवी गोपाली जी - छंद -195
8. लालमती जी छंद - 198

1. दो बाइयों की कथा - पुरुषोत्तम पुरी का एक राजा ऐसा हुआ जिसने अपने दाहिने हाथ से भी प्रसाद की अवज्ञा जानकर उसको कटवा दिया। रानियों ने अपने-अपने पुत्रों को बिष ही दे दिए।

2. मीराबाई-भक्तमाल में मीराबाई के संबंध में नाभादास के एक छप्पय के अतिरिक्त प्रियादास ने 10 (दस) कवित्तों में परंपरा से सम्बद्ध सारी कथाओं का निर्देश कर दिया है–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीरा जोधपुर के मेरते के राजा रत्नसेन की कन्या थी। इनका विवाह मेवाड़ के राजा साँगा के पुत्र भोज राजा से हुआ। मीरा प्रारंभ से भी प्रभु को समर्पित थी, सांसारिकता उन्हें छू तक नहीं सकी।

लोक लाज कुल-शृंखला तजि मीरा गिरिधर भजी ।
सदृश गोपिका प्रेम प्रगट, कलिजुगहि दिखायौ ।।
निरअंकुश अति निडर रसिक जस रसना गायौ ।।
दुष्टनि दोष विचारि मृत्यु को उद्दिम कीयौ ।
बार न वाकौ भयो, गरल अमृत ज्यो पीयौ ।।
भक्ति निसान बजायकै, काहू ते नाहिन लजी ।
लोक-लाज कुल शृंखला तजि मीरा गिरिधर भजी ।। '

छंद 115

मीराबाई पर इतिहास ग्रन्थों और स्वतन्त्र ग्रंथों में पर्याप्त लिखा जा चुका है। मीराबाई का काव्य उनके हृदय से निकले सहज प्रेमोच्छ्वास का साकार रूप है। उनकी वृत्ति एकान्ततः और समग्रतः प्रेममाधुरी में ही रमी है।[2]

(3) श्रीराम रयन की पत्नी (छंद 120) इनमें श्री हरि, श्री गुरु और हरिभक्तों को प्रति प्रीतिभाव। नवधा और दशधा (प्रेमा) भक्तियों में 'प्रेम' । श्री मुगल सरकार की दासता अनन्यता और संतसेवा में उदारता प्रधान थी।

कात्यायनी जी (छंद 127)

कात्यायनी ने गोपी प्रेम को प्रत्यक्ष करके दिखला दिया-

कात्यायिनी के प्रेम की बात जात कापै कही ।।
मारग जात अकेल, गान रसना जु उचारै ।
ताल मृदंगी वृक्ष, रीझि अंबर तहँ डारै ।।
गोप नारि अनुसारि गिरा गदगद आवेशी ।
जग प्रपंच ते दूरि, अजा परसै नहि लेसी ।।
भगवान रीति अनुराग की, संत साखि मेंली सही ।
कात्यायनी के प्रेम की, बात जात कापै कही ।।
इसमें प्रेमलक्षणाभक्ति की यथार्थ अभिव्यक्ति है ।

छंद । 127

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती रत्नावती (छंद 142)

आमेर के राजा पृथ्वी राज के कुल की वधू रत्नावती जी हरिभक्तों की महारानी बनी। सत्संग, कथा, कीर्तन में अतिशय प्रेम, हरिभक्तों की सेवा, नन्दलाल से प्रेम, लोकलज्जा का त्याग और भक्ति के विरोधी पतिका त्याग । प्रियादासजी ने 17 छंदों में इनकी कथा लिखी है।

करमैती जी

कृष्ण प्रेमिका करमैती ने सांसारिक संबंधों को तोड़कर प्रेमलक्षणा भक्ति की। कांथडया कुल की वधू ने वृन्दावन में रहकर भक्ति की/ प्रियादास ने 8 छंदों में इनकी भक्ति का विवेचन किया है।

देवी गोपाली जी (छंद 195)

देवी गोपाली की भक्ति का वर्णन करते हुए नाभादास जी ने लिखा है कि हरिभक्तों के पोषण के लिए मानों यशोदा ने अवतार लिया था। वात्सल्य रस की भक्ति से उन्होंने श्री कृष्ण को रिझाया ।

'गोपाली जनपोषकों जगत जसोदा अवतरी ॥' छंद 195

श्रीलालमती देवी जी

दुर्लभ मानुष देह कौं लालमती लाहौ लियौ ॥
गौर स्याम सों प्रीति, प्रीति जमुना कुंजनि सों ।
बंसीबट सों प्रीति, प्रीति ब्रजरज पुंजनि सों ॥
गोकुल गुरुजन प्रीति, प्रीतिधन बारहबन सों ।
पुर मथुरा सों प्रीति प्रीति गिरि गोवर्द्धन सों ।
बास अटल बृन्दावन विपिन, दृढ़करि सो नागरि कियौ ।
दुर्लभ मानुष देह कौं, लालमती लाहौ लियौ ॥

छंद-199

लालमती देवी के बहाने नाभादास जी ने प्रेमलक्षणाभक्ति का स्वरूप निर्दिष्ट कर दिया है। भक्ति में नाम, रूप, लीला और धाम का स्मरण अनिवार्य माना गया है। इसमें गौर श्याम (राधाकृष्ण) से प्रेम ।

यमुना कुंजों से प्रेम, वंशीवट से प्रीति, ब्रजरज्ज से प्रेम, गोकुल वासियों से प्रेम, बारह वनों से प्रीति, मथुरा से प्रेम, गिरिगोवर्धन से प्रेम और वृन्दावन में वास।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि नाभादास जी ने भक्तमाल में नारियों में कृष्ण भक्ति की प्रधानता दिखलाई है। कृष्णभक्ति का सर्वोत्तम स्वरूप मीराबाई की रचनाओं में अतः विस्तृत विवरण दिया जा रहा है।

नरसी मेहता

'भक्तमाल' में गुजरात के सुप्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता से संवद्ध छंद इस प्रकार है–

जगत् विदित नरसी भगत (जिन) गुज्जर धर पावन करी ॥
महा स्मारत लोग भक्ति लौ लेस न जानैं।
माला-मुद्रा देखि तासु की निन्दा ठानैं॥
ऐसो कुल उत्पन्न भयौ भागौत सिरोमनि।
ऊसर तें सर कियौ, खंड दोषहिं खोयो जिनि।
बहुत ठौर परचौ दियौ रसरीति भक्ति हिरदै धरी।
जगत विदित नरसी भगत (जिन) गुज्जर धर पावन करी।

–छंद 148

श्री नरसी जी संपूर्ण संसार में प्रसिद्ध भक्त हुए, जिन्होंने गुजरात प्रान्त को पावन किया। उस समय गुजरात के निवासी महास्मार्त (कर्मकांड में आसक्त) थे, भक्ति-भजन को बिल्कुल नहीं जानते-मानते थे। किसी को तुलसी की कंठी-माला, वैष्णवी तिलक (ऊर्ध्व पुण्ड्र) शंख-चक्रादि मुद्रा धारण किए देखे, उसकी बड़ी ही निन्दा करते थे। ऐसे देश-कुल एवं वायुमंडल में उत्पन्न होकर भी नरसी जी वैष्णवभक्तशिरोमणि हुए। ऊसर के समान उस देश को सुन्दर हरा-भरा, भक्तिरस से परिपूर्ण सरोवर बना दिया। देश के दोषों को नष्ट कर दिया आपने, अनेक स्थानों पर भक्तिपूर्ण चमत्कार दिखलाए जिसमें रस की रीतियों का संपूर्ण रूप से संगम होता है, ऐसी माधुर्य रसभयी भक्ति को आपने हृदय में धारण किया। छंद-108 ॥

नरसी मेहता ने कृष्णभक्ति की प्रेमानुगाभक्ति को रसात्मक भूमिका प्रदान की। भक्तमाल के अनुसार ये गुजरात जूनागढ़ के रहने वाले थे। इन्होंने अपने एक पद में स्वयं लिखा है कि नागर ब्राह्मण थे। समय इनका निश्चित नहीं, किन्तु सं 1550 से 1650 के भीतर होना निश्चय है क्योंकि नरसी जी ने एक पद में कबीर जी और नामदेव जी का नाम लिखा है और इधर नरसी जी का चरित्र नाभा जी ने भक्तमाल में लिखा है, इससे निस्संदेह इतने समय के बीच में ही इनका प्रादुर्भाव हुआ था।[3]

नरसी मेहता गुजराती भाषा के सबसे प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय वैष्णव कवि हैं। इनकी अधिकांश कविता राधाकृष्ण की ललित लीलाओं को आश्रित कर लिखी गई हैं। इन्होंने अपनी कविता के द्वारा श्री राधाकृष्ण की विमल भक्ति का प्रचुर प्रचार गुजरात देश में किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्होंने राधाकृष्ण के गीत अनेक भाँति से गायें, जिनमें शृंगार रस का प्राधान्य है। इनकी भाषा गुजराती है, पर इन्होंने हिन्दी में भी रचनाएँ कीं। बृहत् काव्य दोहन' के सातवें भाग में इनकी गुजराती रचनाओं का संग्रह है। इन्होंने अधिकतर राग-रागनियों में पद ही लिखे हैं जिनमें 'कृष्णजन्मनी' बधाई ना पद, श्रीकृष्ण विहार, श्रीकृष्ण जन्म समानापद, ज्ञान वैराग्यानां पदी हैं। इन्होंने पदों के साथ-साथ साखियाँ भी लिखी हैं, पर इनकी साखियाँ कबीर की साखियों से भिन्न हैं– उदाहरणार्थ–

दे दर्शन दयाल जी, हरिजन नी पूरी आरे।
कहे नर सैया आसा घणी, गुनेचरणे राखो पासरे ॥

श्रीकृष्ण विहार के अन्तर्गत नरसिंह मेहता का एक पद इस प्रकार है–

जसोदाना आंगसीस सुन्दर शोभा दीसेरे।
मुक्ताफल नां तोरण बांध्यां, जोई जोई मनहुँ हीसे रे।
महाला महाल करे मानुनी आनन्द उर न माँय रे।
केसर कुंकुम चर्ये सहुने, घरे घरे उच्छव धाय रे ॥

जशोदा ने धन धन लीला नन्द सुवन की प्रकट्या ते पूरण ब्रह्म रे।

रंग रेल नरसैयो गायो मन बाढ़यो आनन्द रे। नरसिंह के पदों में भक्ति और शृंगार समानान्तर धारा में प्रवाहित होते हैं। भाषा में सरलता और सरसता दोनों हैं।[4] नरसी मेहता की प्रशंसा में ध्रुवदासजी ने 'भक्तनामावली' में लिखा है–

नरसी हो अति सरस हिय, कहा देउँ समतूल।
कहेउ सरस शृंगार रस, जानि सुखनि को मूल ॥
दीनी ताकों रीझि कै माला नन्दकुमार।
राखि लियो अपनी शरण, विमुखनि मुख दै छार ॥
जहँजहँ भक्तन को कछू, परत है संकट आनि।
तह तहँ आपन वीचि ह्वै, धरत अभय को पानि ॥[5]

नरसी मेहता की पावन गाथा

(प्रियादास जी टीका में)

भक्तमाल 108 पर प्रियादास जी ने 27 छंदों (बंद 429-455) में टीका लिखी हैं, उससे नरसी मेहता के जीवन की रसमयी कथा स्पष्ट होती है उसे निम्नांकित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है।

1. नरसी का गृहत्याग ।
2. भगवान् शंकर द्वारा नरसी को कृष्णभक्ति का बरदान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3. नरसी का शिव सहचरी बनकर रासमण्डल का दर्शन करना ।

4. श्रीकृष्ण द्वारा नरसी को भक्ति का उपदेश तथा नरसी का गृहस्था श्रम में प्रवेश।

5. नरसी द्वारा श्री साँवलशाह के नाम हुण्डी लिखना ।

6. नरसी के भक्तिभाव का विलक्षण प्रभाव ।

7. नरसी द्वारा दो गायिकाओं को भगवत्प्रेम की महिमा बतलाना ।

8. नरसी के भगवन्नाम - संकीर्तन का प्रभाव ।

9. नरसी द्वारा भगवान् को केदारा राग सुनाने की कथा भगवान् श्रीकृष्ण तथा रूक्मिणी द्वारा नरसी के पुत्र का विवाह संपन्न कराना ।

नरसी जी की जीवन-कथा ऐसी है, जो प्रायः भगवद्ध भक्तों के जीवन में घटती है। इन्हें अपने शाक्त भाई और क्रोधमूर्ति भौजाई के ताने से वैराग्य हो गया और घर से निकल गए। एक शंकर जी के मंदिर पर बिना कुछ खाये-पीये पड़े-पड़े सात दिन बीत गए। शंकरजी प्रकट हुए और इन्हें बरदान के रूप में श्रीकृष्ण प्रेम प्रदान किया और नरसी जी को सुन्दर सखी स्वरूप प्रदान कर स्वयं भी त्रिलोचना सखी रूप धारण कर साथ-साथ वृन्दावन धाम आए और रासमण्डल पर अगणित ब्रजगोपियों के मध्य श्री राधाश्याम सुन्दर का दिव्यदर्शन नरसीजी को कराया शंकर जी के आदेश से इन्होंने विवाह किया। उससे दो पुत्रियाँ-कुंवर बाई और रतनबाई) और एकपुत्र श्यामलदास हुआ। गृहस्थाश्रम में रहते हुए इन्होंने भक्ति की साधना की।

भक्तनरसी जीने ने एक हुण्डी साधु-संतों को दे दी। हुण्डी लेकर साधु-महात्मा द्वारकापुरी पहुंचे और वहाँ के बाजार में साँवल शाह की कोठी ढूँढ़ते थक गए। सन्तों को व्यथित देखकर श्री नरसी जी की हुण्डी चुकाने के लिए श्री द्वारकाधीश भगवान् सेठ का रूप धारण कर कन्धे पर रूपयों की भरी थैली रखकर सन्तों के निकट पधारे और बोले "श्री नरसी जी की हुण्डी किसके पास है? जिसके पास हो वह आकर अपने रुपए गिन कर ले ले।" नरसी जी को एक चिट्ठी भी दे दी कि मेरे पास रुपयों की कमी नहीं है आप बार-बार हुंडी लिखकर भेजा करें। सन्तों ने वह चिट्ठी नरसी जी को दी, उसे पाकर नरसी जी प्रेमानन्द में डूब गए और उन्होंने सन्तों को गले लगा लिया।

नरसी जी के भक्तिभाव से अभिभूत भगवान् ने और करामात का काम किया। इनकी लड़की ससुराल में थी, उसके लड़का हुआ था। लोकरीति के अनुसार इन्हें छूछक देना चाहिए, पर इनके पास कुछ न था। अतः वह कुछ न दे सके। लड़की की सास नित्य ही गालियाँ बकती । नरसी जी ने भगवान् को स्मरण किया। भगवत्कृपा से अगणित पोशाकें-वस्त्राभूषण आकर कोठरी में भर गए। अपने पिता के प्रभाव को देख कर उनकी पुत्री अपने अंग में फूली नहीं समायी थी । अपने पति, सास, ससुर आदि को बुलाकर अपने पिता के साथ अपने घर को चली आयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(3) भगवान् श्रीकृष्ण तथा रूक्मिणी द्वारा नरसी के पुत्र का विवाह-

नरसी जी के पुत्र का विवाह था। इसकी चिन्ता इनको नहीं। भगवान् श्रीकृष्ण रूक्मिणी के साथ आए। विवाह के प्रबंध की चिन्ता भगवान् को, नरसी जी मस्त। 'प्रभु! तुम जानो और तुहारा काम जाने, जो चाहो, सो करो। मुझे तो आनन्द इसमें है कि आपके इस सुन्दर स्वरूप को हृदय में धारण कर लूँ और कमर कसकर करताल लेकर आपका गुणानुवाद गाऊँ।'' भगवान् श्रीकृष्ण ने कन्यापक्ष का सारा कार्यभार श्री बलराम जी को सौंप दिया। बड़े समारोह के साथ श्री नरसी जी के पुत्र का विवाह हुआ। घराती-बराती सभी भक्तिभाव से विभोर हो गए।

मीराबाई (सन् 1498-1562)

लोक लाज कुल-शृंखला तजि मीरा गिरिधर भजी ॥
सदृश गोपिका प्रेम प्रगट कलिजुगहिं दिखायौ ।
निरअंकुस अति निडर रसिक जस रसना गायो ॥
दुष्टनि दोष बिचारि मृत्यु को उद्दिम कीयौ ।
बार न बाँकौ भयो, गरल अमृत ज्यों पीयौ ॥
भक्ति निसान बजाय कै, काहू ते नाहिन लजी ।
लोक लाज कुल-शृंखला तजि मीरा गिरिधर भजी ॥115॥

भक्तमाल-115

भक्तिमती मीराबाई ने लोक-लाज और कुलरीति की शृंखला (बेड़ी) को तोड़कर श्री गिरिधरलाल जी का भजन किया। कलियुग में गोपिकाओं के समान प्रेम प्रगट किया (प्रत्यक्ष दिखाया) स्वच्छन्द और निडर होकर रसिक शिरोमणि लाल के सुयश का गान किया। इस प्रकार की भक्ति को दुष्टों (राजा) ने अनुचित माना और सोच-विचार कर इनकी मृत्यु का उपाय किया। इन्हें पीने के लिए विष दिया, उसे ये अमृत की तरह पी गयीं। भगवत्कृपा से आप का बाल भी बाँका न हुआ। भक्ति का डंका बजाकर इन्होंने बिना किसी लोक-लज्जा और संकोच के श्री गिरिधर गोपालजी का भजन किया।।115।।

नाभादास जी के इस छप्पय पर प्रियादास जी ने दस कवित्तों (10) में परंपरा से संबद्ध सारी कथाओं का निर्देश कर दिया है। उन्हें यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है। मीराबाई जोधपुर राज्यान्तर्गत मेड़ता नगर के राव रत्नसेन की बेटी थीं और परमवीर-परमवैष्णव जयमाल की बहिन थीं। इनका विवाह मेवाड़ के सुप्रसिद्ध राजा सांगा (संग्राम सिंह) के कुँवर भोज राज से हुआ था। विवाह के कुछ ही दिनों बाद इनकी मृत्यु हो गई। मीरा बचपन से ही श्री गिरिधरलाल ठाकुर के रंग में रंग गई थी। जब इनका विवाह हुआ तो इन्होंने श्री गिरिधर जी को भाँवरी के समय बीच में कर लिया था। मीरा का अधिकांश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय साधु संग में वीतता । इनकी ननद ने इन्हें बहुत समझाया, पर मीरा ने कहा मेरे प्राण सदा साधुओं के साथ लगे रहते हैं। इसलिए उनके संग में मुझे अपार सुख प्राप्त होता है। मेरे आचरणों से जिसे दुख प्राप्त होता हो, उसे मुझसे बिल्कुल अलग रखो। इनकी यह सुनकर राजा ने एक कटोरा विष भगवच्चरणा मृत कहकर भेज दिया। मीरा ने प्रसन्नतापूर्वक पी लिया। पी लेने के बाद इनके अंग में एक विशेष प्रकार की कान्ति दिखलाई पड़ने लगी।

मीरा के सतीत्व की परीक्षा के संदर्भ का उल्लेख भी इस प्रकार किया गया है। एकबार एक कामी नीच मनुष्य साधु का वेष धारण कर मीरा के पास आया और बोला 'तुम्हारे ठाकुर श्रीगिरिधारी लाल जी ने स्वयं मुझे आज्ञा दी है कि मीरा के साथ अंग-संग करो। इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ, तुम मेरे साथ अंग-संग करो।' मीरा ने कहा, आज्ञा स्वीकार है, परन्तु प्रथम आप भोजन कीजिए, फिर आप की समुचित सेवा होगी। उसने भोजन किया। मीरा ने संतों के बीच में शय्या विछाकर उस विषयी पुरुष को ठाकुरजी की आज्ञा के अनुसार करने को कहा। वह बड़े संकोच में पड़ गया। मीरा की भक्ति भाव ने उसकी विषय वासना दूर हो गयी, बह तत्काल पैरों पर गिर गया और रोता हुआ अब आप मुझे भक्ति का दान दीजिए। मीराबाई के बिलक्षण व्यक्तित्व की चर्चा सुनकर अकबर बादशाह तानसेन के साथ आए। श्री गिरिधरगोपालजी की छवि और मीरा की भक्ति देखकर बादशाह निहाल हो। गया। तानसेन ने एक सुन्दर पद गाया और बादशाह ने एक मणिमाला ठाकुर जी के चरणों में अर्पण की। मीराबाई वृन्दावन आईं, वहाँ जीव गोस्वामी जी से मिलीं और उनके स्त्री-मुख न देखने के प्रण को छुड़ा दिया।

अंत में मीराबाई ने अपने को द्वारकाधीश के चरणों में अर्पित कर दिया। इधर राणा जी भी मीरा की भक्तिभावना से प्रभावित हुए। उन्हें बड़ा भारी मानसिक पश्चाताप हुआ। उन्होंने बहुत से ब्राह्मणों को द्वारका भेजा और उनसे कहा कि 'जैसे भी बने आप लोग मीराबाई को ले आइए । वे आकर मुझे प्राणदान देकर जीवित करें। 'ब्राह्मणों' ने द्वारका जाकर राणाजी की विनती सुनाई । परन्तु वे द्वारका से वापस लौटने को तैयार न हुई। तब ब्राह्मण अन्न-जल त्याग कर मीरा जी के द्वार पर धरना देकर पड़ गए। ब्राह्मणों के हठ को देखकर इन्होंने कहा, अच्छा तो मैं श्री रणछोड़ लाल जी से विदा हो आऊँ ।' ऐसा कहकर वे मंदिर में गयीं। भगवान् के सन्मुख विनती करते हुए, इन्होंने इस आशय का एक पद गाया कि प्रभु मुझ दीन हीन को अपने चरणों में रखिए अथवा त्याग कर दीजिये। जैसी आप की इच्छा! पद-कीर्तन एवं नृत्य करते मीराबाई श्री रणछोड़ जी में लीन हो गईं। इसके बाद फिर किसी ने उनका दर्शन नहीं पाया-"अब तक रण छोड़ जी के साथ मीराबाई की सेवा होती है। इनका ऐतिहासिक चरित्र जोधपुर के मुंशी देवी प्रसाद ने बहुत अच्छा लिखा है।"[6]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीराबाई की भक्तिभावना

'भक्तमाल' में मीराबाई के संदर्भ में जो यह पंक्ति "सदृश गोपिका प्रेम प्रगट कलिजुगहिं दिखायौ' इसका रहस्य क्या है? यह 'गोपिका-प्रेम' भक्तिशास्त्र के आचार्य नारद की भक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण है-'यथा- ब्रजगोपिकानाम' (जैसे ब्रज गोपिकाओं की भक्ति) इस प्रकार की भक्ति में अपने सब कर्मों को भगवान् को अर्पण करना और भगवान् का थोड़ा-सा भी विस्मरण होने में परम व्याकुल होना अनिवार्य है। भक्तिशास्त्र के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ श्रीमद् भागवत में ब्रज की गोपियों में गेह-शृंखला को तोड़ने वाली गोपियों को धन्य कहा गया है-

न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां
स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापिवः ।
या मा भजन दुर्जर गेह-शृंखलाः
संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना ॥

—भागवत 10/32/22

यह गोपी भाव रस साधना का प्रमुख भाव है। इसमें काम की नहीं प्रेम की प्रधानता रहती है। काम दूसरों के द्वारा अपनी तृप्ति चाहता है, परन्तु प्रेम अपने द्वारा प्रेमपात्र की तृप्ति चाहता है और उसी के आनन्द से स्वयं आनन्द का अनुभव करता है।

चैतन्य चरितामृत (कृष्णदास कविराज) ने प्रेम और काम के इस परस्पर पार्थक्य का बड़ा सुन्दर विश्लेषण किया गया है-

आत्मेन्द्रिय प्रीति इच्छा, तार नाम काम ।
कृष्णोन्द्रिय प्रीति इच्छा, धरे प्रेमनाम ॥
कामेर तात्पर्य निज संजोग केवल ।
कृष्ण सुख तात्पर्य प्रेम तो प्रबल ।
आत्म दुख सुख गोपी ना करै विचार ।
कृष्ण सुख हेतु करे सब व्यवहार ॥

× × ×

अतएव गोपी गणे नाहि कामगन्ध ।
कृष्ण सुख हेतु मात्र कृष्णोर संबंध ॥

इस प्रकार गोपी भाव के परिचायक ये तत्त्व हैं-

(1) समग्र स्वत्व तथा संपत्ति को भी श्रीकृष्ण के प्रति समर्पितकर देना।

(2) एक क्षण के लिए भी कृष्ण की विस्मृति में नितांत व्याकुलता ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(3) श्रीकृष्ण के माहात्म्य तथा संपत्ति को भी श्रीकृष्ण के प्रति समर्पितकर देना।

(2) एक क्षण के लिए भी कृष्ण की विस्मृति में नितांत व्याकुलता।

(3) श्रीकृष्ण के माहात्म्य तथा यश की महिमा का पूर्णज्ञान।

(4) श्रीकृष्ण के सुख में अपना सुख मानना तथा उनके आनन्दित होने पर स्वतः आनन्दित होना।[7]

अष्टछाप के मान्य कवि परमानन्द की दृष्टि में गोपी–

ये हरि रस ओपी गोपी सब तियतें न्यारी।
कमलनयन गोविंद चंद की प्रान पियारी।
निरमत्सर जे संत तिनहिं चूड़ामनि गोपी।
निर्मल प्रेम प्रवाह सकल मरजादा लोपी।
जे ऐसे मरजाद मेटि मोहन गुन गावै।
क्यों नहि परमानंद प्रेम-भगती-सुख पावैं॥

मीरा में माधुर्य भाव की भक्ति

आचार्यों ने भक्ति के जो पंचभाव (शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर (माधुर्य) बतलाए हैं, मीरा में माधुर्य भाव की प्रधानता है इसमें आराध्य और आराधक के बीच पति-पत्नी या प्रिय-प्रिया का संबंध होता है। मीरा भी गिरिधर लाल को अपना पति, सैंया, पिय, भरतार आदि कहती हैं, उनसे तो मीरा का वस्तुतः विवाह हुआ है, वह स्पष्ट कहती हैं–

मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरोपति सोई।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई॥

नारी होने के कारण मीरा की माधुर्योपासना में कुछ ऐसी स्वाभाविकता और रमणीयता है, जो अन्यत्र नहीं मिलती। "माधुर्यभाव के अन्यान्य भक्त कवियों की भाँति मीरा का प्रेम-निवेदन और विरह-व्याकुलता अभिमानाश्रित और अध्यंतरित नहीं है। बल्कि सहज और साक्षात् संबंधित है। इसीलिये इन पदों में जिस श्रेणी की अनुभूति प्राप्त होती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। वह सहृदय को स्पंदित और चालित करती है और अपने रंग में रँग डालती है।"[8]

माधुर्य भक्ति से संबद्ध (विरह जन्य) जितनी मानव स्थितियाँ हो सकती हैं, उनका रसपेशल वर्णन मीरा के काव्य में उपलब्ध है। मीरा ने गिरिधरलाल को पूरी तरह एक अपना लिया है, उन्हें मोल ले लिया है, के अब मीरा के हृदय देश में बंदी हैं–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माई री मैं तो गोविंदो लीनो मोल।
कोई-कहै छाने कोई चौड़े लीनो री बजतां ढोल ।।

मैंने डंके की चोट गोविंद को मोल ले लिया। लोग चाहें जो कहें, मैंने तो उन्हें रूवरू देख लिया, अपना लिया—अपने हृदय के अंदर कैद कर लिया। मीरा की आँखों में, प्राण में, रोम-रोम में त्रिभुवन सुंदर की मोहनी मूर्ति बसी हुई है—

वसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरत साँवली सूरत, नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत उर बैजंती माल ।।
छुद्र घंटिका कटितट सोभित नुपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भगतबछल गोपाल ।।

—मीरापदावली-2

मीरा ने जिन पदों में प्रेम और तज्जन्य विरह की व्यंजना की हैं, वस्तुतः मीरा के कवित्व के ये ही पद प्राण हैं—

आली रे मेरें नैनां बान पड़ी।
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।।
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण पिया विन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ।।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहैं बिगड़ी ।।

मीरापदवली-पद-9

दरस बिन दूखन लागे नैन।
जब से तुम बिछुड़े मोरे प्रभुजी, कबहुँ न पायौ चैन।
सबद सुनत मेरी छतिया कम्पे, मीठे लागै बैन।
बिरह-बिथा कासूँ कहुँ सजनी। बह गई करवत अैन।
कल न परत हरि मग जोवत, भई छमासी रैण।
मीरा के प्रभु! कब रे मिलो गे, दुःख मेटरा सुख दैण।

—मीराबरावली - 73

मीरा के कुछ ऐसे भी पद हैं जिन्हें विनय की कोटि में रख सकते हैं—

मन रे परसि हरि के चरन
सुभग सीतल कमल को मल, त्रिविध ज्वालाहरण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेचरण प्रह्लाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।।
जिन चरण ध्रुवअटल कीने, राखि अपनी शरण ।।
× × × ×
दरस मीराँ लाल गिरिधर अगम तारणतरण ।

—मीरा पदावली पद-1

मीरा को कविरूप में भी सफलता मिली है, कविता को कला से परे, अलंकारों से अतीत, हृदय की स्वाभाविक और सरस अनुभूतियों का सरलंतम और स्पष्टतम अभि व्यंजना के रूप में समझते हैं, उन्हें मीराँ के पदों में उच्चतम कोटि की कविता के दर्शन होंगे।"[10]

भक्तमाल में श्री जगन्नाथ जी के भक्त

वैष्णवधर्म का प्रभाव जब उड़ीसा पर पड़ने लगा तो 16वीं शताब्दी में चैतन्यदेव ने जगन्नाथ क्षेत्र को अपनी भक्ति और तपस्या का मुख्यकेन्द्र बनाया और बंगाल से आकर वे यहीं रहने लगे। उनका आगमन उत्कल देश में धर्म तथा क्रान्ति का युग है। पुरी के जगन्नाथ या पुरुषोत्तम सर्वप्रसिद्ध उपास्थदेव हैं और वे वस्तुतः विष्णु भगवान् के ही प्रतीक है। जगन्नाथ को लोग सर्वसम्मति से कृष्ण-वासुदेव का प्रतीक मानते हैं। और बलराम और सुभद्रा उनके भाई-बहन है।

भक्तमाल में जगन्नाथ जी के पाँच भक्तों की कथा है—

1. माधवदास छंद 70 ।
2. रघुनाथ गोसाईं-छंद 71
3. लाखाजी-छंद 107
4. अंगद जी छंद 113
5. कल्याणदासजी छंद 189

श्रीमाधवदास जी जगन्नाथी—

बिनै व्यास मनो प्रगट ह्वै जग को हित माधो कियो ।
पहिले बेद विभाग कथित पुरान अष्टा दस ।
भारत आदि भागौत मथित उद्धारयौ हरिजस ।
अक सोधे सब ग्रन्थ अर्थ भाषा विस्तारयौ ।
लीला जै जै जैति गाय भवपार उतारयौ ।।
जगन्नाथ इष्ट वैराग्य सींव करुणारस भीज्यौ हियौ ।
बिनै व्यास मनो प्रगट ह्वै जग को हित माधौ कियौ ।।

—छंद-70

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"विनय की मूर्ति भगवान् वेद व्यास जी ने ही मानो श्री माधोदास जी के रूप में प्रकट होकर जगत् का कल्याण किया। श्री वेदव्यासजी ने पहले (द्वापर में) वेद का विभाजन किया तथा अठारह पुराणों का यानि फिर महाभारत की रचना की। चारो वेद, सत्रह पुराण एवं महाभारत का मंथन करके नवनीत रूप में श्री मद्भागवत नामक अट्ठारहवें पुराण की रचना की। अब श्री माधोदास के रूप में प्रकट होकर पुन आपने सब ग्रन्थों के तात्पर्य को खोज-खोजकर उनका अर्थ बोलचाल की भाषा में विस्तार से वर्णन किया। 'जै' 'जै' शब्द संयुक्त भगवान् की लीला का गाकर जगत् में प्रचुर प्रचार करके असंख्य जीवों को संसार सागर से पार किया। इनके इष्ट श्री जगन्नाथ भगवान् थे। वे वैराग्य की सीमा थे। इनका हृदय करुणा रस से सदा सराबोर रहता था।

माधवदास जी से सम्बद्ध घटनाओं का वर्णन प्रियादास जी ने (टीका 315-326) 12 छंदे में किया है। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। बड़े विद्वान और धार्मिक भक्त थे। धर्मपत्नी के स्वर्गस्थ होने के बाद इन्होंने जगन्नाथ पुरी का रास्ता पकड़ा। वहाँ पहुँच कर समुद्र के किनारे अपने को भगवद्ध्यान में तल्लीन कर दिया कई दिन तक बिना अन्न-जल के बीत गए। दयालु जगन्नाथ जी ने लक्ष्मी जी को आज्ञा दी कि आप स्वयं उत्तम से उत्तम भोग सुवर्ण थाल में रखकर मेरे भक्त माधव के पास पहुँचा दें। लक्ष्मी जी सुवर्णथाल सजाकर कर माधव दास जी के पास गईं और थाल रखकर चली आयीं। ध्यान समाप्त होने पर माधवदास जी ने भगवत्कृपा का अनुभव कर भोग लगाकर प्रसाद पा कर थाल को एक ओर रख दिया, फिर ध्यान मग्न हो गए। उधर अब भगवान के पट खुले तो सोने का एक थाल न देखकर बड़ा शोर-गुल मचाया। पुरी भरमें तलाशी होने लगी। ढूँढ़ते-ढूँढते थाल माधवदास जी के पास पड़ा पाया गया। माधवदास को चोर समझकर उन पर चावुक पड़ने लगे। रात्रि में पुजारियों को भगवान् ने स्वप्न में कहा, मैंने माधव की चोट अपने ऊपर ले ली, अब तुम्हारा अनिष्ट कर दूँगा, उनके चरणों पर पड़कर अपने अपराध क्षमा करवा लो, बेचारे पंडे माधवादासजी के चरणों पर गिर पड़े। इन्होने तुरंत क्षमा प्रदान कर उन्हें निर्भय कर दिया।

माधवदासजी से संबद्ध ऐसी कई कथाएँ भक्तमाल की टीका में आयी हैं–जाड़ा में भगवान द्वारा रजाई ओढ़वा देना, बीमार पड़ने पर स्वयं शुश्रूषा करना, स्वयं शास्त्रार्थ कर माधवदास को विजयी बनाना आदि अनेक कथाएँ आईं हैं। ये एक अच्छे कवि थे और प्रायः कविता में श्री जगन्नाथ जी का नाम रखते थे।

"श्री जगन्नाथ राय चिरजीवो सबको भलो मनावो।
बाढ़ै वंश नंदबाबा को माधोदास जस गायो॥"

ये श्री बल्लभाचार्य महाप्रभु के समसामयिक थे। ये संस्कृत के भी पण्डित थे और बड़े बड़े वादियों को परास्त किया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगन्नाथ वत्सल भगत कीनौ जस विस्तार।
माधोहि भूखो जानि कै ल्याए भोजन थार॥
एक समय निसि सीतसों काँपन लाग्यौ गात।
आनि उढ़ाईतिहि समै, अपने कर सकलात,

भक्तनामावली—100 और 101

श्री रघुनाथ दास गोस्वामी जी

श्रीरघुनाथ गुसाईं गरुड़ ज्यौं, सिंह पौरि ठाढ़े रहैं।
सीत लगत सकलात विदित पुरुषोत्तम दीनी।
सौच गये हरि संग कृत्य सेवक की कीनी।
जगन्नाथ पद प्रीति निरंतर करत खवासी।
भगवत् धर्म प्रधान प्रसन्न नीलाचल बासीं॥
उत्कल देस उड़ीसा नगर, वैनतेय सब कोउ कहैं।
श्री रघुनाथ गुसाईं गरूड़ ज्यों, सिंह पौरि ठाढ़े रहैं॥

।।छंद 71।।

श्री रघुनाथ गोस्वामी जी गरुड़ जी की तरह श्री जगन्नाथ भगवान् के सम्मुख सिंह पौरि पर खड़े रहते थे। यह बात सर्वप्रसिद्ध है कि इन्हें ठण्डक लगने पर श्री रघुनाथ जी ने अपनी रजाई ओढ़ा दी थी। अतिसार के कारण बारंबार दस्त का बेग लगने पर भगवान् ने सेवक का-सा कार्य किया। उनका श्री जगन्नाथ भगवान् के चरण कमलों में परम अनुराग था। ये वैष्णव धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते थे। श्री नीलाचल धाम में निवास करते थे। उत्कल प्रान्त में उड़ीसा नगर के रहने वाले सब लोग इन्हें श्री गरुड़जी कहा करते थे।।77।।

प्रियादासजी के अनुसार बंगाल में दो धनी महाजन रहते थे। लोग ठेकेदार थे। संपन्न थे। ऐसे परिवार में रघुनाथ का जन्म हुआ था। ऐसे वैभवपूर्ण घर को छोड़कर इन्होंने जगन्नाथ पुरी में निवास किया। एक बार बड़े जोर की सर्दी लगने पर भगवान् ने अपनी रजाई ओढ़ाई। भक्त प्रभु चैतन्य की आज्ञा से वृन्दावन आए और राधाकुण्ड पर रहने लगे।

श्रीलाखा जी

परमहंस वंसनि मैं, भयौ विभागी बानरौ॥
मुरधर खण्ड ।नवास भूप सब आज्ञाकारी।
राम नाम विश्वास भक्त पद रज व्रतधारी।
जगन्नाथ के द्वार दँडौतनि प्रभु पै धायौ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दई दास की दादि कुंडी करि फेरि पठायौ ॥
सुरधुनी ओघ संसर्ग ते नाम बदल कुच्छित नरौ ।
परमहंस बंसंनि मैं भयौ विभागी बानरौ ॥107॥

भक्तवर लाखा जी मारवाड़ के अन्तर्गत मुरधर खंड के निवासी थे। बड़े-बड़े राजा-महाराजा के आज्ञाकारी थे।, आप का रामनाम में अविचल विश्वास था और भगवद् भक्तों की चरण-रज को सिर पर धारण करने का दृढ़ नियम था। श्री जगन्नाथ जी का दर्शन करने घर से दण्डवत् यात्रा करते हुए आप उनके द्वार पहुँचे भरावान् ने अपने दास की सहायता की और कन्या के विवाह के लिये हुण्डी कराकर भेजा। जैसे एक गंदा नाला भी गंगा जी की धारा मे मिल कर गंगा रूप हो जाता है और उसका नाम बदल जाता है, उसी प्रकार वानर वंश में भी उत्पन्न ह ोकर भी श्री लाखाजी परमहंसों के वंश की कमनीय कीर्ति, पावन-पुण्य गान, साधन-भजन और भक्तिभाव में हिस्सेदार हुए ।।108।।

श्रीलाखा जी मारवाड़ के वानरवंशी थे। इनकी जाति के लोग राज-दरबार में नृत्य गानकर आजीविका चलाते हैं। ये नित्यसाधुओं की सेवा करते। भगवत्कृपा से इनके घर गाड़ी भर गेहूँ और एक भैंस आयी। इससे ये साधु-सेवा करते थे।

लारवा जी की एक कन्या गंगा वाई थी, वह विवाह के योग्य हो गयी थी। श्री जगन्नाथ जी ने लारवा जी से कहा कि तुम अपनी लड़की का विवाह करने के लिए मुझसे धन ले लो और उसका विवाह कर दो। परन्तु लारवा जी के मन में यह बात ठीक नहीं जँची। श्री जगन्नाथ जी ने अपने एक भक्त राजा को धन देने की आज्ञा दी। राजा ने चौकीदार बैठा दिए उन लोगों मे लारवा जी से कहा स्वप्न में मुझे आदेश हुआ है। अतः अब आप अधिक हउ न कीजिए धन ले लीजिए' ऐसा कहकर उसने हुण्डी लिख दी। लारवाजी ने उसे ले लिया।

इस प्रकार लारवा जी एक हजार रूपए की हुंडी लेकर अपने घर आ गए। उन्होंने उनमें से एक सौ रुपए केवल कन्या के विवाह में लगाए और शेष धन से सन्तों को निमंत्रण देकर उन्हें भोजन कराया।

श्री अंगद जी

अभिलाष भक्त अंगद कौ पुरुषोत्तम पूरन करयौ ॥
नग अमोल इक ताहि सबै भूपति मिलि जाँचैं ।
साम, दाम, बहु करैं, दास नाहिन मत काचैं ॥
एक समै संकट मैं, लै वै पानी महि डारयौ ।
'प्रभो! तिहारो वस्तु, वदन ते बचन उच्चारयौ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँच दोय सत कोस ते हरि हीरा लै उर धरयौ ।
अभिलाष भक्त अंगद कौ, पुरुषोत्तम पूरन करयौ ॥

भक्तमाल छंद 113

भक्तवर श्री अंगद जी की अभिलाषा भगवान् श्री जगन्नाथ ने पूर्ण की। उसे सभी राजाओं ने मिलकर माँगा और हीरा हड़पने के सभी हथकण्डे साम, दाम, भय और भेद आदि उपाय किये, परन्तु भक्त अंगद अपने विचार के कच्चे नहीं पक्के थे, उन्होने हीरा नहीं दिया। एक बार राजा ने उन्हें संकट में डालकर उनसे हीरा लेना चाहा, तब उन्होने हीरे को यह कहकर जल में डाल दिया कि 'हे प्रभो ! यह हीरा आप की वस्तु है, इसे स्वीकार कीजिए। पुरुषोत्तम प्रभु ने सात सौ कोस से अपना लम्बा हाथ फैलाकर उसे ले लिया और श्री अंग में धारण कर लिया। इस प्रकार भक्त के मनोरथ को प्रभु ने पूर्ण किया। छंद-113

प्रियादास जी ने भक्तमाल की इस कथा का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

रायसेन गढ़ के राजा सिलाहरी सिंह थे। उनके चाचा अंगद सिंह जी पहले भगवद् विमुख थे, पर उनकी पत्नी भगवद्भक्ता थी। एक बार उनके गुरुदेव घर पर आए और शिष्या की प्रार्थना पर भगवान् श्रीकृष्ण की कथा कहने लगे। इसी बीच अंगद जी आ आए और फटकारते हुए गुरुजी से बोले-'स्त्री जाति के साथ यहाँ क्या कर रहे हो?' इतना सुनते ही गुरुदेव वहाँ से उठकर चले गए। अंगद जी की पत्नी ने अपने गुरुदेव के अपमान से दुःखित होकर अन्न-जल का परित्याग कर दिया। अंगद जी अपनी पत्नी के वशीभूत थे। क्षमा की प्रार्थना करने लगे। पतिदेव के दैन्य को देखकर उस भक्त का हृदय दया से भर गया। उसने कहा-'अब आप मेरे चरणों को छोड़कर मेरे गुरु देव के चरणों में जाकर पड़िये और उन्हें प्रसन्न कर उनको अपना गुरु बनाइए ।

पत्नी के कथनानुसार अंगद जी ने गुरुदेव का शिष्यत्व स्वीकार किया, उन्हें सादर भोजन कराकर उनका उच्छिष्ट प्रसाद लिया। उनके हृदय में गुरुदेव के प्रति भक्ति प्रकट हुई। अपने भतीजे के आदेशानुसार एक शत्रु राजा के ऊपर चढ़ाई की और विजय प्राप्त की। राजभवन की लूट में आप को राजा की टोपी मिल गयी जिसमें सौनग जड़े हुए थे। टोपी के निन्यानबे को बेचकर आपने सन्त-भगवंत की सेवा की और एक नग जो कीमती था, उसे अपनी पगड़ी की लपेट में रख लिया और मन में निश्चय किया कि इसे मैं जगन्नाथ जी को अर्पण करूँगा' (टीका 459) ।

(2) अंगद जी के हीरे को प्राप्त करने के लिए उन्हें विष पिलाया गया, आप के ऊपर विष का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। प्रसाद-प्रेम से आप के मुख पर नयी चमक आ गयी परन्तु आप के मन में इस बात का अपार कष्ट बना हुआ था विषमिश्रित पदार्थ भगवान् को भोग लगाया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(3) अंगदसिंह जी ने सोचा कि किस प्रकार हीरा भगवान को धारण कराया जाय। राज पुरुषों ने उन्हें घेर कर कहा, 'आप हीरा यहीं मेरे सामने रख दीजिए, अन्यथा युद्ध करने के लिए तैयार हो जाइए। यह सुनकर अंगद जी ने कहा–'आप लोग थोड़ा ठहरिये, मैं इस कुण्ड में स्नान करके अभी हीरा दिये देता हूँ। यह कहकर हीरा जल में डाल दिया। प्रभो! यह आप की वस्तु है, कृपया आप इसे स्वीकार कीजिए। आजानबाहु प्रभु ने सात सौ कोस लम्बा हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया और उसे अपने वक्ष;स्थल पर धारण कर लिया।

अंगद जी उसे हीरे को फेंककर अपने घर आ गए। राजपुरुष लोग जल में कूद पड़े और हीरे को ढूँढ़ने लगे। महान् प्रयास करने पर भी जब वह हीरा उन्हें न मिला, तो वे लोग व्याकुल हो गए। राजा भी दुःख में डूप गए। इधर जगन्नाथ जी ने अपने पण्डों को आज्ञा दी कि तुम जाकर अंगद सिंह जी से कह दो कि तुम्हारा हीरा प्रभु को मिल गया है और उन्होंने धारण कर लिया है अंगद सिंह जी ने पुरी में जाकर देखा तो वही हीरा भगवान् के हृदय पर जगमगा रहा है।

अंगद जी के इसभक्ति के चमत्कार को देखकर राजा अत्यन्त दुःखित हुआ। उसने अन्न खाना छोड़ दिया और ब्राह्मणों को उन्हें लिवा लाने के लिए जगन्नाथ पुरी भेजा और उनसे कहा कि जैसे भी हो किसी न किसी प्रकार से आप लोग लिवा लाओ। यदि वे मेरे नगर में आ जायँ तो मैं अपने बड़े भाग्य मानूँगा।

ब्राह्मणों ने अंगद जी से पुरी में राजा के दुःख को सुनाया अंगद जी को दया आ गई और राजा के दुःख को दूर करने के लिए चल पड़े । जब आप नगर के समीप आए तो राजा ने सुना । तत्काल दौड़कर आया और इनके चरणों में लिपट गया। आप ने उसे छाती से लगा लिया, आँखों से आँसू बहने लगे। राजा ने अपना सर्वस्व आपके श्री चरणों में समर्पित कर दिया। इस प्रकार नव जीवन प्राप्त कर जीवन पर्यन्त राजा ने हरिभक्तिमय आचरण किया ।

कल्याणदास जी (छंद 189)

भक्त पच्छ ऊदारता यह निबही कल्यान की ।
जगन्नाथ कौ दास निपुन, अति-प्रभु मन भायौ ।
परम पारषद समुझि जानि प्रिय निकट बुलायौ ॥
प्रान पयानौ करत, नेह रघुपति सों जोरयो ।
सुत दारा धन धाम मोह तिनुका ज्यों तोरयो ॥
कौंधनी ध्यान उर में लस्यौ राम नाम मुख जानकी ।
भक्तपच्छ ऊदारता यह निबही 'कल्यान' की ॥189॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तों का पक्ष लेना तथा उदारतापूर्वक सबसे व्यवहार करना– इन दोनों बातों को श्री कल्याणदास जी ने जीवन भर निभाया। ये जगन्नाथ जी के सेवक थे और सेवा करने में बड़े चतुर थे, अतः भगवान् को बहुत ही अच्छे लगते थे। भगवान् ने इन्हें अपना नित्य प्रिय पार्षद मानकर अपने पास बुला लिया। इन्होंने प्राण-त्याग के समय स्त्री-पुत्र, धन-धाम के महामोह को तृण के समान तोड़कर केवल श्री रामचन्द्र जी से स्नेह जोड़ा और हृदय में श्रीरामजी की कौंधनी का ध्यान और मुख से श्री सीताराम जी के नाम का उच्चारण करते हुए सद्गति प्राप्त की।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. स्वामी विवेकानन्द ने विल्वमंगल एक प्रेरक निवंध लिखा है। उसमें इस प्रसंग की विशद व्याख्या है। नारद भक्ति सूत्र एवं भक्ति विषयक प्रवचन और पृ 55 ।
2. मीरा की प्रेमसाधना-डॉ. भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' ।
   मीराबाई-डॉ. श्रीकृष्ण लाल
   मीरा बाई पदावली-पद्मावती शबनम
   मीरा माधुरी-श्री ब्रजखदास
   मीरा बाई की पदावली-श्री परशुराम चतुर्वेदी ।
3. भक्त नामावली-धुवदास जी-पृ. 87-88 ।
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-पृ. 605 डॉ. रामकुमार वर्मा ।
5. भक्तनामावली-छंद 105, 106 और 107 ।
6. भक्त नामावली-पृ. 65 बाबू राधाकृष्णा दास ।
7. भागवत संप्रदाय-पृ. 639-40 ।
8. हिन्दी साहित्य-उद्भव और विकास-पृ., 195 आ.ह.प्र. द्विवेदी ।
9. हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य में मधुरभाव की उपासना-डॉ. पूर्णमासी राय
10. मीराँबाई-डॉ. श्रीकृष्णलाल पृ 176 ।
11. भक्तमाल में तीन माधो का वर्णन है—माधव ग्वाल, माधवदास जगन्नाथ पुरी वाले और माधवदास कैथा गढ़ के ।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तृतीय अध्याय

काव्यकला की दृष्टि के भक्तमाल

नाभादास जी का आविर्भाव भक्ति काल में हुआ अतः जीवन का परम ध्येय भक्ति को मानने वाले नाभादास जी ने भक्तों के उदार एवं आस्तिक जीवन से परिचित कराकर भक्ति भावना का प्रचार किया। इनका विश्वास था कि हरिगुण गान गाने से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है–

जो हरि प्राप्ति की आस है तौ हरिजन गुनगाय।
न तरु भुंजै बीज ज्यौं जनम जनम पछिताय ॥1॥

इनका प्रबल विश्वास था कि भगवद्भक्तों का चरित वर्णन करने से संसार में कीर्ति और कल्याण दोनों मिलते हैं, तीनों प्रकार के दुख नष्ट होते हैं और अविचल भाव से भगवान का वास होता है–

जग कीरति मंगल उदै तीनों ताप नसायँ।
हरिजन को गुण बरनते, हरिहृदि अटल बसायँ ॥

–भक्तमाल छं. 208

भक्तमाल में भावपक्ष की ऐसी उदात्त शैली अपनायी गई है कि विभिन्न भावों एव रसों में निमग्न भक्तों के चरित्र का उद्घाटन हो सके।[2] भक्ति शास्त्र में भक्ति के जो शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य एवं मधुर (उज्ज्वल) रस का निरूपण किया गया है, इन सबके उदाहरण भक्तमाल में उपलब्ध हैं।

शान्त भाव का भक्त भगवान् को परब्रह्म परमात्मा ही समझता है। उसका अपने उपास्य में निष्ठा होती है किन्तु ममता नहीं होती। वह यह मानकर चलता है कि भगवान भक्त की पहुँच से परे है व्यक्तिगत संबंध के घेरे से बाहर हैं। भक्तमाल में ब्रह्मा, शिव, सनकादि, नारद और बशिष्ठ इसी वर्ग में हैं–

हरिप्रसाद रस स्वाद के भक्त इते परमान।
शंकर, शुक, सनकादि कपिल नारद हनुमान ॥

–भक्तमाल छंद-15

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दास्यभाव

दास्य भाव में भक्त और भगवान के बीच व्यक्तिगत संबंध स्थापित हो जाता है। भक्त भगवान को स्वामी मानता है और अपने को सेवक । भगवान अनुग्रहकर्ता हैं और भक्त उनका अनुग्राह्य। दास्यभावकी प्रीति दो प्रकार की होती है-सम्भ्रमप्रीति और गौरव प्रीति । संभ्रम प्रीति में भक्त अपने को भगवान से अत्यन्तहीन तथा दीन समझता है और भगवान के अनुग्रह की इच्छा रखता है। गौरव प्रीति वाले भक्त सदा भगवान के द्वारा रक्षित तथा पालित होने वाली इच्छा रखता है। हनुमन, प्रह्लाद, ब्रह्मा, आदि। गो. तुलसीदास दास्य भक्ति के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं–

'सेवक-सेव्य भावबिनु भव न तरिय-उरगारि–

मुंशी तुलसी राम ने दास्य निष्ठा के 16 भक्तों का उल्लेख किया है।

समचरन रसमत्त रटत अहनिसि व्रतधारी ॥

–भक्तमाल-छंद 129

सख्यभाव

सख्य भाव में भक्त भगवान का सखा है। इसमें दास्य भाव का संकोच और मर्यादा पालन का बन्धन दूर हो जाता है। भक्त भगवान का सखा है, तब उसके साथ संभ्रम क्यों? इसमें पूर्ववर्ती दोनों भाव के गुण के साथ संकोचाभाव अथवा विश्वास नामक गुण भी आ जाता है। मुंशी तुलसी रामने अर्जुन जी पाण्डव, गोविन्दस्वामी, गंगवाल, गोपवृन्द और सुदामा को इसी श्रेणी में रखा है। परंपरा में अष्टछाप के भक्तों को भी इसी में माना जाता है। प्रियादास ने गोस्वामी विठ्ठल नाथ के शिष्य और अष्टछाप के कवि गोविन्द स्वामी के सख्य भावपरक स्वरूप की इस प्रकार अभिव्यक्ति की है।

गोवर्द्धन नाथ साथ खेलैं सदा झेले रंग, अंग, सख्यभावहिये गोविन्द सुनाम है। पृ. 652

वात्सल्य भाव

वात्सल्य भाव में भगवान पुत्र हैं और भक्त उनका विता और माता। इस संबंध में भगवान का ऐश्वर्य भाव बहुत कुछ दबा रहता है। माता यशोदा उनका हृदय चित्ता और भय से व्याकुल हो जाता है और कृष्ण का कुशल मनाती है। कृष्ण मेरा प्यारा है, दुलारा है, यह वात्सल्य भाव का भक्त ही कह सकता है। दशरथ, नन्द, कौशल्या यशोदा, देवकी आदि गुरु वर्गीय जन वात्सल्य रस के भक्त है।

भक्तमाल में कर्माबाई, कौशल्या शतरूपा (छंद 10) गुंजामाली और उनकी पुत्रवधू (छंद 103) गिरिधर विठ्ठलेश सुत (छंद 131) गोकुलनाथ जी (छंद 88) यशोदा माता (छंद 22), नवोनन्द (छं.21) विठ्ठळनाथ गुसाई (छंद 79) और त्रिपुरदास (पृ..570)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वल्लभाचार्य जी के पुत्र विट्ठळनाथ की वात्सल्य भक्ति के आदर्श उदाहरण हैं–

विट्ठलनाथ ब्रजराज ज्यों लाललड़ाय कै सुख लियौ ।
राग भोग नित विविध रहत परिचर्या तत्पर ॥

(छंद 79)

मधुर भाव के भक्त

मधुर भाव में भक्त और भगवान के बीच एक आध्यात्मिक दाम्पत्य संबन्ध स्थापित होता है। भक्तमाल में स्वामी अग्रदास (छंद 41) करमैती (छंद 160) कील्हदेव (छंद 40) केशवभट्ट (छंद 75) गुसाई गोपाल भट्ट (छं. 94) गोपिकावृन्द (छंद-20) नरसी मेहता (छंद. 108) विल्वमंगल (छंद 46) मानदास (छंद 130) मीराबाई (छं 115) हरिदास रसिक (छंद 91) मुरारिदास (छंद 128), खेमालरत्न राठौर (छं. 123) प्रयागदास (छंद 166) ।

मधुरस के साक्षात् प्रतीक मानदास ने रघुनाथ जी की रहस्य लीला का इस प्रकार वर्णन किया है–

"गोप्य केलि रघुनाथ की मानदास परगट करी ॥
करुणा, बीर, सिंगार आदि उज्ज्वल रस गायो ।
पर उपकारक धीर कवित, कवि कविजन मन भायो ॥
कोसलेस पद कमल अननि दासत व्रत ली नौ ।
जानकी जीवन सुजस रहत निसिदिन रंग मी नौ ॥
रामायन नाटक की रहसि उक्ति भाषा धरी ।
गोप्यकेलि रघुनाथ की मानदास परगट करी ॥"

-छंद 130

टीकाकार प्रियादास भी भक्तमाल में शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य और श्रृंगार रस के वर्णन को स्वीकार करते हैं–

शान्त दास्य सख्य वात्सल्य और श्रृंगार चारु,
पाँचों रस सार विस्तार नीके गाये हैं ॥

–प्रियादास जी टीका छंद 4

कई भक्तों के वर्णन में नाभादास जी ने दशधा भक्ति का नाम लिया है–

रामरयन की धर्मपत्नी

नवधा दशधा प्रीति आन धर्म सबै विसारयौ ॥ –छंद-120

वनवारी दास जी

आरज गुन तन अजित भक्ति दशधा ब्रत धारी ॥

–छंद-133

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारायण मिश्र

नाम . नारायण मिश्र नवलाजु उजागर।
भक्तन की अतिभीर भक्तिदशधा को आगर।

छंद-134

लक्ष्मणभट्ट भक्तनि सों अति प्रीति भक्ति दशधा को आगर।

-भक्तमाल छंद 184

'भक्तमाल' में नवधाभक्ति के भक्तों का उल्लेख किया गया है–
पदपराग करुणा करौ (जे) नेता नवधा भगति के ।।

-भक्तमाल छं. 14

1. परीक्षित (श्रवण भक्ति)
2. शुकदेव - कीर्तन भक्ति
3. प्रह्लाद-स्मरण भक्ति
4. लक्ष्मी-पादसेवन
5. पृथु-अर्चना भक्ति
6. अक्रूर-वन्दनभक्ति
7. हनुमान- दास्यभक्ति
8. अर्जुन-सख्य भक्ति
9. बलि-आत्मनिवेदन ।

इस विवरण से स्पष्ट होता है कि नाभादास जी ने भक्ति का विवेचन या विश्लेषण नहीं किया है, न तो भक्ति का वर्गीकरण किया है और न रूपगोस्वामी की तरह भक्तिरस का विवेचन किया है, इसमें केवल विभिन्न संप्रदायों के भक्तों का उल्लेख है। नाभादास जी ने विभिन्न संप्रदाय के भक्तों की गाथा लिखी है। फिर भी इसमें समकालीन भक्ति संप्रदायों का सुन्दर परिचय मिल जाता है और प्रसिद्ध भक्तों की साधना पद्धति और उनके जीवन के सम्बन्ध की सूचनाएँ मिल जाती हैं।

भक्तमाल में किस रस की प्रधानता ?

पूर्व विवेचन से ऐसा प्रतीत होता है कि भक्तमाल में रसशास्त्र एवं भक्तिशास्त्र में वर्णित सभी रसों के भक्तों का वर्णन है। इसके निर्णय के लिए कुछ काव्यशास्त्र की मान्यताओं की ओर जाना होगा। ऐतिहासिक क्रम के अनुसार भवभूति ने 'एको रसः करुण एव' कहा। भवभूति के बाद अभिनव गुप्त ने शान्त की मूल रस के रूप में प्रतिष्ठा की 'शान्तस्तु प्रकृतिर्गतः' लगभग इसी समय भोज ने शृंगार में ही आस्वादनीयता मानी–'शृंगारमेव रसनाद्रसमाननामः' (शृंगार प्रकाश) कविराज विश्वनाथ के प्रपितामह नारायण पंडित ने 'अद्भुतं ही मूल और एकमात्र रस ऐसा कहा (साहित्य दर्पण का रस प्रसंग) अन्त में भारतीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाङ्मय में भक्तिकाव्य का प्रचुर विकास हो जाने पर वैष्णव आचार्यों ने भक्ति रस की न केवल प्रतिष्ठा की वरन् उसे ही मूलरस घोषित किया। वास्तविक भक्तिरस ही है। भक्तिरस के भेदों में मधुरस या उज्ज्वल रस ही प्रमुख है।[3]

इस दृष्टि से नाभादास के भक्तमाल में शान्त, शृंगार, अद्‌भुत और भक्तिरस सभी मिल जायँगे । इसका निरूपण किया जा चुका । एक तथ्य विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि इसमें अद्‌भुत रस के दृष्टान्त सर्वाधिक हैं।'

उत्कर्ष सुनत संतन कौ, अचरज कोऊ जिनिकरौ'

–भक्तमाल 202

उदाहरण के रूप में पृथ्वी राज को प्रभु ने द्वारका से आकर दर्शन दिया (छंद 116) नामदेव के हाथ से दूध पिया। (छंद 43) कर्मा की खिचड़ी खाई (छंद 50) त्रिलोचन भक्त के घर में रहकर चौदह महीने सन्त सेवा की (छंद 48) सदाव्रती भक्त का बेटा मर गया, जिला दिया और फिर आ गया। (छंद 51) ।

भक्तमाल में भक्तों और भगवान के संबंध की अनेक कथाएँ वर्णित हैं, यह अद्‌भुत रस नहीं तो क्या है? यदि अद्‌भुत वर्णन न हो, तो तो आकर्षण क्यों होगा?

भक्तमाल में काव्यगुण

'भक्तमाल' में भक्तों के जीवन-दर्शन से संबद्ध कथाएँ अधिक आयी हैं, इसलिए प्रसाद और माधुर्य गुण की प्रधानता है। आचार्य वामन के अनुसार 'काव्य शोभायाः कर्त्तारो धर्मा गुणाः' (काव्य की शोभा के वर्द्धक धर्म गुण हैं। आचार्य मम्मट के अनुलाहर ये गुण काव्यरस के अंगी धर्म हैं। (काव्य प्रकाश 8/66) ।

माधुर्य गुण रचना में मिठास उत्पन्न कर उसके सौन्दर्य खी श्रमिवृद्धि करता है। इसके कोमल पदों में य, र, ल, व आदि वर्णों का प्रयोग अधिक होता है और क्लिष्ट, दुरूह और लम्बे सामासिक शब्दों का अभाव रहता है। शृंगार और शान्त रस के लिए यह गुण अत्यधिक उपयुक्त होता है। भक्तमाल में माधुर्य गुण के अधिक पद हैं–एक उदाहरण–

'ब्रजवधू रीति कलियुग विषै परमानन्द भयौ ।
पौगंड, बाल, कैशोर, गोपलीला सब गाई ।
अचरज कहा यह बात हुतौ पहिलौ जु सखाई ॥
नैननि नीर प्रवाह, रहत रोमांच रैन दिन ।
गदगद गिरा उदार श्याम शोभा भीज्यौं तन ॥
सारंग छाप ताकी भई, श्रवण सुनत आवेस देत ।
ब्रजवधू रीति कलियुग विषै परमानन्द भयौ प्रेमकेत ॥

–भक्तमाल-छंद 74

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार प्रसाद गुण से संपृक्त यह पद भी द्रष्टव्य है–

नंदकुँवर कृष्णदास को निज पग से नूपुर दियौ ।
तान मान सुर ताल सुलभ सुंदरि सुठि सोहै ।
सुधा अंग भ्रूभंग गान उपमा कों को है ॥
रत्नाकर संगीत, रागमाला, रँगरासी ।
रिझये राधालाल, भक्तपद रेनु उपासी ॥
स्वर्णकार, 'खरगू' सुवन भक्तभजन पद दृढ़ लियौ ।
नन्दकुँवर 'कृष्णदास' को निजपगतें नूपुर दियौ ॥

-छंद 180

भक्तमाल में वैसे ओजगुण का अभाव है, जहाँ ऐसे वर्णन आए है, वे दुर्बोध हो गए हैं–कई विद्वानों में भक्तमाल के छप्पयों की क्लिष्टता की चर्चा की है, परन्तु ऐसे अवसर प्रायः तभी आए हैं जब कि छप्पयों में पात्रों के चरित्र से सम्बन्धित किसी न किसी आख्यान का संकेत किया गया है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित छंद देखें–

द्वारिका देखि पालंटती, अचढ़ सीवैं की धी अटल ॥
असुर अजीज अनीति अगिनि मैं हरिपुर कीधौ ।
साँगन सुत नैं सादराय रनछोरै दीधौ ॥
धरा धाम धन काज मरन बीजा हूँ माँड़ै ।
कमधुज कुटकै हुवौ चौक चतुरभुजनी चाँडै ॥
बाढ़ै लवाढ़ कीबी कटक, चाँद नाम चाड़ै सबल ।
द्वारिका देखि पालंटती, अचढ़ सीबैं कीधी अटल ॥

–भक्तमाल छं.141

इस छंद में सीवाँजी के शौर्य का वर्णन है, इसमें काबाओं के देश की भाषा का प्रयोग, अतः क्लिष्टता का आना स्वाभाविक है। भक्तमाल के टीकाकार रूप कला जी ने बहुतेरे शब्दों के अर्थ और कमध्वज वाली वार्ता के कारण इसको क्लिष्ट स्वीकार किया है।

इस प्रकार भक्तमाल में माधुर्य एवं प्रसाद गुण की प्रधानता है।

भक्तमाल में छन्द-विधान

काव्य में छन्द-विधान के द्वारा काव्य-सौन्दर्य, ग्राहकता और काव्यकला की अभिवृद्धि होती है। छन्द के प्रभाव से कविता में लयात्मकता का संचार होता है। कविता संगीत का सहारा पाकर अत्यन्त प्रभावशालिनी हो जाती है। भक्तमाल में तीन छंदों का प्रयोग है–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1. छप्पय (2) कुंडलिया (3) दोहा

नाभादास जी ने भक्तमाल की रचना के लिए 196 छप्पय, 17 दोहे और दो कुंडलिया का प्रयोग किया है। छप्पय में पहले चार चरण रोला के, अन्तिम दो चरण उल्लाला के होते हैं। रोला के प्रत्येक पाद में 24 मात्राएँ होती हैं। यति 11/13 पर होती है अन्त में दो गुरु वा लघु पड़ते हैं। उल्लाला में 13 और 13 मात्राओं पर विराम होता है। छप्पय–

ब्रजभूमि उपासक भट्टसों रचिपचि हरि एकै कियौ ।
गोप्यस्थल मथुरा मंडल जिते वाराह बखाने ।
तो किये 'नारायण' प्रगट प्रसिद्ध पृथ्वी में जाने ॥
भक्तिसुधा को सिंधु सदा सतसंग समाजन ।
परम रसज्ञ, अनन्य, कृष्णलीला को भाजन ॥
ज्ञान समारत पच्छ को नाहिन कोउ खंडन कियौ ।
ब्रजभूमि उपासक भट्टसो रचिपचि हरि एकै कियौ ॥

दोहा–दोहा 24 मात्राओं का छंद है।

विषमचरणों में 13 और समचरणों में 11 मात्राएँ ।

भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक। इनके पद वंदन किये नासै विघ्न अनेक भक्त माल छंद-1

मंगल आदि विचारि रह, वस्तु न और अनूप ।
हरिजन को यश गावते, हरिजन मंगल रूप ॥

–छंद-2

कुंडलिया छंद

इस छंद में पहले एक दोहा और फिर रोला के चार चरण होते हैं–

गलतें गलित अभितगुण, सदाचार सुठि नीति ।
दधीचि पाछे दूसरि करी, कृष्णदास कलि जीति ॥
कृष्णदास कलि जीति न्यौति नाहर फल दीयौ ।
अतिथि धर्म प्रतिपालि प्रगट जस जगमें लीयौ ॥
उदासीनता अवधि, कनक कामिनि नहि रातो ।
रामचरण मकरंद रहत निसदिन मदभातो ॥
गलतें गलित असित गुण सदाचार सुठि नीति ।
दधीचि पाछे दूसरि करी, कृष्णदास कलि जीति ॥

–भक्तमाल - छंद 185

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल में अलंकार

अलंकार काव्य के शोभा कारक तत्व है । 'काव्यशोभकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते' रचनाकार अपने वर्ण्य विषय को स्पष्ट करने के लिए, चमत्कार युत बनाने के लिए और मूर्तरूप देने के लिए अलंकारों का सहारा लेता है। नाभादासजी ने भी भक्तमाल में अलंकारों के माध्यम से कथ्य को स्पष्ट करना चाहा है। अलंकारों के प्रयोग से नाभादास की कविता रमणीय और भाषा प्रभाव शाली बन गई है। इन्होंने मुख्य रूप से अनुप्रास, उपमा, रूपक और अतिशयोक्ति के द्वारा वर्ण्य को रूपायित किया है। अनुप्रास में छेकानुप्रास (जहाँ एक्र या अनेक वर्ण केवल दोबार आएँ । और वृत्यनुप्रास (जहाँ एक या अनेकवर्णों की आवृत्ति कई बार हो) के प्रयोग भक्तमाल के अधिकांश छंदों में हैं...भक्तिभक्त भगवन्तगुरु चतुर नाम वपु एक (वृत्यनुप्रास)

अर्थालंकारों में सबसे अधिक प्रमुखता उपमा और रूपक को मिली है। भक्तों की महिमा प्रदर्शित करने के लिए नाभादास ने नयी-नयी उपमाओं की खोज की है–'कवि ने वर्णित चरित्रों की महत्ता प्रदर्शित करने के लिए उन्हें कभी पारस, कभी कल्पतरु, कभी, चन्द्र के समान निर्मल और निष्कलंक कहा है, इन स्थलों में उपमा लंकार का प्रयोग हुआ है।[4]

1. श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जगतरन कियौ ।। –छंद 36
2. नामदेव प्रतिज्ञा निर्वही ज्यों त्रेता नरहरिदास की । छंद 43
3. नाम त्रिलोचन शिष्य सूर शशि सदृश-उजागर छंद–48

रूपक अलंकार

संसार अपार के पार को सुगमरूप नवका लयो।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयौ ।। –छंद 129

इन पंक्तियों में कवि वे तुलसी के उपदेश एवं राम नाम को एक नौका के रूप में प्रस्तुत किया है और तुलसी को कर्णधार माना है जो लोगों को इस माध्यम से भवसागर तर जाने का उपदेश करते हैं।

इस प्रकार भक्तमाल में भक्तों के अद्भुत, अलौकिक और अतिप्राकृत चरित्रों के वर्णन में अतिशयोक्ति अलंकार का भी प्रयोग किया गया है।

भक्तमाल की भाषा

नाभादास जी का आविर्भाव जिस समय हुआ, वह समय रामभक्ति, कृष्णभक्ति, संत साहित्य आदि के विकास का काल था। एक ओर गो. तुलसीदास रामभक्ति की मन्दाकिनी प्रवाहित कर रहे थे, सूरदास और अष्टछाप के अन्य कवि ब्रज भाषा में कृष्णलीला का गान कर रहे थे। 'जिस ब्रजभाषा में काव्य-लेखन की परंपरा सैकड़ों वर्षों से चल रही थी और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिस ब्रजभाषा ने सूरदास, नन्ददास, परमानन्ददास, रसखान आदि कवियों को जन्म दिया, उसके विकास की परंपरा में नाभादस का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।[5] डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के मतानुसार नाभादास यद्यपि रामानन्दी संप्रदाय के थे तथा पूर्वीप्रदेश के रहने वाले थे किन्तु उन्होंने वैष्णवभक्तों की लोकप्रिय छन्दोवद्ध जीवनी भक्तमाल की उस समय की प्रतिष्ठित साहित्यिक भाषा ब्रज में लिखना उचित समझा ।[6]

भक्तमाल में शब्द-प्रयोग की दृष्टि से संस्कृत के शब्द अधिक है। भाषा में साहित्यिक एवं परिष्कृत शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है।

उदाहरणार्थ–

श्रीभट सुभट प्रगटयौ अघट रस रसिकन् मन मोद घन ।
मधुरभाव समिलित ललित लीला सुबलित छबि ।
निरखत हरखत हृदै प्रेम बरसत सु कलित कवि ॥
भव निस्तारन हेतु देत दृढ़ भक्ति सबनि नित ।
जासु सुजस ससि उदै हरत अति तमभ्रमश्रम चित ॥
आनन्दकन्द श्रीनन्द सुत वृषभानु सुता भजन ।
श्री भट सुभट प्रगटयौ अघट रस रसिकन मनमोदघन ।

–भक्तमाल छंद 76

भक्तमाल की भाषा में देशज और ग्रामीण ब्रजभाषा के शब्दों की प्रचुरता है।

छंद सं 136-भलप्पन / छंद 82 थंभ आदि । भक्त माल में उर्दू, फारसी और अरबी आदि के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है–

1. खवासी - कुंज केलि दंपति, तहाँ की करतखवासी ।
2. कज़ी - ऋषिराज सोचि कहयौ नारि सों आज भक्ति मेरी कजी।
3. तुरक - हिन्दू तुरक प्रभाव रमैनी शबदी भाषी-

भाषा को प्राणवंत बनाने के लिए कहावतों, मुहावरों का प्रयोग भी स्थल-स्थल पर हुआ है–

1. लोक लाज कुल श्रृंखलातजि मीरा गिरिधरभजी-छंद 115
2. बार न वाको भयो, गरल अमृत ज्यों पियौ -छंद 115

इस प्रकार भक्तमाल की भाषा प्रायः सरल एवं स्वाभाविक है। तत्सम प्रधान होने पर भी तद्भव एवं देशज शब्दों का पर्याप्त प्रयोग है जिससे भाषा में रोचकता आ गयी है। अलंकारों और लोक प्रचलित मुहावरों ने भाषा के सौन्दर्य की अभिवृद्धि की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में ब्रजभाषा पर इनका अच्छा अधिकार था और पद्य रचना में अच्छी निपुणता थी।[7] आचार्य हजारी प्रसीद द्विवेदी की दृष्टि में नाभादास की पुस्तक ने साहित्य और साधना पद्धति को गंभीर रूप से प्रभावित किया।[8]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल की साहित्यिक विधा

भक्तमाल के संबंध में एक और विचारणीय प्रश्न है कि इसे साहित्य की किस बिधा के अन्तर्गत रखा जाय? इसमें भक्तों के जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों का सन्निवेश है, भक्तों के जीवन का सांगोपांग वर्णन नही हैं। भक्तों के चामत्कारिक कृत्यों की ओर ध्यान अधिक है। इसमें ऐतिहासिकता का ध्यान नहीं रखा गया है। और न क्रमबद्धता पर ही। पर उस समय 252 वाबन वैष्णवन की वार्ता और चौरासी वैष्णव न की वार्ता जैसी रचनाएँ जो लिखी गई, उस दृष्टि से भक्तमाल भी भक्तों का जीवन चरितात्मक मुक्तक काव्य है। इसमें नाभादास ने भक्तों की एक ऐसी माला पिरोयी है, जिसका यदि एक भी नग हटा दिया जाय तो संभवतः उसका स्वरूप विकृत हो जायेगा । जीवनी साहित्य के क्षेत्र में एक नवीन परंपरा का द्योतक है। उनके समय में जितने भी ग्रन्थ जीवनी से संबद्ध लिखे गए थे, उनमें और भक्तमाल में महान अन्तर है। कवि नाभादास ने निष्पक्षता के साथ जिस भक्त का जैसा रूप था, वैसा ही अंकन किया है। अतः साहित्य की 'जीवन-चरित' विधा के अन्तर्गत रखना उचित होगा।[9]

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. भक्तमाल छं. 210 ।
2. भक्तमाल-छंद 102-हरिसुजस प्रचुर कर ये कविजन अतिशय उदार । छंद 102।
3. रस सिद्धान्त पृ. 253-260 डॉ. नगेन्द्र ।
4. भक्तमाल-एक अध्ययन-पृ. 135 प्रकाश नारायण दीक्षित ।
5. नाभादास कृत भक्तमाल एक अध्ययन-पृ. 141 प्रकाश नारायण दीक्षित
6. ब्रजभाषा-पृ. 25 ।
7. संस्कृत निष्ठ भाषा-छं. 81 गिरिधरन रीझि
   छंद. 124 हरिवंश गुसाईं भजन की
   छंद-36 रामानन्द रघुनाथ ज्यों
   छंद-35 श्री रामानुज पद्धति
8. उर्दू-फारसी के शब्द-खवासी-छंद 90
   काजी - छंद 57
   अनीक छंद 141 ।
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 148
10. हिन्दी साहित्य उद्धव और विकास-पृ. 244 ।
11. नाभादास कृत भक्तमाल-एक ध्ययन पृ. 105 ।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपसंहार

नाभादासकृत भक्तमाल का जो वर्णन पूर्ववर्ती पृष्ठों में किया गया, उससे इतना स्पष्ट हो गया कि यह ग्रंथ भक्तों और विद्वानों में समान रूप से लोकप्रिय रहा। हिन्दी साहित्य के अध्येताओं एवं विद्वानों ने भक्तिकाल के अध्ययन के लिए इसे प्रामाणिक स्रोत की मान्यता दी। इसको एक तरह से हिन्दी का सर्वप्रथम आलोचना ग्रंथ कहा जा सकता है। मध्ययुग में जिस प्रकार सूत्र रूप में आलोचना प्रचलित थी, उसका मानक रूप इसी में मिलता है। 'जयदेवकवि नृप चक्कवै, खंड मंडलेश्वर आन कवि' (छंद 43) सूर कवित्त सुनि कौन कवि जो नहि सिर चालनकरै (छंद सं 73) और कलि कुटिल निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो।' (छंद 129) इस बात के प्रमाण हैं। कुछ कवियों का नाभादास जी ने ऐसा वर्णन किया है कि उस कवि की सभी काव्यात्मक विशेषताएँ सहज ही स्पष्ट हो जाती हैं कबीरदास (छंद 60) परमानन्द दास (छंद 74) और स्वामी हितहरिवंश (छंद 90) आदि संबंधी छप्पय ऐसे ही हैं।

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के इतिहास के लिए भक्तमाल अत्यन्त प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथ है। "फिर भी हिन्दी के भक्त कवियों का जो कुछ वृत्तान्त इस ग्रन्थ में दिया हुआ है, वह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस ग्रंथ को हिन्दी के विद्वानों ने प्रामाणिक माना है।[1] डॉ. माता प्रसाद गुप्त के मत से वैष्णव आन्दोलन के अध्ययन में यह पुस्तक बड़ी सहायक होती है–"इन्होंने रामभक्ति संबंधी कुछ रचनाएँ भी की है; किन्तु इनकी ख्याति भक्तमाल के कारण है जो मध्ययुग के वैष्णव आन्दोलन की रूपरेखा समझने के लिए सबसे अधिक प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।"

भक्तमाल की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह रामानन्दीय भक्ति संप्रदाय का प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करता है। नाभा जी रामानन्द की शिष्य परंपरा थे, इसलिए इन्होंने स्वामी जी तथा उनके संप्रदाय की उत्पत्ति अथवा विकास के संबंध में जो सूचनाएँ दी हैं, वे बहुधा प्रामाणिक हैं।"

"भक्तमाल का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि इस ग्रन्थ रत्न ने भारतीय जनता के समक्ष उज्ज्वल और उदात्त चरित्रों को व्यक्त करके, सत्य, दया, विश्वबन्धुत्व के उन आदर्शों का प्रसार किया जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति आदर्श नागरिक बन सकता है। भक्तमाल का प्रभाव बड़ा व्यापक और गहरा रहा । भक्तमाल की परंपरा में जितने भक्तभालों की रचना हुई और जितनी टीकाएँ हुईं, उतनी रामचरित मानस के अतिरिक्त अन्य किसी रचना की नहीं हुई। भक्तमाल का साहित्यिक और धार्मिक दृष्टियों से बड़ा महत्व है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमालं की इस विलक्षणता को भी नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता कि इसमें निर्गुण और सगुण दोनों भाव-धाराओं की सामग्री प्रस्तुत की और उनके सिद्धान्तों को काव्य के मधुर आवेष्टन में व्यक्त किया। एक ओर कबीर की 'भक्ति विमुख जो धर्म सो अधरम करि गायो' की चर्चा की तो दूसरी ओर तुलसी के 'राम चरनरस मत्त रटत अहनिसि व्रतधारी का उद्घोष किया ।

भक्तमाल में नारी भक्तों की कथा और उनके त्याग की कहानी बड़े उदात्त रूप में अंकित है। मीराबाई (छंद 115) रामरयन की धर्म पत्नी (छंद 160) कात्यायनी 120 श्रीमती रत्नावती (छंद 142) करमैती (छंद 160) और लालमती (छंद 198) की कथाएँ विस्तार से वर्णित है। दो बाइयों ने अपने-अपने पुत्रों को विषदे दिया– 'भक्तन हित सुत विष दियौ भूपनारि, प्रमुराखि पति (छंद-50) और मीराबाई 'लोक-लाज कुल शृंखला तजि मीरा गिरिधर भजी' (छंद 115) ।

भक्तमाल के वर्ण्य विषय की व्यापकता इतनी है कि इसमें उन आचार्यों और भक्तों को विस्मृत नहीं किया गया है जिन्होंने अपनी कृतियों से भक्तिदर्शन को दार्शनिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उनमें जयदेव (गीतगोविन्द) श्रीधर स्वामी (भागवत) विल्वमंगल (कृष्णकर्णामृत) कमलाकर भट्ट (छंद 81) श्री नारायण मिश्र (छंद 134) और प्रबोधानन्द सरस्वती के नाम उल्लेख्य हैं।

'भक्तमाल में भारतीय दर्शन के मान्य आचार्यों-आचार्य शंकर, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य और रामनन्दाचार्य के सिद्धान्तो एवं उनके अनुयायिओं की व्यापक चर्चा है। इस प्रकार भक्तमाल भक्तिशास्त्र का व्यावहारिक निदर्शन है। 'नाभादास के भक्तमाल के अनुशीलन से यह स्पष्ट विदित होता है कि उनको संस्कृत काव्य-शास्त्र, छन्दशास्त्र आदिका अच्छा ज्ञान था। उन्होंने भक्तों के परिचय में जिस समास-शैली का परिचय दिया है, वह उनके गम्भीर चिन्तन-मनन का परिणाम है। जिन भक्तों का परिचय उन्होंने लिखा है, उनकी रचना-शैली काव्य-कला, उपासना-पद्धति, विशिष्टता आदि को एक छप्पय में कूट-कूट कर समाविष्ट कर दिया है।''[5]

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. अष्टछाप और वल्लभ संप्दाय-डॉ वीनदयालु गुप्त-ए 109 ।
2. हिन्दी साहित्य खंड-2 संपादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
   डॉ. माताप्रसाद गुप्त का निबंध-रामकथा ।
3. रामानन्द संप्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव पृ. 18 ।
4. नाभादास कृत भक्तमाल एक अध्ययन, पृ 167
   प्रकाश नारायण
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास-पृ. 181 सं. डॉ. नगेन्द्र (प्रथम संस्करण) ।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट-1

चौबीस निष्ठाओं में विभक्त 269 भक्तों की नामावली (मुंशी तुलसीराम के विचारानुसार)

(1) अर्चा प्रतिमा निष्ठा (17 अंक)

1. अल्हजी (रसालवृक्ष)
2. अल्हजी कील्हजी
3. कर्मानन्द जी
4. कील्ह जी अह्लजी
5. चन्द्रहास जी
6. जगन्नाथ थानेश्वरी जी
7. श्री पंडा देवा जी
8. धना जी
9. नामदेवजी
10. पृथ्वीराज जी, हरिमन्दिर
11. रामदास जी एकादशी डाकोर
12. सदन जी सधना
13. सन्तदास प्रबोध वंश
14. श्रीसाक्षी गोपाल जी के भक्त
15. सितप्लिलभक्ता उभयबाई
16. भूम्यधिकारी सुता (जमींदार की लड़की)
17. सीवाँ जी ।

(2) अहिंसा, दया (6 भक्त)

1. केवलराम जी (बैल की साटी)
2. श्री भुवनजी चौहान
3. मोरध्वजजी ताम्रध्वज जी
4. राँगाजी (कुम्हार)
5. राणा श्री शिवि जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6. हरिव्यास जी

(3) आत्म निवेदन, शरणागति (12 भक्त)

1. श्री अक्रूर जी
2. गजेन्द्र जी ग्राह जी
3. ग्राहजी
4. खगपति जटायुजी
5. जगन्नाथ
6. श्री ध्रुव जी
7. श्री विभीषण जी
8. श्री विंध्यावली जी
9. मामूँ-भानजा
10. भानजा-मामू
11. लक्ष्मण भट्ट
12. आचार्य स्वामी राघवानन्द जी ।

(4) उपवास व्रत, (2 भक्त)

1. श्री अम्बरीष जी महाराज महारानी
2. श्री रुक्मांगद जी

(5) कर्मधर्मनिष्ठा (7 भक्त)

1. श्री दशरथ जी
2. श्री दधीचि जी
3. श्री बलि जी
4. भीष्म जी
5. श्री सुरथ जी श्री सुधन्वाजी
6. श्री सुध्वाजी श्री सुरथजी
7. महाराज हरिश्चन्द्रजी

(6) कीर्तननिष्ठा (16 भक्त)

1. श्री कमलाकर भट्ट जी
2. कृष्णदास चालक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3. वर्धमान श्री गंगल जी
4. चतुर्भुज मुरलीधर
5. श्रीजयदेवजी
6. भक्तमाल सुमेर श्री तुलसीदास जी
7. श्रीनन्ददास जी
8. नारायण मिश्र जी
9. श्री परमानन्द जी
10. वर्द्धमान श्री गंगलजी
11. महर्षि वाल्मीकि जी
12. श्रीभट्ट जी
13. श्री मथुरादास जी
14. परम हंस श्री शुकदेव जी
15. श्री सुखानन्द जी
16 श्री सूरदास जी

(7) गुरुनिष्ठा (12 भक्त)

1. श्री खोजी जी
2. श्री रुद्र प्रताप गजपति जी
3. श्री गुरु शिष्य
4. श्री घाटम जी
5. चतुर स्वामी जी
6. श्री जीवाजी तत्वाजी
7. श्री तत्त्वाजी श्री जीवाजी
8. श्री नरवाहन जी
9. श्री पादपद्मजी
10. श्री पृथ्वीराज जी
11. राघवदास जी
    श्री रुद्रपाताप गजपति जी
12. विष्णुपुरी जी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(8) दास्य निष्ठा (16 भक्त)

1. श्री अंगदजी
2. कल्यान सिंह जी
3. केशव लटेरा जी
4. श्री क्षेम गुसाईं जी
5. खेमाल राजा
6. गुसाईं श्री गोपाल भट्ट जी
7. श्री दिवाकर जी
8. श्री पीपा जी
9. प्रह्लाद भक्तराज जी
10. प्रयागदास जी
11. भगवान भक्त जी
12. रामराय सारस्वत विप्र
13. श्री रेदासजी महाराज
14. श्री रंग जी
15. सोती जी
16. हठीनारायणजी 1678 संवत्

(9) धर्मप्रचारक (21 भक्त)

1. महर्षि श्री अगस्त्य जी
2. श्री पयहारी कृष्णदास जी
3. श्रीकृष्ण चैतन्य, नित्यानन्द
4. गोविन्ददास जी भक्तमाली
5. चतुर्भुज जी
6. श्रीनारायण भट्ट जी
7. नित्यानन्दकृष्णचैतन्य
8. निम्बादित्यजी
9. पयहारी कृष्णदास जी
10. श्री वल्लभाचार्य जी
11. श्री विष्णु स्वामी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12. श्री ब्रह्मा जी
13. माध्वाचार्य जी
14. श्री 108 रामानन्द स्वामी
15. स्वामी अनन्त श्री रामानुज जी
16. श्री रूप-सनातन जी
17. श्री शिव जी
18. श्री शंकराचार्य जी
19. सनातन जी रूप जी
20. सोभूराम जी
21. श्री हरिव्यास देव जी
22. श्री हितहरिवंश जी

(20) धामनिष्ठा (8 भक्त)

1. श्री काकभुशुण्डिजी
2. श्री गुसाईं श्री काशीश्वरजी
3. प्रबोधानन्द सरस्वती
4. भगवंत दीवान माधवसुत
   भुशुण्डीजी काक
5. श्री भूगर्भ गोसाई जू
6. श्री मधु गोसाईं जी
7. लालमति देवी जी
8. हरिदास जी तोलने वाले (बनिक) ।

(11) नाभ (7 भक्त)

1. श्री अजामेल जी
2. अन्तर्निष्ठ राजा तथा रानी
3. अन्तर्निष्ठ की रानी
4. श्री कबीर जी
5. श्री पद्मना भ जी
6. दम्पत्ति (भक्तविप्रसपत्नीक)
7. ब्राह्मणी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(12) प्रेम (16 भक्त)

1. श्री अम्बरीष जी और उनकी रानी ।
2. कात्यायनी देवी जी
3. श्रीकृष्णदास जी नूपुर प्राप्त
4. श्रीकृष्णदास ब्रह्मचारी जी
5. गदाधर भट्ट
6. जसोधर जी श्री दिवदास पुत्र
7. नारायण दास जी नृतक
8. श्री विट्ठल दास जी
9. बिंदुरानी और श्री विदुर जी
10. श्री भक्तदास कुलशेखरजी
11. श्री माधवदास जी (गढ़ागढ़)
12. मुरारिदास जी (विलोंदा)
13. रतिबन्ती देवी
14. तीलानुकरण (भक्त जी)
15. देवी शबरी जी
16. श्री सुतीक्ष्णजी प्रेमसिन्धु

(13) भेष (8 भक्त)

1. गिरिधर ग्वाल (तीर्थ)
2. श्री चतुर्भुज जी
3. भगवानदास जी (मथुरा)
4. श्री मधुकरसाह जी
5. श्री रसदान जी मालाधारी
6. एक भेषनिष्ठ राजा) भांडसन्त सनमान)
7. श्री लालाचार्य जी (जामातवर्वरमुनि)
8. हंसभक्तों का प्रसंग ।

(15) माधुर्य श्रृंगार भक्त

1. श्रीस्वामी अग्रदेव जी
2. करमैती देवी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3. कन्हरदास जी (उड़िये)
4. कल्याण जी धर्मदास सुत
5. श्री कील्हदेव भी
6. श्री कृष्णदास जी पंडित जू
7. श्री केशव भट्ट जी
8. श्री गुहनिषादजी
9. गुसाई श्री गोपाल भट्ट जी
10. श्री गोपिका वृन्द
11. जसवंत जी
12. श्री नरसी मेहता जी
13. अनवारी रसिक रँगीले
14. श्री विल्बमंगल जी
15. मानदास जी
16. श्री मीराबाई जी
17. रत्नावती देवी जी
18. श्री लोकनाथ गोसाईं जी
19. सूरदास मदन मोहन
20. श्री हरिदास जी रसिक

(16) लीलामूर्ति में निष्ठा (6 भक्त)

1. श्री अलि भगवान जी
2. खड्गसेन जी कायस्थ
3. नाथभट्ट जी फनिवंशी
4. श्री बल्लभजी (नासयण भट्ट के)
5. श्री विट्ठल विपुल जी
6. राजा श्री रामरयनजी

(17) वात्सल्य (10 भक्त)

1. श्री कर्माबाई जी
2. श्री विट्ठलेश सुत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3. श्री 108 कौशल्या जी श्री सतरूपाजी
4. गुंजामाली जी और आपकी पुत्रवधू
5. गिरिधर बिट्ठलेश सुत
6. श्री गोकुलनाथ जी
7. श्री यशोदा माताजी
8. नवोनन्द जी महाशय
9. श्रीविट्ठलनाथ गुसाईं
10. श्री त्रिपुरदास जी

(18) वैराग्य सान्ती (14 भक्त)

1. श्रीकामध्वजजी
2. गदाधर जी बिहारी लाल जी
3. श्री जीव गुसाईं जी
4. द्वारिका दास योगीश
5. नारायण जी अल्हवंशी
6. परशुराम जी
7. श्री राकाजी और वाँकाजी
8. श्रीमाधवदास जी जगन्नाथी
9. श्री रघुनाथ गुसाईं
10. श्री रन्तिदेव जी
11. श्री साँका जी श्री राँकाजी
12. श्री श्रीधरस्वामीजी
13. श्री सुरसुरी जी देवी
14. हरिवंश निष्किञ्चन जी

(19) श्रवण निष्ठा (4 भक्त)

1. श्री गरुड़ जी
2. देवर्षि नारद जी
3. महाराज श्री परीक्षित जी
4. श्री परीक्षित जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(20) सख्य निष्ठा (5 भक्त)

1. श्री अर्जुन जी पाण्डव
2. गोविन्द स्वामी जी
3. गंगग्वाल जी
4. गोपवृन्द
5. श्री सहचरियाँ ग्वाल मंडल
6. सुदामा जी ।

(21) सत्संग साधुसेवा (29 भक्त)

1. श्रीकन्हरबिट्ठल सुत
2. श्री कूबाजी केवलदास
3. श्री गणेशदेई रानी
4. गोपाल जी देवी
5. गोपाल बांबोली
6. एक ग्वाल भक्त जी
7. श्री जसू स्वामी जी
8. श्री तिलोक सोनारजी
9. श्री त्रिलोचन जी
10. श्रीनन्ददास वैष्णव सेवी
11. श्री नीवाजी
12. विष्णुदास काशीर
13. दो बाईं सुत विष देनी
14. वारमुखी जी
15. (जयतारन) विदुररेवती वाले)
16. मनसुखदास स्त्री नथ
17. श्री माधवदास जी
18. श्री रामदास जी
19. श्री रसिकमुरारिजी
20. रानी जी सुतविषदेनी
21. राजा उस रानी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

22. राजा उस बाई का
23. श्री रामरयन की धर्मपत्नी
24. श्री लाखा जी
25. सदाव्रती महाजन
26. श्री संत जी
27. श्री 6 सेन जी
28. श्री हरिराम हठीले
29. निष्किंचन नाम हरिपाल ब्राह्मण ।

(22) सेवा निष्ठा (10 भक्त)

1. श्री आसकरन
2. श्री राजकुमार किशोर सिंह जी
3. श्री नृपमणि जगत सिंह जी
4. श्री जयमल जी
5. श्री नरहरियानन्द जी
6. श्री प्रेमनिधि जी
7. श्री विष्णाक्सेनजी
8. श्री लक्ष्मी देवी जी
9. श्री शेष जी
10. श्रीरामदूत हनुमानजी

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट-2

भक्तमाल का संयुक्त कृतित्व

किशोरीलाल गुप्त

सामान्यया स्वीकार किया जाता है कि भक्तमाल नाभादास जी की रचना है और नाभादास तथा नारायणदास एक ही व्यक्ति के दो नाम है। पर भक्तमाल के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि यह ग्रंथ एक व्यक्ति की रचना नहोकर कम से कम तीन व्यक्तियों की संयुक्त कृति है। ये तीन व्यक्ति–अग्रदास और उनके शिष्य नारायणदास तथा नाभादास।

शिवसिंह सरोज के अनुसार भक्तमाल में कुल 108 छप्पय है।[1] ग्रियर्सन ने भी (संभवतः सरोज के ही आधार पर) इस ग्रंथ में कुल 108 छप्पयों के होने के बात लिखी है।[2] आचार्य शुक्ल ने इसें 316 छप्पयों में लगभग 200 भक्तों के चरित्र वर्णित होने का उल्लेख किया है।[3] पर इस समय भक्तमाल के जो भी मुद्रित या हस्तलिखित संस्करण सुलभ है, उमें कुल छंद 214 हैं, जिनमें 17 दोहे (छंद संख्या 1,2,3,4,29,203-14) और 197 छप्पय हैं। 'भक्तमाल' नाम से इसें 108 छप्पय होनेवाली बात समीचीन प्रतीत होती है, शुक्ल जी ने न जाने किस आधार पर छंद संख्या 316 दी है। स्पष्ट है कि भक्तमाल में परिवर्द्धन हुआ है (और यदि शुक्लजी को प्रमाण माना जाय तो इसमें संकोचन हुआ है) और इसमें 197-108 = 89 छप्पय बाद में जोड़े गए हैं।

भक्तमाल में कवित्त, दोहा और छप्पय छंदों का प्रयोग हुआ है। दोहे भूमिका एवं उपसंहार के लिये प्रयुक्त हुए हैं, छप्पय भक्तकीर्ति के लिये। रूपकला जी के अनुसार भक्तमाल में 195 छप्पय है, आदि में चार दोहे हैं, एक कुंडलिया तथा एक दोहा मध्य में, अंत में तेरह दोहे हैं।[4] उन्होंने कुंडलियों का छंदांक नहीं दिया है। यह उनका भ्रम ही है। भक्तमाल में एक भी कुंडलिया नहीं है।

भक्तमाल के मूल रचयिता नाभादास है तथा इनका नाम ग्रंथ के अंत में आया है–

काहू के बल जोगजग, कुल करनी की आस।
भक्त नाम माला अगर उर (बसौ) नरायनदास ।।[314]

नाभादास का नाम भक्तमाल भर में कहीं नहीं आया है। ध्रुवदास जी का रचनाकाल संवत् 1650-98 वि. है। उन्हो इसी बीच किसी समय 'भक्तनामावली' की रचना की होगी। इस ग्रंथ की रचना में भक्तमाल से सहायता ली गई है, इसमें संदेह नहीं। इस ग्रंथ में भक्तमाल के कर्ता को नारायदास के नाम से स्मरण किया गाया है, न कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाभादास के नाम से–

भक्त नरायन भक्त सब धरे हिये दृढ़ प्रीति ।
बरने आछी भाँति सों जैसी जाकी रीति ॥108

इससे स्पष्ट है कि ध्रुवदासकृत भक्तनामावली के समय तक भक्तमाल नामा जी की रचना के रूप में नहीं प्रख्यात था प्रत्युत नारायणदास की कृति के रूप में ही विश्रुत था।

मेरा ऐसा खयाल है कि नारायणदास के मूल भक्तमाल का परिवर्द्धन नाभादास ने किया और आज वह जिस रूप में उपलब्ध है, उसे वह रूप देने का श्रेय नाभादास को प्राप्त है, इसीलिये लोग ग्रंथ के मूल लेखक को भूल गए और संपादक तथा परिवर्द्धक को मूल लेखक समझने लगे। पर ग्रंथ के अंतिम छंद में 'नारायणदास' लगा हुआ है, उसे क्या करें। इस समस्या को सुलझाने के लिये उन्होंने नारायणदास और नाभादास को एक ही व्यक्ति के दो नाम मान लिए। मेरा यह भी खयाल है कि नाभादास ने मूल भक्तमाल का परिवर्द्धन दो प्रकार से किया, एक तो इसमें अपने गुरु अग्रदास की रचनाओं को मिलाकर, दूसरे अपनी कुछ नई रचनाएँ जोड़कर ।

अव प्रश्न उठता है कि वर्तमान भक्तमाल के कौन कौन से अंश किस व्यक्ति के है। मैं यह मानकर चलता हूँ कि भक्तमाल नारायणदास की रचना है। इसके लिये भक्त माल का अंतिम दोहा एवं ध्रुवदासकृत भक्तनामावली का प्रमाण ऊपर दिया गया है। मेरी मान्यता यह है कि नाभादास ने ग्रंथ की भूमिका एवं उपसंहार में कोई परिवर्तन नहीं किया है और भक्तमाल के सभी दोहे नारायणदास की ही रचना है, नाभादास ने केवल छप्पयों को ही बढ़ाया है। मैं यह मानता हूँ कि पहले ग्रंथारंभ में 5 दोहे थे। अब ग्रंथारंभ में केवल 4 दोहे है, इनके उपरांत 24 छप्पय (छंदांक 5-28) है, फिर एक दोहा। धारणा है कि ये चौबीसों छप्पय बाद में जोड़े गए। इस प्रकार पांचों दोहों को एक सूत्रता में पच्चड़ पड़ गया। इस समय जो 29वाँ छंद है, पहले वह संख्या 5 पर रहा होगा। मेरा यह विश्वास है कि चौबीस छप्पय अग्रदास कृत है। वे सभी स्तुतिपरक है और स्तुति के व्याज से इनमें सतयुग, त्रेता और द्वापर के भक्तों का स्मरण किया गया है। इन छप्पयों की सामग्री को संख्यानुसार संक्षेप में इस प्रकार रखा जा सकता है–

5. चौबीस अवतारों का उल्लेख–1. मीन, 2. वाराह, 3. कमठ, 4. नरहरि, 5. वामन, 6. परशुराम, 7. रघुवीर (राम), 8. कृष्ण, 9. बुद्ध, 10. कल्की, 11. व्यास, 12. पृथु, 13. हरि, 14. हंस, 15. मन्वंतर, 16. यज्ञ (पुरुष), 17. ऋषभ, 18. हयग्रीव, 19. ध्रुव को वर देनेवाले, 20. धन्वतरि, 21. बद्रीपति, 22. दत्त (दत्तात्रेय), 23. कपिल, 24. सनकादिक ।

6. रघुवीर के 22 चरणचिह्न–1. अंकुश, 2 अँबर, 3. कुलिश, 4. कमल, 5. यव, 6. ध्वजा, 7. चक्र, 8. स्वस्तिक, 9. ऊर्ध्व रेखा, 10. अष्टकोण, 11. पुरुष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये ग्यारह दाहिने पैर के चिह्न है; और 1. गोपद, 2. शंख, 3. जंबूफल, 4. कलश, 5. सुधाकुंड, 6. अर्द्धचंद्र, 7. षट्कोण, 8. मीन, 9. बिन्दु, 10. त्रिकोण, और 11. इंद्रधनुष ये बाएँ पैर के ।

7. द्वादश प्रधान भक्त–1. ब्रह्मा, 2. नारद, 3. शिव, 4. सनक, सनंदन, सनातन सनत्कुमार, 5. कपिल, 6. मनु, 7. प्रह्लाद, 8. जनक, 9. भीष्मपितामह, 10. बलि, 11. शुकदेव मुनि, 12. धर्मराज ।

8. नारायण के 16 पार्षद–1. विष्वक्सेन, 2. सुखेन, 3. जय, 4. विजय, 5. बलि, 6. प्रबल, 7. नंद, 8. सुनंद, 9. भद्र, 10. सुभद्र, 11. चंद्र, 12. प्रचंड, 13. कुमुद, 14. कुमुदाक्ष, 15. शील, 16. सुशील ।

9. 23. हरिबल्लभ–1. लक्ष्मी, 2. गरुड़, 3. सुनंद आदि सोलहो पार्षद, 4 हनुमान, 5. जामवंत, 6. सुग्रीव, 8. विभीषण, 8. शबरी, 9. जटायु, 10. ध्रुव, 11. उद्धव, 12. अंबरीष, 13. विदुर, 14. अक्रूर, 15. सुदामा, 16. चंद्रहास, 17. चित्रकेतु, 18. गजराज, 19. ग्राह, 20. पंच पांडव, 21. मैत्रेय मुनि, 22. कुंती, 23. द्रौपदी ।

10. हरि को अपने हृदय में बसाने वाले 21 भक्त-1. (नव) योगेश्वर, 2. श्रुतिदेव, 3 अंग, 4. मुचुकुंद, 5. प्रियव्रत, 6. पृथु, 7. परीक्षित, 8. शेषनाग, 9. सूतजी, 10. शौनक आदि ऋषि, 11. प्रचेतागण, 12-15 सतरूपा और उनकी तीन कन्याएं प्रसूती, आकूती, देवहूती, 16. सुनीता, 17. सती, 18. सभी पतिव्रताएं, 19. मंदालसा, 20. मथुरा की राजपत्नियाँ, 21. ब्रजनारियां ।

11. 18. भक्त-1. प्राचीन वर्हि, 2. सत्यव्रत, 3. रहूगण, 4. सगर, 5. भगीरथ, 6. वाल्मीकि, 7. मिथिलेश जनक, 8. रुक्मांगद, 9. हरिश्चंद्र, 10. भक्त, 11. दधीचि, 12. सुरथ, 13. सुधन्वा, 13. शिविर, 14. अति सुमति (राजा बलि की पत्नी) 15. नील, 16. मोरध्वज, 17. ताम्रध्वज, 18. अलर्क।

12. 30. भक्त-1. ऋभु, 2. इक्ष्वाकु, 3 ऐल, 4. गाधि, 5. रघु, 6. रथ, 7 गय, 8. शतधन्वा, 9. अमूरत, 10. रंतिदेव, 11. उत्तंग, 12. मूरिषेण, 13. देवल 14. वैवस्वत मनु, 15. नहुष, 16. ययाति, 17. दिलीप, 18. पुरु, 19. यदु, 20. गुह, 21. मांधाता, 22. पिप्पल, 23. निमि, 24. भरद्वाज, 25. दक्ष, 26. शरभंग, 27. संजय, 28. समीक, 29. उत्तानपाद, 30. याज्ञवल्क्य ।

13. 12 भक्त-1. कवि, 2. हरि, 3. करमाजन, 4. अंतरिक्ष, 5. चमस, 6. प्रबुध, 7. आविर्होता, 8. पिप्पलायन, 9. द्रुमिल, 10. जयंती, 11. निमि, 12. नव योगेश्वर।

14. नवधा भक्ति के प्रतीक नवभक्त–1. परीक्षित (श्रवण), 2. शुकदेव (कीर्तन) 3. प्रह्लाद, (स्मरण), 4. लक्ष्मी (पाद-सेवन), 5. पृथु (अर्चन), 6. अक्रूर (बदन),

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7. हनुमान (दास्य), 8. अर्जुन (सख्य), 9. बलि (आत्मनिवेदन) ।

15. 16 प्रसादनिष्ठ भक्त-1. शंकर, 2. शुक, 3. सनकादि, 4. कपिल, 5. नारद, 6. हनुमान, 7. विष्वक्सेन, 8. प्रह्लाद, 9. बलि, 10. भीष्म, 11. अर्जुन, 12. ध्रुव, 13. अंबरीध, 14. विभीषण, 15. अक्रूर, 16. उद्धव ।

16. 26 ऋषि–1. अगस्त्य, 2 पुलस्त्य, 3. पुलइ, 4. च्यवन, 5. वशिष्ठ, 6. सौभरि, 7. कर्दम, 8. अत्रि, 9. ऋचीक, 10. गर्ग, 11 गौतम, 12. व्यासशिष्य (संजय), 13. लोमश, 14. दालभ्य, 16. अंगिरा, 17. शृंगी; 18. मांडव्य, 19. विश्वामित्र, 20. दुर्वासा, 21. जाबालि, 22. यमदग्नि, 23. मायादर्श, 24. कश्यप, 25. परबत, 26. पाराशर ।

17. अठारह पुराण–1. ब्रह्म, 2. विष्णु, 3. शिव, 4. लिङ्ग, 5. पद्म, 6. स्कंद, 7. वामन, 8. मीन, 9. वाराह, 10. अग्नि, 11. कूर्म, 12. गरुड़, 13. नारद, 14. भविष्य, 15. ब्रह्मवैवर्त, 16. माकण्डेय, 17. ब्रह्मांड, 18. भागवत ।

18. अठारह स्मृतियाँ–1. मनु, 2. आत्रेय, 3. वैष्णव, 4. हारीत, 5. याम्य, 6. याज्ञवल्क्य, 7. आर्गिरस, 8. शनैश्चर, 9. सांवर्तक, 10. कात्यायन, 11. सांखल्य, 12. गौतम, 13. वशिष्ठ, 14. दाक्ष्य, 15. वार्हस्पत्य, 16. आतातप, 17. पाराशर, 18. क्रतु।

19. राम जी के आठ सचिव–1. धृष्टि, 2. जयंत, 3 विजय, 4. राष्ट्रवर्धन, 5. सुराष्ट्र, 6. द्विविध, 7. मथंद, 8. उल्कासुभट, 9. सुखेन, 10. हरिमुख, 11. कुमुद, 12. नील, 13. नल, 14. शरभ, 15. गवय, 16. गकाक्ष, 17. पनस, 18. गंधमादन।

21. नव नंद-1. घरानंद, 2. ध्रुवनंद, 3. उपनंद, 4. अभिनंद, 5. नंद, 6. रघुनंद, 7. कर्मानंद, 8. धर्मानंद, 9. वल्लभनंद ।

22. ब्रजभक्त-नंद, गोप, उपनंद, धरानंद, यशोदा, कीरति, वृषभानु, राधा, मधुमंगल, सुबल, सुबाहु, भोज, अर्जुन, श्री दामा आदि।

23. कृष्ण जी के सोलह अनुग-1. रक्तक, 2 पत्रक, 3 पत्री, 4. मधुकंठ, 5. मधुवर्त, 6. सराल, 7. विशाल, 8. प्रेमकंद, 9. मकरंद, 10. सदाआनंद, 11. चंद्रहास, 12. पयद, 13. बकुल, 14. रसदाम, 15. शारद, 16. बुद्धिप्रकाश ।

24. सप्तद्वीप के भक्त–जंबू प्लक्ष, शाल्यलि, कुश, क्रौच, शाक और पुष्कर, इन सात द्वीपों के भक्त।

25. जंबूद्वीप के नव खंडों के भक्त-इलावर्त, रमणक, हिरण्य, (उत्तर) कुरु, हरिवर्ष, किंपुरुष भरत, भद्राश्व और केतुमाल, इन नव खंडों के भक्त ।

26. श्वेत द्वीप के भक्त ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

27. अष्टकुल नाग-एलापत्र, अनंत, पद्म, शंकु अशुकंबल, वासुकी, ककोंटक, तक्षक ।

28. चतुर्व्यूह वैष्णव-रामानुज, विष्णुस्वामी, मध्वाचार्य और निंबार्क ।

भक्तमाल के छंदों में कहीं भी कवि छाप नहीं है। पर इन चौबीस छप्पयों में दो में स्पष्ट ही अग्रदास की छाप हैं, इसीलिये मैं इन सभी को अग्रदास की रचना समझने का साहस कर रहा हूँ। ये दोनों छप्पय ये हैं–

1.

जय जय मीन, वराह, कमठ, नरहरि, बलि-वासन ।
परशुराम, रघुवीर, कृष्ण, कीरति जग पावन ॥
बुद्ध, कलंकी, व्यास, पृथु, हरि, हंस, मन्वंतर ।
यज्ञ, ऋषभ, हयग्रीव, ध्रुव वर देन, धन्वंतर ॥
बदरीपति, दक्ष, कपिलदेव, सनकादिक करुणाकरौ ।
चौबीस रूप लीला रुचिर, 'अग्रदास' उर पदधरौ ॥5॥

2.

इलापत्र, मुख-अनँत, अनँत कीरति बिसतारत ।
पद्म, संकु पन प्रगट ध्यान उर तैं नहिं टारत ॥
अशुकंवल, वासुकी अजित आज्ञा अनुबरती ।
करकोटक, तक्षक, सुभट सेवा सिर धरती ॥
आगमोक्त शिवसंहिता, 'अगर' एक रस भजन रति ।
उर अस्टकुल द्वारपाल, सावधान हरिधाम थिति ॥27॥

सत्ताइसवें छंद के संबध में रूपकला जी ने यह पादटिप्पणी दी है–'श्री अग्रस्वामी का यह छप्पय मंगल जान श्री नाभा जी ने यहाँ रखा है अथवा भक्तमाल के सतयुग, त्रेता, द्वापर नाम पूर्वार्द्ध के अंत में स्वयं श्री नाभा जी ने ही अपने गुरु श्री अग्रस्वामी का छाप रखा है, अस्तु ।

–भक्तमाल का भक्तिसुधास्वाद तिलक, पृ. 254 ।

रूपकला जी ने भक्तमाल के दो खंड पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध माने हैं। पूर्वार्द्ध 27वें छंद के पश्चात् समाप्त होता है। इसमें सतयुग, त्रेता और द्वापर के संतों का उल्लेख हुआ है। 28वें छप्पय में कलियुग के चार वैष्णव आचार्यों का उल्लेख हुआ है, इसलिये इसे उत्तरार्द्ध में ले लिया गया है। मैं भक्तमाल का विभाजन इस प्रकार नहीं करता। मैं इसके तीन खंड मानता हूँ–1. भूमिका-छंद 1 से 29 तक । इसमें 5 दोहे और 24 छप्पय हैं। छप्पय सभी स्तुतिपरक हैं, इनमं युगभेद नहीं करना चाहिए, जैसी कि मेरी मान्यता है। ये सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छप्पय अग्रदास जी के हैं। 2 मुख्यग्रंथ-छंद 30 से 199 तक। इसमें भक्तों अथवा भक्तसमूहों का वर्णन हुआ है। 3. उपसंहार-छंद 200 से 214 तक। इनमें 200, 201, 202 संख्यक छंद छप्पय हैं। इनमें साधु-महिमा का वर्णन हुआ है। वे अग्रदास की रचना है। इनमें से प्रथम दो में अग्रदास की छाप भी है, एक में नहीं है। ये छंद बाद में नाभादास द्वारा जोड़े गए हैं।

1.

कवि जन करत विचार बड़ौ कोउ ताहि भनिज्जै ।
कोउ कह अवनी बड़ी, जगत आधार फनिज्जे ।।
सो धारी सिर सेस, सेस शिव भूषन कीनौ ।
शिव आसन कैलास, भुजा भरि रावन लीनौ ।।
रावन जीत्यौ बालि, बालि राघो, इक सायक दंड़े ।
'अगर' कहै त्रैलोक में हरि उर धरें तेई बड़े ।।200।।

2.

नेह परसपर अघट निबहि चारों जुग आयों ।
अनुचर कौ उतकर्ष स्याम अपनै मुख गायो ।।
ओत प्रोत अनुराग प्रीति सबही जग जानैं ।
पुर प्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जु बखानैं ।।
'अगर' अनुज गुन बरनतै सीतापति नित होंय बस ।
हरि सुजस प्रीति हरिदास कें, त्यों भावे हरिदास जस ।।201।।

3.

दुर्वासा प्रति स्याम दास बसता हरि भाखी ।
ध्रुव, गज, मुनि ब्रह्लाद राम शबरी फल साखी ।
राजसूय यदुनाथ चरण धोय जूंठ उठाई ।
पांडव विपति निवारि, दियौ विषय विषया पाई ।।
कलि विशेष परचौ प्रगट, आस्तिक ह्वै कै चित धरौ ।
उतकर्ष सुनत संतनि कौ, अचरज कोउ जिनि करौ ।।202।।

छप्पय संख्या 200, 201 के संबंध में रूपकला जी की यह टिप्पणी है–

'बोध होता है कि श्री अग्रदास जी के इन छप्पयों को श्री नाभा स्वामी ने परम उत्तम मंगलप्रद जानकर यहाँ स्थान दिया है अथवा मंगल के लिये अपने ही इन छंदों में श्री अग्र जी का छाप दे दिया है। इति शुभ ।'

–भक्तमाल का भक्ति-सुधा-स्वाद तिलक, पृ. 624 ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छप्पय 202 छापहीन है। हो सकता है, यह नाभादास की ही रचना है। भावसाम्य से यह अग्रदास का ही प्रतीत होता है।

उपसंहार के छंद 203-14 दोहे हैं। ये मूल लेखक नारायणदासकृत है। अंतिम दोहे में भी 'अगर' नाम है आया है–

भक्त-नाम-माला अगर उस (बसौ) नरायनदास 214,

बंबई वाली प्रति में 'बसौ' कोष्ठक में नहीं है। रूपकलाजी ने इस पंक्ति की टीका इस प्रकार की है–

'अनंत श्री गुरु अग्रस्वामी की कृपा से मुझ नारायणदास (नाभा) के हृदय में श्री अग्रदेव तथा यह भक्त नाम माल बसें (या बसें हैं) ।'

–भक्ति-सुधा-स्वाद तिलक, पृ 932 ।

मेरी समझ से यह अर्थ ठीक है और इसें आया 'अगर' कविछाप नहीं है।

इतने विवेचन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि छप्पय 5-28 और 200-202 अग्रदास की रचनाएँ हैं। इनमें से 5, 27, 200, 201 में अग्रदास की छाप भी हैं। इन्हें नाभादास जी ने भक्तमाल को वर्तमान रूप देते समय बाद में जोड़ा। यह भी हो सकता है कि इन 27 छप्पयों में से कुछ छप्पय नाभादास के भी हों। इनमें एक भी नारायणदास कृत नहीं है।

नारायणदास और नाभादास की विभिन्नता

नाभादास और नारायणदास एक ही व्यक्ति समझें जाते रहे हैं, पर ये विभिन्न व्यक्ति हैं। ग्रियर्सन के अनुसार नाभादास ने 108 छप्पयों में भक्तमाल रचा, फिर इनके शिष्य नारायणदास ने शाहजहाँ के शासनकाल में इसे पुनः लिखा।[5] स्पष्ट है, ग्रियर्सन नाभादास और नारायणदास को दो भिन्न व्यक्ति मानते हैं, पर उनके संबंध की एवं उनके समय की जो कल्पना उन्होंने की है, वह ठीक नहीं। वस्तुतः नारायणदास ने पहले भक्तमाल की रचना की, तदनंतर नाभादास ने शाहजहां के शासनकाल में इसका संपादन एवं परिवर्तन किया। ये दोनों व्यक्ति गुरुशिष्य नहीं थे, गुरुभाई थे–एक ही गुरु अग्रदास के शिष्य। भक्तमाल के प्रारंभ में नारायणदास ने इसकी रचना का कारण अग्रदेव की आज्ञा माना है और आज्ञा गुरु ही दे सकता है।

अग्रदेव आज्ञा दई, भक्तन कौ जस गाव ।
भवसागर के तरन को नाहिंन आन उपाव ॥4॥

पुनः अंतिम दोहे में, जो ऊपर उद्धृत किया जा चुका है, नारायणदास ने अग्रदेव के अपने उर में बसने की बात कही है, इससे भी उनका गुरु होना ही सिद्ध होता है।

नाभादास ने दो अष्टयाम लिखे हैं। एक गद्य में हैं दूसरा पद्य में। आचार्य शुक्ल ने दोनों का उल्लेख किया है।[6] पद्यबद्ध अष्टयाम की एक प्रति नागरीप्रचारिणी सभा की खोज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में मिली है।[7] इसमें नाभादास ने अग्रदास का स्मरण गुरुरूप में किया है–

1. 'नाभा' श्री गुरु दास, सहचर 'अग्र' कृपाल को ।
विहरत सकल विलास, जगत विदित सिय सहचरी ।
2. श्री अग्रदेव करुणा करी, सिय पद नेह बढ़ाय ।
3. श्री अग्रदेव गुरु कृपा तें, बाढ़ी नवरस बेलि ।

स्पष्ट है कि नारायणदास और नाभादास दोनों अग्रदास के शिष्य थे, परस्पर गुरुशिष्य नहीं थे, जैसा कि ग्रियर्सन ने स्वीकार कर लिया है।

स्वयं नाभा के अष्टयाम से नारायणदास और नाभा की विभिन्नता सिद्ध है। अष्टयाम में नाभा ने नारायणदास को अपने से भिन्न एवं अग्रदास के सहचर (शिष्य) रूप में स्मरण किया है।[8]

सहचर श्री गुरुदेव के नाम नरायनदास ।
जगत प्रचुर सिय सहचरी विहरत सकल बिलास ।।
भवसागर दुस्तर महा, मोहि मगन लखि पाइ ।
सदय हृदय जिनको सरस तब यह भई रजाइ ।।[5]

नाभा को कुछ लोग क्षत्रिय कहते हैं और कुछ हनुमान वंशीय डोम। मेरा ऐसा खयाल है कि इसमें से एक जाति नारायणदास की है और दूसरी नाभा की है। जिस तरह इनके नाम मिल गए, उसी तरह इनकी जाति भी। नाभादास संभवतः डोम थे। डोम से अभिप्राय शूद्र बंसफोड़ डोमड़े से नहीं है। ग्रह भाट, धारण, कत्थक के समान गायकों की एक उत्तम जाति है, जैसा कि इस कहावत से प्रकट है–

नाच न जाने डोमनी, गावै ताल बेताल ।

नाभादास को रूपकला जी ने इसी प्रकार का डोम स्वीकार किया है।[9]

भक्तमाल में नारायणदास और नाभादास का अलग अलग कृतित्व

विद्वानों के अनुसार भक्तमाल की रचना गोसाई विठ्ठलनात की मृत्यु (स, 1642) के पश्चात् और गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (सं. 1680) के पूर्व किसी समय हुई, क्योंकि भक्तमाल के टीकाकार रूपकला जी इसका रचनाकाल सं 1649 मानते हैं।[10] उपलब्ध भक्तमाल में एकाध ऐसे भी भक्त हैं, जिनका जन्म भी सं 1649 में न हुआ रहा होगा, जैसे भगवंत मुदित। इनके संबंध में निम्नांकित छप्पय भक्तमाल में मिलता है–

कुंज बिहारी केलि सदा अभ्यंतर भाखै ।
दंपति सहज सनेह प्रीति परमिति परकासै ।।
अननि भजन रसरीति पुष्ट मारग करि देखी ।
विधि निषेध बल त्यागि पागि रति हृदय विसेखी ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधव सुत संमत रसिक, तिलक दाम धरि सेय लिय।
भगवंत मुदित उदार जस रस रसना आस्वाद किय ।।198।।

माधवदास के पुत्र भगवंत मुदित आगरे के सूबेदार के मुख्य मंत्री थे। यह वृंदावन के गोविंददेव के मंदिर के अधिकारी श्री हरिदास जी के शिष्य थे, इनके लिखे हुए निम्नांकित ग्रंथ खोज में प्राप्त हुए हैं–

1. हितचरित्र 1909/23 ए।
2. सेवकचरित्र 1909/23 बी।
3. रसिक अनन्यमाला 1903/23 सी।
4. वृंदावन शतक 1912/21।

इनमें से वृंदावन शतक का रचनाकाल सं. 1707 है।

संवत दस सै सात सै अरु सत वर्स हैं जानि
चैत मास में चतुर वर भाषा कियो बखानि

जिन भगवंत मुदित का रचनाकाल सं. 1707 है, वे सं 1949 के पूर्व प्रसिद्ध भक्त और महात्मा के रूप में कदापि नहीं उपस्थित रहे होंगे, संभवतः उस समय उत्पन्न भी न हुए रहे होंगे। स्पष्ट है यह छप्पय बाद में जोड़ा गया।

इसी प्रकार भक्तमाल के एक भक्त गोविंददास भक्तमाली है। इनका विवरण निम्नांकित छप्पय में है–

रुचिर सील, घननील लील रुचि, सुमति सरित पति।
विविध भक्त अनुरक्त व्यक्त बहु चरित, चतुर अति ।।
लघु दीरघ सुर सुद्ध वचन अविरुद्ध उचारन।
बिस्व बास बिस्वास दास परिचय बिस्तारन ।।
जानि जगत हित सब गुननि सु सम न रायनदास दिय।
भक्त रत्नमाला सुधन 'गोविंद' कंठ विकास किय ।।192।।

इन गोविंददास को संपूर्ण संसारी जीवों का हित करनेवाला और सब शुभ गुणों में अपने समान जानकर नारायणदास ने इन्हें भक्तमाल पढ़ा दिया था। यह उसका अत्यंत शुद्ध पाठ करते थे। इस छप्पय से स्पष्ट है कि मूल भक्तमाल के रचयिता नारायणदास थे और मूल ग्रंथ में यह छप्पय नहीं था। इसे बाद में नाभादास ने जोड़ा। यदि यह छप्पय नारायण का ही होता तो इन्होंने यह लिखा होता कि मैंने गोविंददास को भक्तमाल पढ़ाया। वे यह कदापि न लिखते कि नारायणदास ने पढ़ाया। जिस समय यह भक्तमाल रचा गया, उस समय यह गोविंददास संभवतः कोमल किशोर रहे होंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तमाल के 30 से 199 संख्यक 170 छप्पयों में भक्तों का विवरण है। इनमें से 108 छप्पय नारायणदास को होने चाहिए और 170-108 = 62 छप्पय नाभादास के। ऊपर उद्धृत दो छप्पय तो निश्चित रूप से नाभादास कृत हैं, अब और कौन से 60 छप्पय इनके हो सकते हैं, इसपर विचार किया जा सकता है।

कृष्णदास पयहारी पर भक्तमाल में दो छप्पय (38, 185) है और दोनों दो जगह पर हैं। मेरा विश्वास है कि पहला छप्पय (38) नारायणदास कृत है और दूसरा (185) नाभादास कृत ।

महाप्रभु बल्लभाचार्य के पिता लक्ष्मण भट्ट का परिचय छप्पय 184 में ग्रंथ केअंत में दिया हुआ है। लगता है नाभादास ने इसे बाद में जोड़ा ।

भक्तमाल के एक छप्पय में प्रायः एक ही भक्त का वर्णन है। कुछ छप्पय ऐसे भी है जिनमें एक कोटि के अनेक भक्तों का सामूहिक नामोल्लेख हुआ है, यथा 32-34, 49-48, 69-78, 82, 85 95-107, 109, 112-14, 116-22, 134, 136, 138, 141-51, 153-58 आदि। भक्तों की माला में एक भक्त एक मनका के समान होना चाहिए। नारायणदास ने संभवतः इस बात का ध्यान रखा होगा और सामूहिक नामोल्लेख करनेवाले छप्पय अधिकांश रूप नाभादास के होने चाहिए। फिर भी अंतिम रूप से यह कहना शक्य नहीं कि कौन कौन से छप्पय नारायणदास के हैं और कौन कौन से नाभादास के । हो सकता है भविष्य में कहीं संवत् 1700 के पूर्व की लिखी भक्तमाल की कोई पांडुलिपि मिल जाय जिसमें वह मूल-रूप में हो, तभी दोनों व्यक्तियों का अलग अलग कृतित्व ठीक से ज्ञात हो सकेगा।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. शिवसिंह सरोज, कवि संख्या 402 ।
2. हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास, कवि संख्या 51 ।
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 156 ।
4. भक्तमाल का भक्ति-सुधा-स्वाद-तिलक पृ. 42 ।
5. हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास, कवि सख्या 51 ।
6. हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. 148 ।
7. खोज रिपोर्ट 1923/289 ।
8. खोज रिपोर्ट 1920/111 ।
9. भक्तमाल का भक्ति-सुधा-स्वाद तिलक, पृ. 151 ।
10. भक्तमाल का भक्ति-सुधा-स्वाद तिलक, पृ 953 ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट-3

नाभादास कृत भक्तमाल की तीन टीकाएँ

उदयशंकर दुबे

हरि को निज जस तें अधिक भक्तन जस पर प्यार ।
ताते यह माला रची करि ध्रुव कंठ सिंगार ॥

–ध्रुवदास जी

अपने गुरु अग्रदास के आशीर्वाद और प्रेरणा से नाभादास ने भक्तमाल की रचना की थी। भक्तमाल भक्तों का कंठहार है। भागवत पुराण के कथावाचक व्यास आज भी भागवत की कथा के साथ-साथ भक्तमाल से भक्तों का दृष्टांत देते हैं हिन्दी के भक्त कवियों के विषय में भक्तमाल में पर्याप्त सामग्री भरी पड़ी है। इस ग्रंथ की उपादेयता इसी से सिद्ध है कि अब तक इस ग्रंथ के शताधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। यहीं नहीं नाभादास के अनुकरण पर हिन्दी में कई कवियों ने समय-समय पर 'भक्तमाल' की रचना की है।

नाभादास कृत भक्तमाल पर अब तक तीन प्राचीन टीकाएँ उपलब्ध हैं जिनमें प्रियादास कृत ब्रजभाषा पद्य में लिखित भक्त रसबोधिनी टीका सर्वाधिक प्रसिद्ध है। प्रियादास की टीका के अतिरिक्त भक्तमाल की भक्त रसबोधिनी टीका को मानकर उनके पुत्र वैष्णव दास ने 'भक्तमाल भक्त रस ब ोधिनी दृष्टांत सार' ग्रंथ की रचना की । इसके अतिरिक्त उन्होंने गीतगोविन्द-भाषा की (गद्य), भक्तमाल प्रसंग (गद्य-पद्य) और भक्तमाल माहात्म्य (गद्य) जैसे विशिष्ट ग्रंथों को लिखा। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज विवरणिकाओं उनके द्वारा रचित ग्रंथों का विवरण मिलता है–

वैष्णवदास–प्रियादास के पुत्र । वृंदावन, निवासी भक्त रसबोधिनी टीका के दृष्टांत कार । संवत् 1844 के लगभग वर्तमान 04-88 ।

गीतगोविन्द (भाषा), (गद्य)09-32 च, 41-248 ।

भक्तमाल प्रसंग (गद्य-पद्य) - 10-54) ।

भक्तमाल माहात्म्य (गद्य) 06-247[1]

चूँकि वैष्णवदास जी प्रियादास के पुत्र थे। अतः उन्हें बचपन से ही भक्तमाल और उसकी भक्त रस बोधिनी टीका के अध्ययन-मनन का सौभाग्य मिला था। इसी कारण से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने भक्तमाल को लेकर तीन ग्रंथों की रचना की-1. भक्तमाल, भक्त रस बोधिनी टीका : दृष्टांत सार, 2. भक्तमाल प्रसंग और भक्तमाल माहात्म्य । वैष्णवदास रचित दृष्टांत सार की मुद्रित प्रति तो मेरे देखने नहीं आई किंतु इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रतियों के अध्ययन करने का सुयोग अवश्य प्राप्त हुआ है। वैष्णव दास संस्कृत के उद्भट विद्वान् थे। यह दृष्टांत[2] सार ग्रंथ में दी गई टिप्पणियों से ज्ञात होता है।

वैष्णवदास के विषय में मेरे मित्र श्री उदयशंकर शास्त्री (अब स्वर्गीय) का कथन है कि–निम्बार्क संप्रदाय के संत श्री वैष्णव दास जी की टिप्पणी अनेक शास्त्र और हिन्दी के काव्य पदों से संपन्न होने के कारण भक्तमाल का प्राण समझी जाती है। यह संवत् 1782वि. में लिखी गई थी उन्होंने भक्त माल बोधिनी और भक्तमाल प्रसंग भी लिखे थे। कुछ लेखकों ने भक्तमाल माहात्म्य सहित इन तीनों ग्रंथों के रचयिता को एक ही व्यक्ति मान लिया है और उनका रचनाकाल संवत् 1884। बताया है किंतु प्र रि के अनुसार एक एक वैष्णव दास जी का जन्म संवत् (समय) 1782 निश्चित होता है, अतः दोनों वैष्णवदास भिन्न-भिन्न थे। (सर्वेश्वर भक्तमाल-भूमिका, पृष्ठ-20; सर्वेश्वर पत्रिका, वृन्दावन)। डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने अपने तुलसीदास ग्रंथ में वैष्णवदास की टिप्पणी को स्थान दिया है और इसका समय संवत् 1800 माना है। इस ग्रंथ की संवत् 1848 वि. की एक हस्तलिखित प्रति उनके संग्रह में थी[3] श्री शास्त्री जी ने वैष्णवदास की टिप्पणी का समय संवत् 1782 वि. माना है और डॉ. गुप्त ने संवत् 1800 माना है। दोनों विद्वानों द्वारा मान्य संवत् में अठारह वर्ष का अंतर है। श्री शास्त्री जी ने नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज विवरणिकाओं और अन्य स्रोतों के आधार पर दृष्टांत सार (टिप्पणी) का समय संवत् 1782 स्वीकार किया है, जो औचित्यपूर्ण है। वैसे श्री वैष्णवदास संवत् 1840 तक वर्तमान थे।

नाभादास रचित भक्तमाल और प्रियादास कृत भक्त रसबोधिनी टीका पर वैष्णवदास द्वारा दी गई टिप्पणी और दृष्टांत वास्तव में भक्तमाल का प्राण है। यहाँ पर वैष्णवदास द्वारा ओरछा (म.प्र.) के राजा मधुकर शाह पर दी गई एक टिप्पणी प्रस्तुत है–

"कंठीधारी पैं।" संस्कृत का एक श्लोक लिखने के बाद वैष्णवदास ने लिखा है कि "धन्य हमारा राजा ताके राज्य में गदहू (गदहा) भगत भए तौ मनुखान (मनुष्य) की तौ काहा गनती ।।" मनुष्य होइ कैं कंठी तिलक न धारै तौ गदहा हू ते गयौ।"

कवित्त–काठ की कठारी करि तपसी भरतवारि ।
काठ कौं सभारि धाम स्याम कौं विठामही ।
काठ की कमान सर काठ कीच नाप लेत ।
काठ काठी चढि रन सूर जीति आवही ।
काठ की शुमरनी सो साध हरि नाम लेत ।
काठ कौं पषान घसि देव कौं चढ़ावहीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काठ की अवज्ञा कौ करत बनि आवै नाहि।
नाव काठ की पै चढि नदी पार धावही।

–हस्तलिखित प्रति. पत्र 205

इस प्रकार वैष्णव दास ने भक्तमाल में वर्णित सभी भक्तों के विषय में संस्कृत के विविध प्रामाणिक ग्रंथों और हिन्दी के भक्त कवियों द्वारा उस समय तक लिखे गये ग्रंथों से उद्धरण प्रस्तुत कर अपने कथन की पुष्टि की है।

प्रियादास और वैष्णवदास की भाँति ही श्री ब्रज जीवन दास (हितरसिक) नाभादास के भक्तमाल पर प्रियादास की भक्त रसबोधिनी टीका को आधार मानकर स्वयं एक विशालकाय टीका ग्रंथ लिखा। हित रसिक ने संवत् 1872 वि. (फागुन पूर्णिया) को टीका लिखने का श्री गणेश किया और भादों शुक्ल पक्ष द्वादशी संवत् 1873 वि. को ग्रंथ पूर्ण किया। यह ग्रंथ पटना (बिहार) में गंगातट पर स्थित हरिदेव जी के मंदिर में लिखा गया था। हित रसिक हरिदेव मंदिर के महंत थे।

हित रसिक कृत भक्तमाल[4] टीका ग्रंथ की एक हस्तलिखित प्रति रस भारती-संस्थान-वृंदावन के संग्रह में सुरक्षित है। इस प्रति का लिपिकाल विक्रम संवत् 1887 है। प्रति में कुल 1 से 468 पत्र थे किंतु प्रारंभ के प्रपत्र (18 पृष्ठ) अनुपलबध हैं। प्रति की लिखावट सुंदर एवं स्पष्ट है।

हित रसिक ने अपनी टीका ब्रज भाषा पद्य में लिखी है। दोहा-चौपाई छंद में पूरा ग्रंथ लिखा गया है। बीच-बीच में अन्य कवियों द्वारा रचित छंदों को दृष्टांत रूप में रखा है। यह ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित है। नाभादास कृत भक्तमाल और उस पर प्रियादास की भक्त रस बोधिनी टीका को आधार बनाकर हित रसिक ने अपने ढंग से पद्यपय टीका लिखी थी। यहाँ हम उनके द्वारा रचित तुलसीदास पर लिखे वृत्त के कुछ छंद उद्धृत कर रहे हैं– टीकाकार ने 27 पृष्ठों में तुलसी का विवरण दिया है। बीच-बीच में अन्य कवियों द्वारा तुलसी की यशकीर्ति के छंदों को भी रखा है–

तुलसीदास जी की कथा

चौपाई

हिय रसना और नैनन कपट। सभन दबायो कलि जुग दपट ॥
रुक गई हरि आवन हृद वाट। पांचो मद भर लगे कपाट ॥
किहुं विधि नहि जीवन निस्तार। वाल्मीक कीयों हृदे विचार ॥
जंगम वपु तुलसी अवतार। आनंद वन में कियो विहार ॥
कविता मंजर सौरभ चार। राम भ्रमर चंवित रस सार ॥
त्रेता काव्य निबंध करायन। सभै जान सत कोट रमायण ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्म हत्या एक अक्षर घायन। सुन सुन कितने भये परायन ॥
अब भाषा भक्तन सुख देन। वरनी लीला मन हर लेन ॥-1009
दोहा--रामचरण रस मत्त ह्वै अहनिसि ब्रत रट नाम।
कियो वार बहु जनन कों, पहुचायो पर धाम ॥

× × ×

हितरसिक ने दोहा और चौपैया छंद के साथ कवित्त छंद में भी अपने भावों को व्यक्त किया है–

कवित्त

पूरण प्रकास कलि मोह तम नाशिबे कों।
अमल अदोस आस चारों फल देन सों।
भर्‌यो जस सुधा वसुधा में सब काल रहै।
पावे नर जान पान राम प्रेम अैन सो।
कुसल कुबुध क्यों प्रसंसा में समर्थ होत।
जान्यो जिन जिन वेद भेद तेन कहत वैन सो।
तीन ताप पीर भव भीर मिटि जात सब।
तुलसी कृत चंद्रमा निहारे नेक नैन सो ॥

अपने कथन की पुष्टि के लिये ब्रज जीवनदास ने तुलसीदास की रचना विनय पत्रिका से पदों को और कवितावली रामायण से छंदों को उद्धृत किया है। तुलसीदास की यशगाथा की परिसमाप्ति पर ब्रजजीवन दास ने नाभादास, प्रियादास और रूपसखी का स्मरण किया है–

दोहा–बड़रे कवि केशव भये तिन महिमा कही गाय।
श्री नाभा प्रियदास मिलि दियो सो जग जस छाय ॥
रूप सखी वर्णन कियो ठाकुर तो ष सुनाम।
तुलसी महिमा जो कहे वृज-जीवन वलि जाय ॥145॥

रूप सखी जी का छप्पे-

कृत जुग सिंधु निकंप तहाँ विधिवा कइ कौने।
नेता उपज्यो मोह केन कवि आदि पु तौने।
द्वापर विषम भयंकर हर रोगादि भव रसत।
व्यास आदि मुनि पुंग तहां तेहि काल उबारत।
कलि कलंक कलमल कलुख सत सहस्त्र लहरन भरत।
श्री तुलसीदास वानी विमल तेहि चढ़ जहाज सु नर तरत ॥1॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार ब्रज जीवन दास ने अपनी टीका में भक्तों की कथा को विस्तारपूर्वक लिखा आधार है–प्रियादास की भक्त रस बोधिनी टीका ।। बिहार में लिखी गई भक्तमाल पर यह प्रथम टीका है। ब्रज जीवनदास वृंदावन से पटना आये थे। आज भी उनके वंशज हरिदेव मंदिर के महंत हैं।

ऊपर वर्णित भक्त माल की तीनों टीकाओं का अपना-अपना वैशिष्ट्य है। वैष्णव दास और ब्रज जीवन दास की टीकाएँ सुलभ न होने से अभी तक तीनों टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन संभव नहीं हो सका है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ-422, ना. प्र. सभा, काशी संवत् 2021 ।
2. वैष्णवदास कृत भक्तमाल दृष्टांत ग्रंथ की एकहस्त लिखित खंडित प्रति लेखक के संग्रह में सुरक्षित है।
3. तुलसीदास-डॉ. माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ-63 हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय सन् 1953 ई. ।
4. ब्रज जीवन दास कृत भक्तमाल टीका की हस्तलिखित प्रति रसभारती संस्थान-वृन्दावन के हस्तलिखित ग्रंथागार में सुरक्षित है। इसका आगत नंबर 51 है। हम रस भारती के संचालक डॉ. जयेश जी के प्रति आभारी हैं। जिन्होंने 'रस भारती संग्रह' में सुरक्षित विशिष्ट ग्रंथों के अध्ययन करने में पूर्ण सहयोग किया और सुचारु व्यवस्था की।

❑❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट-4

यूरोप और अमेरिका में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ

डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त

भक्तमाल-नाभादास (नारायणदास, सं 1632-1655)

(1) नागरी पृ. 16, सटीक ब्रिटिश म्यूजियम 272/5 ()

(2) नागरी पृ 157; प्रियादास कृत रसबोधिनी टीका सहित, प्रलि. रामदास, संवत् 1896 इंडिया आफिस बी 52.

(3) नागरी पृ. 130 (भक्तिरस बोध टीका सहित) इण्डिया आफिस डी.11

(4) नागरी; पृ. 148 (वैष्णवदास कृत भक्तिरस बोधिनी टीका सहित) प्रति सं 1851, शक 1716 हार वर्ड, 1910

(5) नागरी (पृ. 192 (अपूर्ण) इण्डिया आफिस डी 13

(6) नागरी पृ. 232 बिबलियाँथिके न्यास न्याल इंडिया 664 ।

(7) नागरी, पृ. 127 हारवर्ड 1054

(8) नागरी, पृ. 56 प्रति सं 1897 हारवर्ड 1054 ।

(9) नागरी, पृ. 47 (सटीक) हाइवर्ड 1930

(10) नागरी, पृ. 127 (रंगीन चित्रसहित) प्रति 1211 हिजरी

फ्री लाइब्रेरी, फिलाडेल्फिया, 100 विश्वविद्यालय, प्रकाशन, वाराणसी, प्र. सं 1968 ।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

- बाल्मीकि रामायण -गीता प्रेस
- पुराण - श्रीमद् भागवत, विष्णुपुराण, पद्मपुराण
- स्तोत्र रत्नावली गीता प्रेस, गोरखपुर
- श्री वल्लभ गीता सं पं माधव शर्मा, श्री कृष्ण का जंगमबाड़ी, वाराणसी
- श्रीकृष्ण कर्णामृतम् -विल्वमंगल-लीलाशुक डॉ. प्रमोद गणेश लाल
- श्री वैष्णव मताब्ज भास्कर अयोध्या
- श्री भगवद्भक्ति रसायन-श्री मधुसूदन सरस्वती -मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
- गीतगोविन्द-साहित्यिक एवं
- कलागत अनुशीलन-डॉ. प्रेमशंकर द्विवेदी
- कला प्रकाशन बी 33/33-ए-न्यू साकेत कालोनी बी.एच.यू. वाराणसी-5
- गीतगोविन्द काव्यम् (हिन्दी टीका समेत)
- आचार्य यमुना वल्लभ गोस्वामी विहारी पुरा श्रीधाम वृन्दावन
- हरिभक्तिरसामृत सिंधु = श्री रूपगोस्वमी संपादक डा. नागेन्द्र दिल्ली वि. दिल्ली
- उज्ज्वल नीलमणि-रूपगोस्वामी-बाबाकृष्णदास

हिन्दी के ग्रन्थ

- शिवसिंह सरोज-ठाकुर शिवसिंह सेंगर सं त्रिलोकी नारायण दीक्षित-तेजकुमार बुक डिपो, लखनऊ, 1966 ई.
- हिन्दी साहित्य काइतिहास 1929 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ना. प्र. सभा, काशी।
- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-प्रसं 1938 डॉ. रामकुमार वर्मा
- हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी 1951
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिन्दी साहित्य का इतिहास-1973 डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23 दरिया गंज दिल्ली 110006, 1956 ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- हिनदी साहित्य का इतिहास–डॉ. विजयेन्द्र स्नातक साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली
- गोस्वामी तुलसीदास-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- गोस्वामी तुलसीदास श्री श्यामसुंदर दास। हिन्दी साहित्य का अतीत-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- मध्यकालीन धर्मसाधना-आचार्य हजारी प्र द्विवेदी
- श्रीबल्लभाचायऔर उनका पुष्टिमार्ग-आचार्य पं. सीताराम चतुर्वेदी
- हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य पर श्री मद्‌भागवत का प्रभाव–डॉ. विश्वनाथ शुक्ल, भारतीय प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़
- अष्टछाप और वल्लभ संप्दाय-1-2 डॉ दीन दयालु गुप्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
- भाररीतय साहित्य में भक्तिधारा-आ. परशुराम चतुर्वेधी, भारती भण्डार
- वैष्णव धर्म-आ. परशुराम चतुर्वेदी-राजकमल प्रकाशन-दिल्ली
- मध्यकाली न प्रेमसाधना-आ. परशुराम चतुर्वेदी
- उत्तरी भारत की संतपरम्परा - आ. परशुराम चतुर्वेदी
- भागवत संप्रदाय। आ. बलदेव उपाध्याय, नाप्र. सभा, काशी ।
- कविवर परमानन्ददास और बल्लभ संप्रदाय-डॉ. गोवर्धन शुक्ल भारतीय प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ ।
- हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य में मधुरभाव की उपासना- डॉ. पूर्णमासीराय अभिनव भारती प्रकाशन, 42 सम्मेलनमार्ग-इलाहाबाद 211003
- संस्कृति के चार अध्याय-श्री रामधारी सिंह दिनकर लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- भारतेन्दु तथा उनके अन्य सहयोगी-डॉ. किशोरी लाल गुप्त हिन्दी प्रचारक पुस्ताकलय बनारस
- रामानन्द संप्रदाय का हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव- डॉ. बदरी नारायण श्रीवास्तव, हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय प्र सं. 1957 ।
- रामभक्ति में रसिक संप्रदाय - डॉ. भगवती प्रसाद सिंह, 1957
- अवध साहित्य मंदिर, बलरामपुर गोडा
- भारतेन्दु समग्र-हेमन्त शर्मा हिंदी प्रचारक पिशाचमोचन।
- भक्तकवि व्यासजी-श्री वासुदेव गोस्वामी ब्रज साहित्य माला-9, मथुरा अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- ब्रजमाधुरी सार-तृतीय संस्करण- श्री वियोगी हरि, हिन्दी साहित्य स्मेलन प्रयाग
- रसिक प्रकाश भक्तमाल श्री युगलप्रियाशरण टीकाकार-जानकी शरण जी श्री लक्ष्मण किला, अयोध्या।
- नामादास कृत भक्तमाल-एक अध्ययन-प्रकाश नारायण दीक्षित-साहित्य भवन, इलाहाबाद।
- रामानंद की हिन्दी रचनाएँ-सं डॉ. पीताम्बरदत्त बड़श्वाल ना.प्र. सभा, काशी।
- स्वामी रामानंद-वैष्णव भक्ति आन्दोलन-डॉ. बी.पी. शर्मा विश्व भारती प्रकाशक 1172/22 चण्डीगढ़ ।
- रामकथा-डॉ. कामिल बुल्के हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग।
- तुलसीदास और उनका युग–डॉ. राजपति दीक्षित
- वैष्णव साधना और साहित्य-डॉ. भुवनेश्वर नाथ मिश्र, 'माधव'
- हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव
- प्रकाशक बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी कदम कुआ, पटना (1973) ।
- भारतीय साधना की धारा-महामहोपाध्याय डॉ. गोपीनाथ कविराजः अनुवादक पं हंसकुमार तिवारी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्- पटना 800004 ।

परिशिष्ट

(1)

चौबीस निष्ठाओं में विभक्त 269 भक्तों की नामावली

(2)

भक्तमाल का संयुक्त कृतित्व-डॉ. किशोरी लाल गुप्त, नागरी प्रचारिणी पत्रिका-
वर्ष 63, संवत् 2015, अंक-3-4 ।

(3)

नाभादास कृत भक्तमाल और उसकी टीकाएँ-
पं. उदयशंकर दूबे, पुरातत्व विद् ।

(4)

- विदेशों में भक्तमाल और उसकी टीकाएँ डा. परमेश्वरी लाल गुप्त ।
- भक्त रत्नावली-श्री अनंत दास वैष्णव द्वारा विरचित संपादक डॉ. वी.पी. शर्मा
- विश्वभारती प्रकाशन, 1174/22वीं चण्डीगढ़ ।
- कबीर-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- संत रविदास की भक्ति साधना-डा. वी.पी. शर्मा विश्वभारती प्रकाशन, चण्डीगढ़
- रैदास-डॉ. धर्मपाल रैनी-साहित्य अकादेमी, रवीन्द्र भवन, 35, फीरोजशाह रोड नई दिल्ली-11000
- महामानव रैदास पद एवं साखी - डॉ. शिवकुमार शाण्डिल्य मंगला प्रकाशन 139, रामकृष्ण पुरम् नई दिल्ली 110022
- श्रीमठ प्रकाश 2001 प्रथम संस्करण सूचना प्रकाशन एवं प्रसारण प्रकाशन, मध्य प्रदेश सरकार भोपाल (म.प्र.)
- रामानन्द राम रस माते 2001- सूचना एवं प्रसारण प्रकाशन मध्य प्रदेश, भोपाल,
- पायसपायी डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय-सन् 2000 ई प्रकाशक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्मारक सेवान्यास, पंचगंगा घाट, काशी (वाराणसी)
- श्रीरामानन्द चरितम् (गद्यकाव्यम्) ज. रा स्मारक सेवा,
- प्रणेता-डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी
- श्री रामरक्षा स्तोत्रम पं श्री जगन्नाथ शास्त्री तैवलङ्ग श्रीमठ, पंचगंगा, काशी
- श्रीमठ स्तोत्र कुसुमाञ्जलि- श्रीमठ, पंचगंगा, वाराणसी
- श्रीरामानन्द प्रकाश-वर्ष 5, जनवरी 2000
- तीर्थ राज प्रयाग और कुंभ महापर्व-2010-श्री मठ, काशी 2010
- पूरब रंग की साधु कविता डॉ. उदय प्रताप सिंह तथागत प्रकाशन, वाराणसी।

□□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक परिचय

नाम - **डॉ. पूर्णमासी राय**

जन्म तिथि - ज्येष्ठ पूर्णिमा सं. 1985 तदनुसार, 3 जून, 1928.

जन्म स्थान - उत्तर प्रदेश के वाराणसी (संप्रति चन्दौली) जिले का पिपरी ग्राम।

पिताश्री - स्व. श्री रामनरेश राय (सुप्रसिद्ध पशुचिकित्सक)

अध्ययन - प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में। सन् 1953 में एम.ए. (हिन्दी) और सन् 1958 में पी-एच.डी. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से। सन् 1971 में एम. ए. (संस्कृत)। मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) विक्रमशिला विश्वविद्यालय, वैशाली से विद्यासागर (डी. लिट्) की मानद उपाधि।

भाषा-ज्ञान- संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, बंगला, मराठी और गुजराती।

अध्यापन - सन् 1956 से सन् 1963 तक हरप्रसाद दास जैन कॉलेज, आरा। सन् 1963 से जनवरी 1990 तक मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में जनवरी 1990 में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद से अवकाश प्राप्त।

प्रकाशित कृतियाँ -

1. नन्ददास और उनका भँवरगीत - सन् 1966.
2. उर्दू आलोचना : स्वरूप और और विकास - सन् 1969.
3. हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य में मधुर भाव की उपासना - सन् 1974.
4. टी. एस. इलियट और उनका क्लासिक - सन् 1974.
5. तुलसी-भूषण - 1996.
6. व्यावहारिक समीक्षा-सिद्धान्त और विनियोग - सन् 1998.
7. हनुमाननाटक भाषा उर्फ रामगीत - सन् 2004.
8. संस्कृति-प्रकृति बारहों मास - सन् 2005.
9. भ्रमरगीत सार - बोध और व्याख्या - सन् 2009.
10. भारतीय जीवन-दर्शन में गंगा - सन् 2009.
11. जन्मभूमि और कर्मभूमि अनुभव के झरोखे से - सन् 2011.
12. संख्यासूचक प्रतीक-कोश - सन् 2012.
13. भारतीय जीवन-दर्शन में यमुना - सन् 2012.
14. भक्तमाल परिशीलन - भाग 1-2 - सन् 2013.

संपादित कृतियाँ - 1- शुक्लोत्तर समीक्षा। 2- काव्य भञ्जरी। 3- काव्य रसायन । 4- साहित्यिक निबंध। 5- सामयिकी। 6- कथान्तर।

सम्मान - सहजात आर्जव सेमण्डितकनीषी-अभिनंदन ग्रन्थ-2003.
आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र सम्मान - 2006.
अखिल भारतीय विद्वत् परिषद्, काशी - 2010.
राष्ट्रीय संगोष्ठी, सूरत - 2011.
विशिष्ट विद्वत् सम्मान पत्र, श्रीमठ, पंचगंगा, काशी - 2011.

स्थायी पता - ग्रा.-पो. पिपरी (बाया कमालपुर) चन्दौली-232106.

वर्तमान पता - स्वाध्यायसदन, एन 1/66, ए.एफ.पी.
सामने घाट (नगवां) लंका, वाराणसी - 221005.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

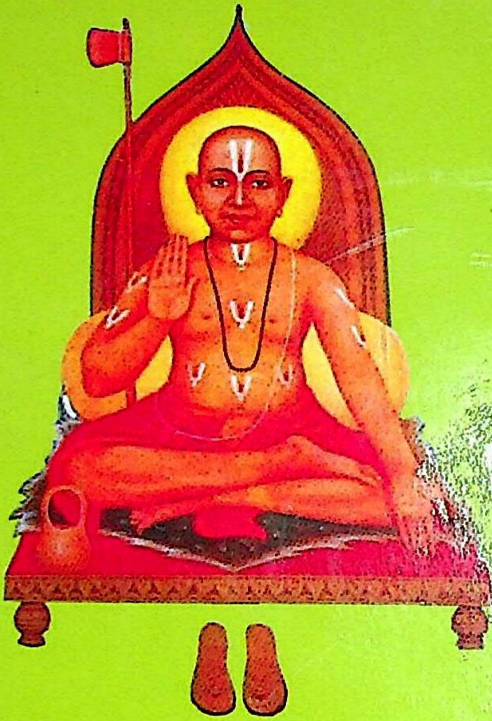

मनीष-प्रकाशन
प्लाट नं. 26, रोहितनगर, बी.एच.यू.
वाराणसी-5

ISBN - 978-93-81539-73-6
ISBN - 978-93-81539-73-6
मूल्य : 850.00 रुपये (2 भाग)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.